वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

सितम्बर 2018

अमरपुरी उर्फ जलेबी बाबा (32)

गौमूत्र और वैज्ञानिक सोच (30)

अकेलापन (34)

20/-

प्रकृति सृजन करती है तो .... (4)

दर्शन उन लोगों के लिए है जो सोचते हैं, धर्म उनके लिए हैं जो पीछे लगते हैं

कविता

मार्था मेरिडोस

1.आप धीरे–धीरे मरने लगते हैं, अगर आपः'
– करते नहीं कोई यात्रा,
– पढ़ते नहीं कोई किताब,
– सुनते नहीं जीवन की ध्वनियाँ,
– करते नहीं किसी की तारीफ।
2. आप धीरे–धीरे मरने लगते हैं, जब आपः'
– मार डालते हैं अपना स्वाभिमान,
– नहीं करने देते मदद अपनी
और न ही करते हैं मदद दूसरों की।
3. आप धीरे–धीरे मरने लगते हैं, अगर आपः'
– बन जाते हैं गुलाम अपनी आदतों के,
– चलते हैं रोज उन्हीं रोज वाले रास्तों पे,
– नहीं बदलते हैं अपना दैनिक नियम व्यवहार,
– नहीं पहनते हैं अलग–अलग रंग, या
– आप नहीं बात करते उनसे जो हैं अजनबी अनजान।
4. 'आप धीरे–धीरे मरने लगते हैं, अगर आपः
– नहीं महसूस करना चाहते आवेगों को,
और उनसे जुड़ी अशांत भावनाओं को,
वे जिनसे नम होती हों आपकी आँखें,
और करती हों तेज आपकी धड़कनों को।
5. 'आप धीरे–धीरे मरने लगते हैं, अगर आपः'
– नहीं बदल सकते हों अपनी जिन्दगी को,
जब हों आप असंतुष्ट अपने काम और परिणाम से,
–अगर आप अनिश्चित् के लिए नहीं छोड़ सकते हों निश्चित को,
–अगर आप नहीं करते हों पीछा किसी स्वप्न का,
–अगर आप नहीं देते हों इजाजत खुद को,
अपने जीवन में कम से कम एक बार,
किसी समझदार सलाह से दूर भाग जाने की..।

(मार्था मेरिडोसनोबेल पुरस्कार विजेता ब्राजीली कवियत्री है)

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग: **दोआबा कम्यूनिकेशंस**
मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

संपादक :
आर.पी. गांधी – 93154-46140

संपादक सहयोग :–
बलवन्त सिंह – 94163-24802
गुरमीत अम्बाला – 94160-36203
बलबीर चन्द लौंगोवाल – 98153-17028
हेम राज स्टेनो – 98769-53561

पत्रिका शुल्क :–
द्विवार्षिक : 200/– रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :
गुरमीत अम्बाला
Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः
बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र – 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए
www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है–
http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

यू-ट्यूब पर तर्कशील टीवी देखें
YouTube
http://youtu.be/8cbb3faVmwk

संकेतिका

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक, दिनांक **18-11-2018**, दिन रविवार सैनी धर्मशाला, पूंडरी में प्रातः 10.30 से 2.30 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

सम्पर्क सूत्रः
*कृष्ण हलवाई :**9802026000***
*मान सिंह- **9812118222***

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

'वैज्ञानिक चेतना के प्रसार की जरूरत'

जून 2018 का अंतिम सप्ताह। सन्त नगर बुराड़ी (दिल्ली) के एक ही परिवार के 11 सदस्यों की सामुहिक आत्महत्या का समाचार से पूरी दुनिया के मीडिया में छाया रहा। हर कोई इस कांड को जानना चाहता था। कुछ चैनल व अखबार डरावनी खबरें भी परोसने लगे। बहुत कम थे जिन्होंने इस कृत्य के अंधविश्वास से जुड़े पहलू से अवगत कराते हुए वैज्ञानिक चेतना के प्रचार को महत्व दिया।

आर्थिक मजबूरियों के चलते परिवारों द्वारा आत्महत्या कर लेने की खबरें तो गाहे बिगाहे सुनाई पड़ती रहती हैं, लेकिन एक आर्थिक रूप से सामान्य जीवन जीने वाला परिवार केवल मोक्ष की चाह में अपनी जान गंवा बैठे, यह हमारे धर्मतंत्र द्वारा वैज्ञानिक चेतना को ध्वस्त करने की तरफ संकेत करता है। इससे सिद्ध होता है कि धर्मतंत्र की मानव जीवन पर कितनी मजबूत पकड़ है। टी.वी. चैनलों पर लगातार अंधविश्वास परोसते बाबा साधारण जन की चेतना को लगातार कुंठित करते रहते हैं।अक्सर ऐसी खबरें आती रहती हैं, जैसे इष्ट देव को प्रसन्न करने के लिए व्यक्ति ने अपनी जीभ काट कर चढ़ा दी; अपनी गर्दन काट ली; किसी मासूम की बलि दे दी व इसी प्रकार की अन्य खबरें जिनमें महिलाओं को डायन या टोनही कह कर मारा पीटा गया या मल मूत्र पीने को विवश कर दिया या समाज के सामने नग्न कर घुमाया गया। चिंता की बात यह है कि आधुनिक वैज्ञानिक साधनों से लैस हो जाने के बाद भी हमारी चेतना विज्ञान से शून्य है। हम कुछ लोगों पर अनपढ़ता का दोष मढ़ सकते है लेकिन बुराड़ी में सामूहिक आत्महत्या करने वाला परिवार पर पढ़ा लिखा होने के बावजूद दिमाग में धर्म तंत्र हावी था, तभी काल्पनिक मुक्ति की चाह में मासूमों तक की भी जान चली गई। अंधविश्वास के चंगुल में फंसा यह परिवार अपने भले बुरे का फैसला भी करने में असमर्थ हो चुका था।

जब बुराड़ी खबर चल रही थी। तभी जापान में असहारा नाम के कथित देव पुरुष को फांसी पर लटकाया गया। इन्हें 20 मार्च 1995 को टोकियो में बेस लाईन में अपने चेलों द्वारा जहरीली गैस छुड़वा कर 13 लोगों को मार देने एंव 600 के लगभग लोगों को गम्भीर रूप से जख्मी करने का दोषी पाया। इस शख्स ने भी लोगो मे ईश्वर, स्वर्ग आदि के बारे अंधविश्वास फैला कर इस कृत्य को अंजाम दिया था। लगभग 30 वर्ष पूर्व यूरोप में ऐसे ही एक व्यक्ति ने लगभग 100 लोगो को जहर खिला कर मौत की नींद सुला दिया था। उसका कहना था कि पुच्छल तारे के धरती के नजदीक आने के कारण जो भी ईश्वर को याद करते हुए प्राण त्यागेगा, उसे पुच्छल तारे पर बैठ कर सीधे स्वर्ग जाने का रास्ता मिलेगा। ऐसी घटनाएं मानवता के माथे पर कलंक है और स्पष्ट रूप से इस बात की तरफ इशारा करती हैं कि समाज में वैज्ञानिक चेतना का कितना अभाव है। जरूरत है कि विज्ञान को जीने का जरिया ही नही जीने का ढंग भी बनाया जाए।

प्रकृति सृजन करती है तो उसे विनाश करना भी आता है

-शकील प्रेम

हमारी दुनिया जबसे बनी है लाखों बार तबाह हुई है हजारों बार बर्बाद हुई है और सैंकड़ों बार नष्ट हुई है धरती की इस विनाशलीला के सबूत आज भी धरती पर मौजूद है, लेकिन ये भी सत्य है कि हर विध्वंस के बाद धरती पर नया सृजन हुआ है। धरती हर विनाश के बाद बदली है और इस बदलाव ने हर बार सृजन का नया अध्याय भी लिखा है।

धरती पर कभी डायनासोरों का एकछत्र राज हुआ करता था उस समय पृथ्वी पर डाइनासोर की हजारों प्रजातियां थी जिनके बीच शिकार और शिकारी का खेल जारी था।

एक तरफ था धरती का एकमात्र विशाल महाद्वीप पैंजिया और दूसरी ओर था विशाल समुद्र. इस पैंजिया लैंड में रहने वाले जीवों की हजारों प्रजातियों में 90 प्रतिशत जीव डायनासोर की प्रजाति के ही थे जिनमें कुछ शाकाहारी थे कुछ उड़ने वाली प्रजातियां थी और कुछ मांसाहारी डायनासोर थे जो उस समय भोजन श्रृंखला में सबसे ऊपर थे!

धरती पर 80 करोड़ वर्षो तक हुकूमत करने वाले इन विशाल जानवरों का पतन होने के लिए बस एक क्षण ही काफी था। ये वो पल था जब धरती से विशाल धूमकेतु टकराया और देखते ही देखते सब खत्म।

आज से 6 करोड़ साल पहले हुई उस भयानक विनाशलीला में डायनासोर के साथ साथ पृथ्वी का भी विनाश हुआ। पर्यावरण बर्बाद हो गया। जंगल खत्म हो गये। नदियां खत्म हो गईं। धूमकेतु के टकराने के बाद धरती के 90 फीसदी बड़े जीव समाप्त हो गए। जो छोटे जीव बचे, उन्होंने बदली हुई विकट परिस्थितियों का जैसे-तैसे सामना किया और विकास की विभिन्न परिस्थियों से गुजरते हुए हजारों नई प्रजातियों के रूप में विकसित हुए।

6 करोड़ साल पहले बर्बाद हुई धरती ने नया सृजन किया और अगले दो करोड़ वर्षो में जीवों की लाखों नई प्रजातियां धरती पर विचरने लगीं। पैंजिया टूटा और गोंडवाना बना।

इन लाखों नई प्रजातियों में से एक मानव भी था जो आज के समय पूरी दुनिया पर एकक्षत्र राज कर रहा है। डायनासोरों के पतन के बाद लगभग 6 करोड़ वर्षो के विकास ने इंसान को आज इस मुकाम तक पहुंचाया है।

इन 6 करोड़ वर्षो में साढ़े पांच करोड़ वर्ष के दौरान तो इंसान वैसा ही था, जैसा अन्य दूसरे स्तन पाई जीव थे। भोजन सुरक्षा और प्रजनन की जद्दोजहद में जंगलों में भटकता एक जीव जिसके पास न भाषा थी न समूह था और न ही भविष्य के सपने थे, उसे तो बस जीना था और जीने के लिए उसे खाने की तलाश करनी थी। दूसरे जंगली जानवरों से बचाव के लिए दर-दर भटकना था और अपना कदम आगे बढ़ाने के लिए प्रजनन करता था।

इस समय तक पूरी दुनिया मे इंसानों की कुल आबादी एक लाख से ज्यादा नही थी। 50 लाख वर्षो के इतिहास में ही इंसान ने वो सब कुछ हासिल किया है, जिससे आज हम इंसान बने हैं !

आज से पचास लाख साल पहले इंसानों ने पत्थर से औजार बनाना सीखा। चालीस लाख साल पहले इंसान ने गुफाओं में शुरुआती सभ्यताओं को पोसा। 30 लाख साल पहले संवाद सीखा जिससे भाषाएं बनी। 20 लाख साल पहले मनुष्य ने जानवर पालना शुरू किया 10 लाख साल पहले आग का इस्तेमाल सीखा और एक लाख साल पहले पहिये की खोज ने शुरुआती सभ्यताओं को गति प्रदान की। 50 हजार साल पहले इंसान ने गुफाओं को छोड़ा 20 हजार साल पहले खेती की शुरुआत की। इस दौरान इंसानों की कुल आबादी 10 लाख तक

पहुंच चुकी थी।

खेती की वजह से इंसानों का शिकार के लिए भटकना बन्द हो गया, जिससे गांव बने छोटी बड़ी सभ्यताएं इसी दौर में विकसित हुई। इसी दौरान इंसानों के छोटे छोटे कबीले बने. और इसी दौरान विभिन्न धर्मों और मान्यताओं की नींव पड़ी और इंसानों को ईश्वर की जरूरत पड़ने लगी।

10 हजार साल पहले ये छोटे छोटे कबीले बड़े बड़े साम्राज्य में बदल गए। पांच हजार साल पहले तक पूरी दुनिया में इंसानों की बड़ी-बड़ी सभ्यताएं स्थापित हो चुकी थी, फिर भी पूरी दुनिया के सभी इंसानों की कुल आबादी पचास लाख से ज्यादा नही थी।

इंसानों के 6 करोड़ वर्षो के इतिहास में यही 5 हजार साल सबसे महत्वपूर्ण साबित हुए। इस दौरान इंसान ने भाषा को लिपि में बदलना सीखा। अलग अलग सभ्यताओं में व्यापारिक संबंध कायम हुए।

करीब 4 हजार वर्ष पहले तक इंसानों ने नगरों को बनाना और बसाना शुरू कर दिया था। 3 हजार वर्ष पहले तक इंसान दुनिया के लगभग सभी भूभाग तक पहुंच चुका था। इसी दौर में उसने धातु की खोज की, जिससे खेती और युद्ध में क्रांतिकारी बदलाव आए।

इसी दौर में धर्म एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन कर उभरा और दुनिया की कुल आबादी एक करोड़ तक पहुंच गई।

करीब दो हजार वर्ष पहले तक दुनिया बदल चुकी थी। धर्म दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका था। इससे विभिन्न संस्कृतियों की मान्यताएं जुड़ चुकी थी। अब दुनिया में सैंकड़ों धर्म थे। हजारों मान्यताएं थी, जो लाखों प्रकार के कर्मकांडों पर आधारित थी।

इसी दौर में जड़ हो चुकी पुरानी मान्यताओं का विरोध भी शुरू हुआ और इस विरोध से कई नए

धर्म भी आस्तित्व में आए। इस दौरान धर्म के नाम पर कई साम्राज्य बने और बिगड़े कई पुरानी मान्यताओं की जमीन पर नए धर्मो के बीज अंकुरित हुए। इस दौरान इंसानों की कुल आबादी 5 करोड़ तक पहुंच चुकी थी।

1000 साल पहले की दुनिया एक दम अलग थी अब धर्मो की कहानी में एक नया अध्याय जुड़ चुका था जिसने अमेरिका आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड को छोड़ कर लगभग पूरी दुनिया को प्रभावित किया इस समय तक पूरी दुनिया की आबादी 10 करोड़ तक पहुंच चुकी थी।

लगभग 500 साल पहले की दुनिया पहले से अलग थी। कई पुराने साम्राज्य खत्म हुए और इन साम्राज्यों की नींव पर नए साम्रज्य खड़े हुए। अगले 500 वर्षो में दुनिया तेजी से बदली गोला बारूद तोप और बंदूकों ने दुनिया का नक्शा बदल दिया। बारूद के इस्तेमाल से युद्ध की बड़ी बड़ी त्रासद घटनाएँ घटित हुई बहुत से लोग युद्ध और बीमारियों का शिकार हुए। इस दौरान दुनिया की कुल आबादी चालीस करोड़ के आंकड़े को पार कर चुकी थी।

हजारों वर्षो से खोई हुई इंसानी सभ्यताओं का मिलन इसी दौर में हुआ सदियों से स्थापित धर्म की सत्ता को चुनौती इसी दौर में मिली आधुनिक विज्ञान के इस काल में इंसान ने रेल से लेकर हवाई जहाज तक का निर्माण कर डाला। छपाई की तकनीक से लेकर मोटरकार टेलीफोन और बिजली का आविष्कार इसी दौर में हुआ जिससे इंसान के जीने का ढंग पूरी तरह बदल गया। संस्कृतियों का मिलाप हुआ सभ्यताओं के गठजोड़ बने। खेती का स्वरूप बदला। ज्ञान के द्वार खुले इंसान ने बड़ी बड़ी खोजे इसी दौर में की।

1820 तक दुनिया की आबादी 100 करोड़ तक पहुंच चुकी थी यानी दुनिया की आबादी को एक अरब का आंकड़ा छूने में एक लाख साल से ज्यादा का वक्त लगा, जो केवल 100 सालों में दुगनी होकर 1920 तक 2 अरब हो चुकी थी और इसके केवल 50 वर्षो के बाद यानी 1970 तक इंसानों की आबादी दो अरब से बढ़कर 4 अरब तक पहुंच चुकी थी और आज दुनिया की आबादी लगभग 8 अरब तक पहुंच चुकी है।

कहा जा सकता है कि प्रकृति ने इंसान को यहां तक पहुंचने का भरपूर मौका दिया, लेकिन आज का

इंसान प्रकृति के लिए ही सबसे घातक साबित हो रहा है।

नदी पहाड़ जंगल और दूसरे जीव तेजी से कम हो रहे हैं। इसके लिए पूरी तरह से इंसान जिम्मेदार है, जिसकी महत्वाकांक्षाओं ने प्रकृति में भारी असंतुलन पैदा कर दिया है। पिछले 100 वर्षों में ही पृथ्वी के आधे जंगल खत्म हो चुके हैं और इन्ही सौ वर्षों के दौरान इंसान चार गुना बढ़ गया और दूसरी प्रजातियां आधी कम हो गईं इंसानों की वजह से बहुत से जीव जंतु विलुप्त हो चुके हैं और बहुत से विलुप्त होने के कगार पर हैं। इंसानों द्वारा प्रकृति का ये भारी विनाश लगातार बहुत तेजी से हो रहा है। इसी वजह से धरती का तापमान तेजी से बढ़ रहा है ग्लेसियर पिघल रहे हैं समुद्र का स्तर बढ़ रहा है।

ये सारी विकट परिस्थितियां सिर्फ और सिर्फ इंसानों की वजह से पैदा हुई हैं। इंसानों की बेतहाशा बढ़ती जनसंख्या ही प्रकृति के इस भारी असंतुलन का कारण है हालांकि दुनिया भर के देशों में इस विकट समस्या के प्रति जागरूकता भी पैदा होने लगी है। इसलिए चीन जापान आस्ट्रेलिया जर्मनी फ्रांस ब्रिटेन और न्यूजीलैंड समेत दुनिया भर के देशों ने पिछले 20 वर्षों में जनसंख्या नियंत्रण पर ठोस कदम उठाया है, जबकि ये सभी देश क्षेत्रफल के मामले में काफी बड़े हैं।

आस्ट्रेलिया जो खुद में एक देश के साथ एक महाद्वीप भी है जिसका क्षेत्रफल भारत से तीन गुना ज्यादा है उसकी कुल आबादी ढाई करोड़ से कम है इस पूरे महाद्वीप पर जितने लोग रहते है उतने भारत की राजधानी दिल्ली में ही ठुसे हुए हैं. साथ ही इतने लोग भारत में एक साल में पैदा हो जाते हैं।

अमेरिका जो क्षेत्रफल में भारत से छः गुना बड़ा है, आबादी के मामले में भारत से चार गुना कम है। चीन जो आबादी में लगभग हमारे बराबर है। क्षेत्रफल के मामले में हमसे तीन गुना बड़ा है।

पूरे रूस देश की आबादी छोटे से बांग्लादेश से कम है और भारत के उत्तर प्रदेश की कुल आबादी रूस से ज्यादा है।

पाकिस्तान के क्षेत्रफल से चार गुना ज्यादा बड़ा है, जर्मनी और आबादी के हिसाब से जर्मनी पाकिस्तान से आधा भी नही है।

भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश इन तीन देशों की कुल आबादी अगले बीस वर्षों में 200 करोड़ तक पहुंच जाएगी।

जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि से इन देशों का हाल अगले 50 वर्षों में बहुत ही भयंकर होने वाला है। धरती के बढ़ते तापमान के कारण इस पूरे भारतीय उपमहाद्वीप की आधी से ज्यादा नदियां पूरी तरह सूख जाएंगी। खेती की जमीन आधी रह जाएंगी, जिससे भयंकर भुखमरी का माहौल पैदा हो जाएगा। वैसे भुखमरी का माहौल तो आज भी है, लेकिन तब इन तीनों देशों की एक बड़ी भुखमरी का शिकार होगी। पिछले तीन महीने में भारत के केवल एक राज्य में 650 किसानों ने आत्महत्या की है सोचिये तब क्या हाल होगा?

अभी हाल में आई एक रिपोर्ट के अनुसार बेहद गर्मी और उमस के कारण अगले 83 सालों में लोग जीने लायक नही रहेंगे। भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान द इंडिपेंडेंट क्लाइमेट चेंज के कारण अगले कुछ दशकों में दक्षिण एशिया का इलाका लोगों और जीवों के रहने लायक नहीं रहेगा। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि जलवायु परिवर्तन के कारण भारत और पाकिस्तान सहित दक्षिण एशियाई देशों में इतनी गर्म हवाएं चलेंगी कि यहां जिंदा रह पाना नामुमकिन हो जाएगा।

जब वेट-बल्ब टेंपरेचर 35 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच जाता है, तो इंसानी शरीर गर्मी के मुताबिक खुद को अनुकूलित नहीं कर पाता। जीवों के शरीर में स्वाभाविक तौर पर अनुकूलन की क्षमता होती है। 35 डिग्री सेल्सियस वेट-बल्ब तापमान होने पर इंसानों का शरीर इतनी गर्मी से खुद को बचाने के लिए ठंडा नहीं हो पाता। इस स्थिति में कुछ ही घंटों में इंसान दम तोड़ सकता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अगले पचास वर्षो मे भारत की 70 फीसदी से ज्यादा की आबादी 32 डिग्री सेल्सियस वेट-बल्ब तापमान को झेलने पर मजबूर हो जाएगी।

अभी के जलवायु की बात करें, तो धरती का वेट-बल्ब तापमान 31 डिग्री सेल्सियस को पार जा चुका है। 2015 में ईरान की खाड़ी के इलाके में यह करीब-करीब 35 डिग्री सेल्सियस की सीमा तक पहुंच गया था। इसके कारण पाकिस्तान और भारत में लगभग 3,50,000 लोगों की मौत हुई थी। नए शोध के नतीजों से पता चलता है कि अगर कार्बन उत्सर्जन के साथ साथ जनसंख्या वृद्धि पर जल्द कंट्रोल नही किया गया तो जिंदा रहने की हमारी क्षमता एकदम आखिरी कगार पर पहुंच जाएगी। कृषि उत्पादन में कमी के कारण हमारी स्थितियां और गंभीर हो जाएंगी। ऐसा नहीं कि केवल गर्मी के कारण ही लोग मरेंगे। फसल कम होने के कारण लगभग हर एक इंसान को इन भयावह और असहनीय स्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

ऐसी विकट परिस्थिति में सबसे सबसे ज्यादा मारा जाएगा वही गरीब आदमी जिसके हाथ मे आज धर्म का झुनझुना थमा दिया गया है, क्योंकि अमीर और सक्षम लोग तो पहले ही देश छोड़ चुके होंगे।

अमीरों को भविष्य में होने वाले उस विनाश का आभास अभी से है, तभी तो हर साल करीब साठ हजार करोड़पति भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश को छोड़ कर विदेश में सेटल हो रहे हैं, लेकिन आज इस भारतीय उपमहाद्वीप पर रहने वाली आबादी को भविष्य की कोई चिंता नही, क्योंकि भारत पाकिस्तान और बांग्लादेश की कुल आबादी के मात्र 10 प्रतिशत लोग इस पूरे उपमहाद्वीप के 90 प्रतिशत संसाधनों के मालिक हैं और बाकी बचे 90 प्रतिशत लोग 10 प्रतिशत संसाधनों पर जैसे तैसे गुजारा करने को मजबूर हैं।

10 प्रतिशत लोग संसाधनों के साथ साथ धर्म राजनीति और व्यवस्था के मालिक भी बन बैठे हैं और ये सब संभव हुआ है अशिक्षित जनता के दिमाग मे झूठ और पाखंड को धर्म के रूप में स्थापित करने से ऐसी भयावह व्यवस्था को बनाने में हजारों साल लगे हैं जिसका परिणाम घोर गरीबी अराजकता भय भूख और भ्रष्टाचार के रूप में हमारे सामने है।

भारत पाकिस्तान और बांग्लादेश की पूरी आबादी घोर धार्मिक जहालत के दलदल में फंसी हुई है, जिसे यकीन है उस काल्पनिक ईश्वर पर जो इंसान के करोड़ों वर्षो के इतिहास में कहीं नहीं था, वो तब भी नही था जब खानाबदोश इंसान खूंखार जानवरों का शिकार होकर मरता था, वो तब भी नही था जब हिमयुग के दौरान इंसान ठंड से मर रहा था वो तब भी नही था जब 74 हजार वर्ष पूर्व यूरोप का सबसे बडा ज्वालामुखी फटा था, जिससे अगले सैंकड़ों वर्षो तक इंसान को भटकना पड़ा था।

मानवता के इतिहास में सैंकड़ों प्राकृतिक आपदाएं आईं हजारों बार भूकंप आये और लाखों युद्ध हुए, लोग मरे बेघर हुए, लेकिन कही कोई ईश्वर किसी को बचाने नही आया और न ही भविष्य में कभी कोई आएगा अपनी धरती को हमें खुद ही बचाना होगा इसके लिए कम समय मे बड़े उपाय ढ़ंढने होंगे। धर्म, जाति, सम्प्रदाय, ईश्वर-अल्लाह से ऊपर उठकर कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। सबसे पहले जनसंख्या पर लगाम कसनी होगी, जंगल को बचाना होगा। नदियों को बचाना होगा, पर्यावरण को बचाना होगा, ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने होंगे। ये सब करने के लिए हमारे पास बहुत कम समय बचा है। अगर हमने ऐसा नहीं किया, तो आने वाले वक्त में भारतीय उपमहाद्वीप का ये पूरा धार्मिक इलाका, जो आज राम में मस्त और अल्लाह में व्यस्त है, त्राहि-त्राहि करेगा और ये पूरा क्षेत्र बंजर रेगिस्तान में तब्दील हो जायेगा। तब इंसान तो नष्ट होगा ही साथ ही उसके द्वारा बनाए गए सभी धर्म, सभ्यताएं, मंदिर, मस्जिद और ईश्वर-अल्लाह इन सब का वजूद भी सदा के लिये मिट जाएगा, क्योंकि प्रकृति सृजन करती है, तो उसे विनाश करना भी आता है।

जिंदगी भर दुआ की खुदा से
तंदरुस्ती के लिए।
मगर आज पता चला कि
खुदा खुद बीमार है।

-सत्यानंद अमृतवाणी

28 सितंबर जन्म दिन पर विशेष

भगत सिंह

भगत सिंह न केवल भारत के महानतम् देशभक्त तथा क्रांतिकारी समाजवादियों में से एक थे, बल्कि भारत के प्रारंभिक मार्क्सवादी विचारकों में भी उनका प्रमुख स्थान था। दुर्भाग्यवश अभी तक लोग उनके व्यक्तित्व के इस अंतिम पहलू से कम ही परिचित हैं। यही वजह है कि विभिन्न प्रकार के प्रतिक्रियावादी, रूढ़िवादी तथा साम्प्रदायिक तत्त्व अपनी स्वयं की राजनीति तथा विचारधाराओं के लिए भगत सिंह तथा उनके चंद्रशेखर आजाद जैसे साथियों के नाम का गलत ढंग और फरेब से, अपनी उद्देश्यपूर्ति के लिए उपयोग करते रहे हैं।

भगत सिंह का देहांत 23 वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। जब उन्होंने गांधीवादी राष्ट्रवाद छोड़कर क्रांतिकारी आंतकवाद का रास्ता अपनाया तो शीघ्र ही उनका राजनीतिक चिंतन तथा उसका व्यावहारिक रूप सामने आने लगा। परंतु 1927-28 से ही वे क्रांतिकारी शूरवीरता से अधिक मार्क्सवाद की ओर अकृष्ट होने लगे। 1925 से 1929 के दौरान भगत सिंह ने विशेष रूप से रूसी क्रांति तथा सोवियत संघ पर पुस्तकों का गहन अध्ययन किया, यद्यपि उन दिनों ऐसी पुस्तकों को अपने पास रखना अपने आप में एक क्रांतिकारी तथा कठिन कार्य था। 1920 के दशक में भगत सिंह भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों, सशस्त्र संघर्ष तथा मार्क्सवाद की गहन समझ रखने वाले व्यक्तियों में से थे। उन्होंने अपने क्रांतिकारी मित्रों तथा युवा साथियों को भी इस प्रकार का साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया। अपने मकदमे की सुनवाई के दौरान उन्होंने लाहौर उच्च न्यायालय में खुलकर कहा, 'क्रांति की तलवार विचारों की सान पर ही पैनी होती है।' 1928 के आखिरी दिनों में भगत सिंह तथा उनके साथी समाजवाद को अपनी गतिविधियों के अन्तिम उद्देश्य के रूप में स्वीकार कर चुके थे और उन्होंने अपने संगठन का नाम भी 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' से बदल कर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' रख लिया था।

इसके बाद सन् 1929 में अपनी ग्रिफ्तारी से पहले और उसके बाद भी, भगत सिंह मार्क्सवाद की ओर अग्रसर रहे और उसके हर पहलू की पूरी-पूरी जानकारी जुटाने की लगातार कोशिश करते रहे। इस दौरान उन्होंने राष्ट्रवादी आंदोलन, हिंसा तथा अहिंसा, क्रांतिकारी आतंकवाद, धर्म, सांप्रदायिकता, पूर्ववर्ती क्रांतिकारियों तथा समकालीन विचारधाराओं तथा स्वयं अपने विचारों की समीक्षा की। यह भारतीयों के लिए बड़ी त्रासदी ही कही जाएगी कि एक विलक्षण प्रतिभा का उपनिवेशवादी शासकों के हाथों इतनी जल्दी अंत हो गया।

इस छोटी पुस्तिका में भगत सिंह द्वारा लिखे गए दो लेखों से पाठकों को परिचित कराया गया है, जिनसे वे अभी तक अनभिज्ञ थे। ये दोनों लेख भगत सिंह ने 1930-31 में फांसी की प्रतीक्षा करते हुए जेल में लिखे थे। जैसा कि उनके अनगिनत पत्रों, वक्तव्यों तथा लेखों से प्रकट होता है, इन दोनों लेखों में भी वे एक ऐसे क्रांतिकारी के रूप में सामने आते हैं जो पूर्ण रूप से मार्क्सवाद के प्रति बचनबद्ध है और जो इस प्रणाली को इसकी संपूर्ण जटिलताओं के साथ व्यावहारिक रूप प्रदान करने की योग्यता भी रखता है।

अपने पहले लेख में भगत सिंह ने धर्म तथा नास्तिकता पर विचार किया है। यहां वे अपने निरीश्वरवाद की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं, यद्यपि अपने बाल्यकाल के आरंभिक दिनों में वे धर्म से तथा बाद में शचींद्रनाथ सान्याल जैसे पूर्ववर्ती क्रांतिकारी आतंकवादियों से प्रभावित हुए थे। 1920 के दशक में सान्याल की पुस्तक 'बंदी जीवन' सभी क्रांतिकारियों के लिए आधारभूत पाठ्य पुस्तक मानी जाती थी। शुरुआत में क्रांतिकारी आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिए धर्म तथा रहस्यवाद पर भरोसा करते थे, जिसे वे अपनी साहसिक गतिविधियों द्वारा प्रदर्शित भी करते थे। इस लेख में तथा इसी प्रकार दूसरे लेख में भी भगत सिंह ने प्रारंभिक क्रांतिकारियों

के दृष्टिकोण से संबंधित अपनी समझ को पूरी तरह प्रदर्शित किया है तथा उनकी धार्मिकता के स्रोत का भी चित्रण किया है। वे कहते हैं कि वैज्ञानिक समझ के बगैर राजनीतिक गतिविधियों में स्वयं को आत्मिक रूप से जीवन रखने तथा व्यक्तिगत मोह के विरुद्ध संघर्ष करने, हताशा पर विजय पाने, शारीरिक सुख-सुविधाओं, परिवार तथा जीवन को बलिदान करने के लिए उन्हें तर्कहीन धार्मिक विश्वासों तथा रहस्यवाद की आवश्यकता थी। जब भी कोई व्यक्ति अपने जीवन को संकट में डालने तथा दूसरे सभी प्रकार के बलिदानों के लिए तैयार होता है तो उसे गहरे प्रेरणा-स्त्रोतों की आवश्यकता होती है, जिसे धर्म तथा रहस्यवाद पूरा करता है। पुराने क्रांतिकारी अपनी इस जरूरत की पूर्ति के लिए धर्म और रहस्यवाद का सहारा लेते थे। परंतु जो लोग अपनी गतिविधियों की प्रकृति से परिचित थे, जो क्रांतिकारी विचारधारा की ओर अग्रसर हो चुके थे, जो विश्वासपूर्वक निडर होकर फांसी पर चढ़ सकते थे, जिन्हें किसी भी प्रकार की सांत्वना अथवा मुक्ति की तमन्ना नहीं थी और जो दलितों की आजादी तथा उद्धार के लिए लड़ रहे थे (क्योंकि वे इसके अलावा कुछ और नहीं कर सकते थे), उन्हें धर्म तथा रहस्यवाद के सहारे की जरूरत नहीं रह गई थी।

उस समय भगत सिंह स्वयं फांसी के फंदे की प्रतीक्षा कर रहे थे। *वे जानते थे कि ऐसे क्षण में भगवान की शरण लेना बहुत सरल है। ''भगवान से मनुष्य को गहरी सांत्वना तथा आश्रय मिल सकता* है।'' दूसरी ओर, अपनी स्वयं की आंतरिक शक्ति पर निर्भर रहना सरल काम नहीं है। उन्होंने कहा, ''तूफानों तथा आंधियों में अपने पांव पर खड़े रहना बच्चों का खेल नहीं है।'' वे यह भी जानते थे कि इस कार्य के लिए अत्यधिक नैतिक शक्ति की आवश्यकता थी तथा आधुनिक क्रांतिकारी एक अनूठे नैतिक रास्ते पर चल रहे थे। यह रास्ता मनुष्य को 'मानव जाति की सेवा तथा दुखी मानवता की स्वतंत्रता' के प्रति समर्पण के लिए प्रेरित

......हालांकि भगत सिंह ने उन्हें इन लेखों में प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया है, फिर भी वे एक दूसरे महत्त्वपूर्ण पहलू अर्थात् राष्टवादी प्रेरणा के स्रोत के रूप में धर्म और सांप्रदायिकता के बीच के अंतर को स्पष्ट करते हैं। आरंभिक क्रांतिकारियों ने धर्म तथा रहस्यवाद का प्रयोग प्रेरणा और विचारधारा के लिए किया, परंतु वे सांप्रदायिक नहीं थे. उनके लिए धर्म उनकी राजनीति का आधार न होकर आंतरिक शक्ति का एक स्रोत था। इसने उन्हें सभी भारतवासियों की राष्ट्रीय आजादी के लिए योद्धा बनने के लिए प्रेरित किया, न कि सांप्रदायिक राजनीति का संगठनकर्ता बनने के लिए जो भारतीयों के दूसरे वर्गो के प्रति घृणा फैलाते हैं। जब उनके धार्मिक तथा रहस्यवादी विश्वासों ने उन्हें साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया, उस समय सांप्रदायिक तत्त्व व्यक्तिगत रूप से साम्राज्यवाद समर्थक थे और एकजुट भारतीयों को विभाजित करके साम्राज्यवाद के विरुद्ध नहीं बल्कि दूसरे भारतीयों की ओर अपनी राजनीति की धार को मोड़कर जानबूझ कर साम्राज्यवाद को लाभ पहुंचाते थे।

.... इस रास्ते पर वही नर-नारी चल रहे थे, जो साहस के साथ 'दमनकर्ताओं, शोषकों तथा जालिमों' को ललकार रहे थे, जो 'मानसिक जड़ता' का विरोध कर रहे थे तथा आत्म-चिंतन पर बल दे रहे थे। जैसा कि भगत सिंह ने आगे कहा, 'आलोचना तथा स्वतंत्र चिंतन एक क्रांतिकारी की दो अनिवार्य विशेषताएं हैं।' भगत सिंह कहते हैं कि एक विवेकशील, तर्कसंगत जीवन जीना सरल काम नहीं है।

अंधविश्वासी रहकर, सांत्वना अथवा राहत प्राप्त करना सरल है। परंतु यह हमारा कर्तव्य है कि हम निरंतर एक तार्किक जीवन जिएं और इसी कारण भगत सिंह, अपने लेख के अंत में, अपने आप को नास्तिक तथा यथार्थवादी (भौतिकवादी) घोषित करते हुए कहते हैं, ''वे एक ऐसे व्यक्ति की भांति खड़े होना चाहते हैं जिसका सिर आखिर तक ऊंचा रहता है, फांसी के सख्ते पर भी।''

2 भगत सिंह द्वारा किए गए धर्म के विश्लेषण तथा उसके मूल कारक में हमें उसकी शक्तिशाली, क्रांतिकारी वचनवद्धता और ऐतिहासिक, भौतिकवादी तथा वैज्ञानिक ढंग से उनके सोचने की क्षमता की झलक मिलती है। उनके धर्म में, धर्म की रचना

शासक तथा शोषक वर्गों द्वारा लोगों को केवल धोखा देने के लिए ही नहीं, बल्कि एक वर्ग विशेष के विशेषाधिकारों तथा सत्ता को न्यायसंगत ठहराने तथा लोगों को सामाजिक रूप से चुप रखने के लिए की गई है। वास्तविक जीवन में धर्म इस उद्देश्य की पूर्ति भी करता है और इसीलिए वह इन वर्गों का मित्र तथा हथियार बन जाता है। परंतु धर्म, विशेष रूप से प्राचीन मनुष्य द्वारा अपने प्राकृतिक वातावरण, अपनी सामाजिक गतिविधि तथा सामाजिक संगठनों को पूर्ण रूप से न समझने की अयोग्यता का परिणाम है। मनुष्य अपने जीवन को भी नियंत्रित नहीं रख सका तथा अपनी कमियों को भी दूर नहीं कर सका। तब ईश्वर एक 'लाभदायक' मिथक बन गया। यह मिथक 'प्राचीन युग में समाज के लिए लाभदायक था।'

यही नहीं, 'भगवान का विचार मुसीबत में मनुष्य के लिए बहुत सहायक होता है।' ईश्वर तथा धर्म ने बेसहारा व्यक्ति को जीवन का साहस के साथ मुकाबला करने योग्य बना दिया। 'कठिन परिस्थितियों का साहस के साथ मुकाबला करने, संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना करने, समृद्धि तथा संपन्नता में मनुष्य के घमंड पर अंकुश रखने के लिए ईश्वर को एक काल्पनिक अस्तित्व प्रदान किया गया।' 'विश्वास कठिनाई को कम कर देता है, उसे सुखद भी बना सकता है। ईश्वर से मनुष्य को सांत्वना तथा ढाढस भी प्राप्त हो सकते हैं।' इस प्रकार, असहाय, वंचित तथा निराश व्यक्तियों के लिए ईश्वर 'एक पिता, माता, बहन भाई, मित्र तथा सहायक के रूप में कार्य करता है।'

2 परंतु भगत सिंह कहते हैं, ''जब विज्ञान विकसित होने लगता है और जब दलित तथा पीड़ित व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने लगते हैं, जब मनुष्य अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयत्न करता है तथा यथार्थवादी बन जाता है (भगत सिंह ने यथार्थवादी शब्द 'विवेकशील' तथा 'भौतिकवादी' के स्थान पर प्रयोग किया है), ऐसे में तो ईश्वररूपी कृत्रिम बैसाखी और काल्पनिक रक्षक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। आत्म-मुक्ति के इस संघर्ष में 'धर्म के संकीर्ण सिद्धांत' तथा ईश्वर में विश्वास के विरुद्ध लड़ाई अनिवार्य हो जाती है।' भगत सिंह कहते हैं, ''किसी भी प्रगतिशील व्यक्ति को प्राचीन आस्थाओं को चुनौती देनी पड़ती है, उनकी आलोचना करनी पड़ती है तथा उनमें अविश्वास भी प्रदर्शित करना पड़ता है, एक के बाद एक, वह प्रचलित विश्वास के सभी पक्षों का तार्किक विश्लेषण करता है....एक व्यक्ति, जो यथार्थवादी होने का दावा करता है, उसे सम्पूर्ण प्राचीन विश्वास को चुनौती देनी पड़ती है...उसके लिए सबसे प्रथम तथा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह प्राचीन ढांचे को गिरा दे तथा नए दर्शन के लिए स्थान साफ कर दे।'

2. युवा भगत सिंह मार्क्स के चिंतन के कितने निकट हैं। 1844 में मार्क्स ने लिखा था: ''धर्म संसार की सामान्य परिकल्पना, इसका सार-संग्रह, एक लोकप्रिय रूप में इसका तर्कशास्त्र, इसकी आध्यात्मिक शक्ति, इसका जोश, इसका नैतिक दंड-विधान पूरक, सांत्वना तथा औचित्य के सर्वव्यापी स्त्रोत हैं... ..धार्मिक कष्ट एक ही समय में, वास्तविक कष्ट तथा वास्तविक कष्ट के विरुद्ध एक विरोध की अभिव्यक्ति है। धर्म एक पीड़ित प्राणी की आह तथा हृदयहीन संसार का हृदय है, ठीक उसी तरह जैसे कि यह आत्मदीन परिस्थितियों की आत्मा है। यह लोगों के लिए अफीम है। लोगों की काल्पनिक प्रसन्नता के रूप में धर्म को समाप्त करना उसकी वास्तविक प्रसन्नता को मांगने जैसा है।'' कलेक्टेड वर्क्स, खंड 3, 1975, पृ. 175-76। यद्यपि भगत सिंह इस परिच्छेद को नहीं पढ़ सकते थे, फिर भी वे अधिकतर लोगों की अपेक्षा इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि जब मार्क्स धर्म को 'लोगों के लिए अफीम' कहते हैं तो इसका क्या अर्थ है।

3 दूसरे कई मुद्दों पर बहस के दौरान भगत सिंह अपने पूर्ववर्ती क्रांतिकारियों के कार्यों के संबंध में अपनी सहानुभूतिपूर्ण परंतु विवेचनात्मक समझ का प्रदर्शन करते हैं। इसमें उनकी ऐतिहासिक वातावरण में दार्शनिक तथा राजनीतिक विचारों को सामने लाने की क्षमता तथा आधारभूत मार्क्सवादी चिंतन स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। अपने दूसरे लेख 'एन इंट्रोडक्शन टू द ड्रीमलैंड' में (यह बुजुर्ग क्रांतिकारी लाला रामसरन दास की काव्यकृति पर लिखा गया

लेख है। लाला जी को 1915 में काले पानी की सजा हुई थी) भगत सिंह ने साफ तौर पर विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने के मूल विचार पर आधारित प्रारंभिक 'शुद्ध' राष्ट्रवाद से उस राष्ट्रवाद की ओर परिवर्तन की रूपरेखा प्रस्तुत की है जो एक साथ ही प्रचलित सामाजिक व्यवस्था के संपूर्ण पुनर्गठन के प्रति भी वचनबद्ध था। एक राजनीतिक-दार्शनिक टीकाकार के बनिस्बत एक कवि की तरह लिखते हुए भगत सिंह, सबसे पहले, प्रारंभिक क्रांतिकारियों के साथ अपनी पीढ़ी की निरंतरता को स्थापित करते हैं। प्रारंभिक क्रांतिकारियों के साथ अपनी पीढ़ी ने राष्ट्रवाद, देशवासियों से प्रेम तथा बलिदान की सीख ली है। इसके पश्चात् वे उनके साथ अपने दार्शनिक, राजनीतिक तथा वैचारिक मतभेदों का उल्लेख करते हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, अपने लेख के आरंभ में ही भगत सिंह प्रेरणा-स्रोत के रूप में अपने आध्यात्मिक विश्वास तथा धार्मिकता और भौतिकवाद, तर्क तथा विज्ञान के प्रति अपनी दृढ़ वचनबद्धता के अंतर को स्पष्ट कर देते हैं।

वे हिंसा तथा अहिंसा के समकालीन, जटिल तथा हैरान करने वाले प्रश्नों पर भी अपने विचार प्रकट करते हैं। मामले की तह तक पहुंचते हुए वे बताते हैं कि किस प्रकार क्रांतिकारी एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की रचना करना चाहते हैं जिसमें हिंसा पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगी, जिसमें तर्क तथा न्याय की प्रधानता होगी तथा सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान तर्क तथा शिक्षा द्वारा किया जाएगा। परंतु साम्राज्यवादी, पूंजीवादी तथा दूसरे शोषक इसकी अनुमति नहीं देंगे। वे लोग व्यक्तियों की शिक्षा तथा शांतिप्रिय साधनों द्वारा समाजवाद को विकसित करने के प्रयास को बेरहमी से कुचल देते हैं। इसलिए क्रांतिकारियों को 'अपने कार्यक्रम के एक अनिवार्य अंग के रूप में' हिंसा को अपनाना है। जब भगत सिंह कहते हैं कि क्रांतिकारियों को ''हिंसा को एक भयावह अनिवार्यता के रूप में प्रयोग करना है'' तो वे बड़े सुंदर ढंग से सम्पूर्ण समस्या का सार प्रस्तुत कर देते हैं। एक बार जब समाजवादी शक्ति की स्थापना हो जाएगी तो उसके बाद समाज को विकसित करने के लिए शिक्षा तथा अनुनय का प्रयोग किया जाएगा।

नास्तिकता पर अपने लेख में भी उन्होंने इस मुद्दे को इसी प्रकार उठाया है। क्रांतिकारियों की नई पीढ़ी न 'केवल हिसंक तरीकों के रोमांस को बदल दिया है, जो कि हमारे पूर्ववर्तियों में प्रचलित था', और अब वे यह विश्वास करने लगे हैं कि 'जब भी बल को एक भयावह अनिवार्यता के रूप में प्रयोग किया गया, वह न्यायसंगत था', जबकि सभी प्रकार के जनआंदोलनों के लिए 'एक नीति के रूप में अहिंसा अनिवार्य थी।' इस प्रकार क्रांतिकारी हिंसा को महिमामंडित नहीं करते। क्रांति का आधार हिंसा की उपासना नहीं है। इसी प्रकार क्रांतिकारी आवश्यक हिंसा से परहेज भी नहीं करते। जहां भी इतिहास तथा शासक वर्ग उन्हें मजबूर करते हैं, वे प्रचलित सामाजिक व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए एक 'भयावह अनिवार्यता' के रूप में हिंसा का प्रयोग भी करते हैं।

इसके साथ ही भगत सिंह शुरूआती दौर से क्रांतिकारी चिंतन के अव्यावहारिक चरित्र एवं सामाजिक आंदोलनों तथा सामाजिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं में आदर्शवादी विचारकों की सकारात्मक भूमिका पर प्रकाश डालते हैं। परंतु जब 'वैज्ञानिक मार्क्सवादी समाजवाद' के आधार पर क्रांतिकारी आंदोलन वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा दर्शन को अपनाने लगते हैं तो वे अव्यावहारिक चिंतन के पतन की ओर भी संकेत करते हैं।

भगत सिंह अव्यावहारिक चिंतन के एक पहलू पर बड़े विस्तार से विचार करते हैंः शारीरिक श्रम को मानसिक श्रम से किस प्रकार जोड़ा जाए? वे स्वीकार करते हैं कि एक समाजवादी समाज की स्थापना के लिए दोनों की दूरी को समाप्त करना बुनियादी आवश्यकता है। परंतु वे महसूस करते हैं कि रामसरन दास द्वारा सुझाए गए यांत्रिक और काल्पनिक साधनों द्वारा अर्थात् सभी मानसिक श्रम करने वालों से प्रतिदिन चार घंटे शारीरिक श्रम करवाकर इस दूरी को समाप्त नहीं किया जा सकता। शारीरिक तथा मानसिक श्रम की प्रकृति में भिन्नता है। इस समस्या का मूल कारण दोनों के बीच की मौजूदा असमानता है। इस समस्या का समाधान तभी

हो सकता है जब दोनों को उत्पादनकारी श्रम समझा जाए तथा इस विचार का विरोध किया जाए कि मानसिक कार्य करने वालों से श्रेष्ठ होते हैं।

अंत में, भगत सिंह मार्क्स, एंगेल्स लेनिन की सर्वश्रेष्ठ परंपराओं से संबंध रखने वाले आलोचनात्मक क्रांतिकारी हैं। युवाओं को 'द ड्रीमलैंड' के अध्ययन के लिए प्रेरित करते हुए वे चेतावनी देते हैं, ''आंख मूंदकर इसका अनुसरण करने के लिए इसे मत पढ़ो तथा जो कुछ इसमें लिखा है उसे पूर्ण रूप से सत्य मत मानो। इसे पढ़ो, इसकी समीक्षा करो, इस पर विचार करो और इसकी मदद से अपने विचारों को स्वयं विकसित करो।''

-लेखक अज्ञात

फिलीपींस के राष्ट्रपति बोले-'अगर भगवान है तो कोई उसके साथ सेल्फी लेकर दिखाए, फोटो ले आए तो इस्तीफा दे दूंगा'

मनीला-फिलीपींस के राष्ट्रपति रोड्रिगो दुतेर्ते ने एक बार फिर विवादित बयान दिया है। इस बार भी भगवान पर ही दुर्तते ने कहा है कि 'अगर कोई शख्स यह साबित कर दे कि दुनिया में भगवान है तो वो तुरंत अपने पद से इस्तीफा दे देंगे। बस उस इंसान को भगवान के साथ एक सेल्फी फोटो लेकर दिखानी होगी, ताकि पता चल सके कि भगवान भी मनुष्य से सम्पर्क करने और उससे बात करने में इच्छुक और सक्षम है। रोड्रिगो दुतेर्ते पहले भी भगवान और चर्च को लेकर विवादित बयान देते रहे हैं कुछ समय पहले उन्होंने बाइबिल का मजाक उड़ा दिया था। रोड्रिगो दुतेर्ते ने भगवान के लिए भी आपत्तिजनक शब्द कहे थे। इसके बाद कैथोलिक बहुसंख्यक देश फिलीपींस में बड़ा विवाद खड़ा हो गया था। शनिवार को दुतेर्ते दाबोस में एक विज्ञान कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे थे। इसी दौरान अपने भाषण में उन्होंने कहा कि 'कोई मुझे बताए कि भगवान के होने के पीछे क्या तार्किक है? मैं चुनौती देता हूं कि अगर कोई शख्स भगवान के साथ सेल्फी लाकर दिखा दे, तो मैं पद छोड़ दूंगा।' उनके ये कहने से सन्नाटा छा गया। दुतेर्ते को भी अहसास हो गया कि उन्होंने कुछ गलत कह दिया है। फौरन बात को संभालते हुए उन्होंने कहा कि 'काल्पनिक में ये मानता हूं कि दुनिया में ऐसी कोई शक्ति जरूर है, जो तारों और खगोलीय पिंडों में मानव जाति की रक्षा करती है।' दुतेर्ते ने अपने भाषण में धर्म की परंपराओं पर पर भी सवाल उठाए और कहा कि चर्च में बच्चों को अशुद्ध बातें बताई जाती हैं और फिर उन्हें शुद्ध करने के लिए शुल्क लिया जाता है। दुतेर्ते 2015 में पोप के लिए भी आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल कर चुके हैं। एक कैथोलिक पोप ने तो दुतेर्ते को मनोरोगी बता दिया था। दुतेर्ते ने हाल ही में फिलीपींस में पुलिस को निर्देश भी दिया है कि वे ड्रग्स या नशीला पदार्थ रखने वाले किसी भी शख्स को फौरन गोली मार सकते हैं। इस फरमान का भी देश के ईसाई संगठन विरोध कर रहे हैं।

इधर, दुतेर्ते के प्रवक्ता ने कहा कि राष्ट्रपति को भी अपने धार्मिक विचार अभिव्यक्त करने का पूरा अधिकार

रोड्रिगो दुतेर्ते का ये बयान आते ही उनकी जमकर आलोचना शुरू हो गई। विपक्ष ने उनहें बुरा आदमी, निरंकुश व्यक्ति तक कह डाला। राष्ट्रपति के बयान में उनके प्रवक्ता हैरी रोके ने कहा कि देश के किसी भी अन्य व्यक्ति की तह राष्ट्रपति को भी धर्म को लेकर अपने विचारों की अभिव्यक्ति करने का अधिकार है। मनीला में शनिवार को एक वार्षिक बैठक आयोजित आयोजित की गई है। बताते हैं कि इस बैठक में राष्ट्रपति ने विवादित विचारों और उनके देश पर असर को लेकर भी चर्चा होगी।

मानव ज्ञान का चरित्र और विकास

–सनी

गतांक से आगे...

ज्ञान सिद्धांत

भौतिक जगत के प्रतिबिम्ब के रूप में:

ज्ञान एक वैज्ञानिक वस्तु होता है। चिन्तन की प्रक्रिया में मनुय की चेतना पर भौतिक जगत के विभिन्न हिस्सों तथा प्रक्रियाबों का प्रतिबिम्बन होता है। यह दुनिया हमारे सिद्धान्तों, तर्कों या विज्ञान के हिसाब से नहीं चलती बल्कि हम व्यवहार द्वारा प्राकृतिक तथा सामाजिक परिघटनाओं तथा प्रक्रियाओं के अनुसार अपने विज्ञान, सिद्धान्त तथा तर्कों का निर्माण करते हैं। यह भौतिक विश्व विकासमान होता है, इसलिए हमारा ज्ञान भी विकासमान होता है। वस्तुएँ हमारी चेतना से स्वतन्त्र अस्तित्वमान होती हैं। हमें पिछली सदी तक यह ज्ञात नहीं था कि आँख में लगने वाले काजल में कार्बन नैनोट्युब्स मौजूद होती है। काजल के अन्दर कार्बन नैनोट्यूब्स पहले से मौजूद थी न कि तबसे जब वैज्ञानिकों ने प्रयोग कर इनकी मौजूदगी प्रस्थापित की। किसी वस्तु के कुछ गुण ज्ञात होते हैं तो कुछ अज्ञात। व्यवहार से अज्ञात ज्ञात में बदलता है, नये निश्चित व अनिश्चित पैदा होते हैं।

हमारा ज्ञान लगातार अज्ञानता से ज्ञान की ओर बढ़ता है। यह बना–बनाया अपरिवर्तनशील नहीं होता बल्कि सतत गतिमान और विकासमान भौतिक विश्व का लगातार प्रतिबिम्बन करता हुआ विकासशील होता है। सम्पूर्ण ज्ञानयुक्त ब्रह्म कुछ नहीं होता। ज्ञान लगातार उथलेपन से गहरेपन की तरफ बढ़ता है, एकांगी से बहुमुखीपन की तरफ बढ़ता है। भौतिकी का न्यूटन के सिद्धान्तों से क्वाण्टम भौतिकी तथा सापेक्षिता सिद्धान्त, कॉस्मोलोजी तक विकास यही दिखाता है। हर विज्ञान तथा कला के क्षेत्र में ज्ञान एकांगी से बहुमुखी तथा उथलेपन से गहरेपन की ओर बढ़ता है। इंसान का व्यवहार ही बाहरी जगत के बारे में ज्ञान की कसौटी होता है। हमारी संवेदनाओं द्वारा अनुभूत वस्तुओं के गुणों को हम वस्तुओं के इस्तेमाल के दौरान ही परीक्षण में लाते हैं। अगर वस्तु के बारे में हमारा बोध सही है तो व्यवहार में वस्तु के गुण हमारे विचारों को पुख्ता करते हैं। जब हम व्यवहार में असफल होते हैं तो हम संवेदना के बोध पर पुनः विचार करते हैं तब हम वस्तु के असल रूप या बदले हुए रूप के सार के अनुसार विचारों में बदलाव करते हैं। यही ज्ञान के प्रतिबिम्बन का सिद्धान्त है।

ज्ञान तथा व्यवहार

ज्ञान मूल रूप से व्यवहार पर टिका होता है। व्यवहार के दौरान ही इंसान खुद के संवेदनाबोध को परखता है तथा संवेदनाबोध द्वारा पैदा हुई धारणाओं का भी व्यवहार में ही निर्माण करता है। व्यवहार का तात्पर्य सामाजिक व्यवहार है। ज्ञान सिर्फ सामाजिक व्यवहार से ही पैदा होता है। सामाजिक सम्बन्धों में रहते हुए सामाजिक इंसान का व्यवहार। अगर कोई इंसान किसी वस्तु को जानना चाहता हो तो उसको वस्तु के वातावरण में आना ही होगा। कोई भी विद्वान किसी वस्तु या प्रक्रिया का ज्ञान घर बैठे नहीं प्राप्त कर सकता है। हालांकि आज के वैज्ञानिक तथा इण्टरनेट के युग में यह बात चरितार्थ लगती है कि विद्वान सचमुच ही घर बैठे–बैठे कम्प्यूटर पर क्लिक करके ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु सच्चा व्यक्तिगत ज्ञान उन्हीं लोगो को प्राप्त होता है जो व्यवहार में लगे होते हैं। यह ज्ञान विद्वानों तक (लेखन तथा तकनीक द्वारा) तभी पहुँचता है जब व्यवहार में लगे लोग वह ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसलिए मानव ज्ञान के दो भाग होते हैं- प्रत्यक्ष ज्ञान व अप्रत्यक्ष ज्ञान। अप्रत्यक्ष ज्ञान दूसरों के लिए प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। इस तरह सम्पूर्ण ज्ञान भी सामाजिक होता है। यह मुख्यतः इंसान की उत्पादक कार्यवाही पर निर्भर करता है।

इंसान की उत्पादन कार्यवाही

मनुष्य का ज्ञान उसकी उत्पादन की कार्यवाही पर निर्भर करता है। उत्पादन कार्यवाही से तात्पर्य इंसान की उसके खाना ढूंढ़ने तथा बनाने की कार्यवाही, रहने के लिए घर, कपड़ों तथा जीवन के लिए जरूरी अन्य उत्पादन से है। इंसान की इन जरूरतों या संक्षेप में जीवन के संघर्ष से ही उत्पादन कार्यवाही निर्धारित होती है। खाद्य संग्रह व शिकार द्वारा मानव अपना खाना जुटाता था। इस दौरान उसने पत्थरों से, फिर धातुओं से हथियार बनाये। शिकार के दौरान ही उसने भाला, तीर-धनुष्स हथगोला आदि हथियार विकसित किये। इसी दौरान इंसान ने भौतिकी के यान्त्रिकी व गतिकी की शाखा का आधार रखा। जानवरों को डराने तथा खुद को गर्म रखने के लिए इंसान ने आग की शक्ति पर काबू किया। शिकार में कुशलता के लिए भाषा ईजाद की। शिकार के जानवरों, कन्द-मूल के पेड़-पौधों के गुणों का उसने अध्ययन किया। गुफाओं में आज भी जानवरों के झुण्डों व उनकी तमाम गतिविधियों के चित्र मिलते हैं। यही आगे चलकर जीव-विज्ञान का आधार बना। प्रकृति की नकल करके ही लम्बी प्रक्रिया में खेती की कला सीखी गयी।

खेती के लिए खेत के बंटवारे के चलते ज्यामिति विज्ञान विकसित हुआ। फसल व अन्य महत्त्वपूर्ण उत्पादन प्रणाली को विकसित करते हुए उसने ज्ञान को नये आयाम दिये। जानवरों को सिर्फ खाने के अलावा यातायात व खेती के लिए भी इस्तेमाल किया जाने लगा। बैलगाड़ी में से बैल को हटाकर ईंजन आया था। आधुनिक विज्ञान ने भी तमाम सामाजिक चेतना व सामाजिक तर्कों से ऊर्जा प्राप्त की। नृत्य, संगीत तथा गायन की कला जादुई विश्व-दृष्टिकोण के युग के उत्सवों से निकलते हुए अलग कला के रूपों में स्थापित हुई। उस दौर के ये उत्सव भी उत्पादन को बढ़ाने के लिए किये जाते थे। मूल बात यह है कि ज्ञान की हर शाखा का उद्भव उत्पादन की कार्यवाही में हुआ है। उत्पादन कार्यवाही के अलावा सामाजिक स्तर पर वर्ग-संघर्ष एवं सामाजिक क्रान्तियाँ भी ज्ञान को गहराई से प्रभावित करते हैं।

वर्ग-संघ :

इंसान का पिछले 4,000 सालों का इतिहास वर्ग-संघर्ष का इतिहास है। समाज में इंसानों के उत्पादन सम्बन्ध वर्गों पर आधारित सामाजिक सम्बन्ध हैं। विभिन्न रूपों में वर्ग-संघर्ष ने मानव-ज्ञान के विकास पर गहरा प्रभाव डाला है। वर्ग समाज में रहते हुए इंसान किसी न किसी वर्ग के सदस्य के रूप में जीता है और बिना किसी अपवाद के प्रत्येक विचारधारा पर किसी न किसी वर्ग की छाप होती है। भारत का इतिहास खुद इसका बड़ा उदाहरण है। मनुस्मृति, उपनिषद्, गीता आदि में ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों, शासन करने वाले वर्गों का पक्ष रखा गया है। इसके प्रतिरोध में खड़ा चार्वाक दर्शन शोषितों का दर्शन है। प्लेटो का रिपब्लिक राज्य के प्रति वफादार है और उसका गुलामों से कोई मतलब नहीं है। पुनर्जागरण काल में हर ज्ञान क्षेत्र में, कला में, विज्ञान में, सामन्तवाद-विरोधी तत्व मौजूद हैं तथा नये से नये बुर्जुआ वर्ग की वैज्ञानिक जरूरत के अनुरूप था। रूस और चीन में समाजवाद के प्रयोगों के दौरान और क्रान्ति से पहले प्रतिरोध और क्रान्ति की संस्कृति ने पूंजीवाद और पूंजीपति वर्ग के विरोध में ही रूप ग्रहण किया। प्रायः ज्ञान के क्षेत्र के रूप तथा विकास को वर्ग-संघर्ष निर्धारित करता है।

वैज्ञानिक प्रयोग

सामाजिक व्यवहार के अन्तर्गत वैज्ञानिक प्रयोगों का मतलब सामाजिक क्रान्तियों व जन-संघर्षों और विज्ञान के क्षेत्र में होने वाले नये आविष्कारों से है। इस दौरान मानवीय चेतना का स्तर छलांग लगाकर ऊँचा उठ जाता है। मानव ज्ञान नये स्तरों तथा संज्ञान के नये धरातल पर पहुँच जाता है, सामाजिक सम्बन्धों में हुआ बदलाव मानव चेतना पर प्रतिबिम्बित होता है। सामन्तवाद से पूंजीवाद में संक्रमण के दौरान हुई सामाजिक क्रान्तियों ने सम्पूर्ण विश्व का नक्शा बदल दिया। सदियों के बन्धन एक झटके में टूट गये। पुनर्जागरण-धार्मिक सुधार-प्रबोधन के पूरे दौर में परिवर्तन और प्रगति की रोशनी से सारा यूरोप झिलमिल हो उठा। औद्योगिकीकरण इसी संघर्ष के दौरान उत्पन्न हुआ। स्टीम इंजन, धरती

का गोल होना, उद्विकास का नियम, ब्रह्माण्ड का असल रूप, कोशिका की खोज आदि वैज्ञानिक खोज व बीथोवन, बाक, मोजार्ट, डा विंची, माइकलेंजेलो, वाल्तेयर, दिदेरो जैसे महान बुद्धिजीवी, दार्शनिक, कलाकार, वैज्ञानिक और संगीतकार भी इसी उथल-पुथल भरे समय की उपज थे। 1917 में हुई रूस की समाजवादी क्रान्ति ने सदियों से पिछड़े रूस को दुनिया के विकसित देशों की कतार में खड़ा कर दिया जो एक मायने में उनसे भिन्न था : यहाँ का विकास करोड़ों मेहनतकशों के शोषण पर नहीं, बल्कि उनके साझे मालिकाने और निर्णय शक्ति पर टिका था व महाशक्ति सोवियत रूस बना दिया। मजदूरों के अधिनायकत्व में सोवियत रूस विज्ञान, कला, दर्शन हर मायने में नये-नये सृजन करने लगा तथा खुद जनता के बड़े हिस्से ने इसमें भागीदारी भी ली थी। ये वैज्ञानिक प्रयोग ही हैं जो विज्ञान, कला को सदियों के बन्धन से मुक्त कर सृजनात्मकता के अनन्त आसमान में नयी ऊँचाइयाँ छूने की ऊर्जा देते हैं। परन्तु व्यवहार के द्वारा मानव ज्ञान उत्पन्न कैसे हुआ ? आइये ज्ञान के विकास की प्रक्रिया पर एक नजर दौड़ा लेते हैं।

इन्द्रियग्राह्य-बुद्धिसंगत ज्ञान तथा व्यवहार

व्यवहार की प्रक्रिया में इंसान भिन्न-भिन्न वस्तुओं को देखता है, उनके भिन्न पहलुओं, बाह्य सम्बन्धों को देखता है। यहाँ उदाहरण के लिए हम अपने देश के भिन्न आँकड़ों, बातचीत व आसपास की परिस्थितियों को देखते हैं। यहाँ की भौगोलिक परिस्थिति, आवासीय स्थिति देखते हैं, व्यापक स्तर पर लोगों से बातचीत करते हैं व राजनीतिक पार्टियों के दस्तावेज पढ़ते हैं। देश का आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक अध्ययन करते हैं। यह सब पूरे देश की जनता के जीवन, यहां के समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति के हालात का चित्र प्रस्तुत करते हैं। यह प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त होने वाला आनुभविक ज्ञान है जो यथार्थ का प्रत्यक्ष रूप हमारे सामने रखता है। इसे ज्ञान की इन्द्रियग्राह्य मंजिल कहते हैं, यह इन्द्रिय संवेदनाओं और संस्कारों की मंजिल है। इस देश की विशिष्ट भौतिक परिस्थिति तथा उनके रूप हमें प्रभावित करते हैं। ये संवेदनाओं को जन्म देते हैं और दिमाग में बहुत से संस्कार छोड़ देते हैं। यह बिखरे हुए संवेदनों, अनुभवों, चित्रों का एक समुच्चय होता है। अभी हमने इनके आपसी सम्बन्धों, प्रति और चरित्र को नहीं समझा होता है। न ही हम इनके बारे में कोई सार्वभौमिक या सामान्य बयान दे सकते हैं। अभी यह अनुभवों और संवेदनों का एक अव्यवस्थित समुच्चय मात्र होता है। यह ज्ञान प्राप्ति की पहली मंजिल होती है। जब सामाजिक व्यवहार की प्रक्रिया आगे चलती है, ये अनुभव बार-बार दोहराये जाते हैं। अनुभवों के बार-बार दोहराये जाने से हमारा मस्तिष्क अपनी स्वाभाविक प्रक्रिया से इन अनुभवों का सामान्य सूत्रीकरण करने लगता है। यहां हमारी ज्ञान-प्राप्ति की प्रक्रिया में एक आकस्मिक छलांग लगती है और हमारे मस्तिष्क में धारणाओं का निर्माण होता है। ये धारणाएँ वस्तुओं के बाह्य सम्बन्ध नहीं रह जातीं, ये वस्तुओं के सारतत्व, समग्रता तथा आन्तरिक सम्बन्धों तक जाती हैं। धारणाओं तथा इन्द्रियग्राह्य ज्ञान में गुणात्मक भेद होता है। यह ज्ञान प्राप्ति की दूसरी मंजिल है। जब हम अपने देश की आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का गहन अध्ययन कर लेते हैं तथा अनुभव से दोनों का मिलान करते हैं तो यह निर्णय कर पाते हैं कि यहां हर वस्तु बिकने योग्य है, बाजार की ताकत अर्थव्यवस्था को चलाती है, इंसान की मेहनत, रोटी, कपड़ा और मकान से लेकर फूल तथा पहाड़ भी बिकाऊ हैं। हमारा समाज वर्गों के आधार पर बंटा है। सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था पूँजीवादी है, जिसमें हर चीज का आधार मुनाफा और फायदा है। उत्पादन की प्रेरक शक्ति सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं बल्कि निजी मुनाफा है। कुछ मुट्ठी भर पूंजीपति व उनकी चाकरी करने वाले नौकरशाह आम मेहनतकश मजदूरों की मेहनत पर ही अपने लिए अय्याशी के अड्डे खड़े कर पाते हैं। मजदूरी की लूट को जारी रखने के लिए पूरा तन्त्र, मीडिया, सेना व पुलिस उनकी सेवा में हाजिर है। यह किसी भी वस्तु या परिघटना के ज्ञान की प्रक्रिया में धारणा, निर्णय व तर्क की मंजिल है। यह बुद्धिसंगत ज्ञान की मंजिल है। ज्ञान का वास्तविक कार्य इस

मंजिल तक पहुंचना है। वास्तविक वस्तुओं के आन्तरिक अन्तरविरोधों, नियमों और विभिन्न प्रक्रियाओं के आन्तरिक सम्बन्धों को समझ लेना है। तर्कसंगत ज्ञान वस्तुओं का उसके वातावरण के साथ अन्तर्विरोध तथा उसके सारतत्व तक जाता है। तर्कसंगत ज्ञान सम्पूर्ण विश्व के इतिहास तथा विकासक्रम को समग्र तथा विशिष्ट रूपों में भी ग्रहण करने में समर्थ होता है।

ज्ञान विकास का यह सिद्धान्त पहली बार मार्क्सवाद ने दिया था। इसे ज्ञान का द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी सिद्धान्त कहते हैं। यह पूरी तरह व्यवहार पर आधारित होता है। माओ ने कहा था कि 'इन्द्रियग्राह्य ज्ञान और बुद्धिसंगत ज्ञान के बीच गुणात्मक अन्तर होता है, लेकिन वे एक-दूसरे से अलग नहीं होते, व्यवहार के आधार पर उनमें एकता कायम होती है।' रसायनविज्ञान में फलोगिस्तीन से आक्टेट थ्योरी से मोलिक्यूलर ऑरबिटल थ्योरी तक विकास इसी प्रक्रिया को दर्शाता है। ज्योतिष से खगोल शास्त्र बनने की प्रक्रिया, भौतिकी में इथर थ्योरी से सापेक्षिकता सिद्धान्त तक विकास, विज्ञान की हर शाखा में हम इन्द्रियग्राह्य ज्ञान को तर्कसंगत ज्ञान में बदलते हुए देखते हैं। जापान के भौतिकी के मार्क्ष्सवादी वैज्ञानिक ताकेतानी ने इसी सिद्धान्त पर आधारित थ्री स्टेज थ्योरी दी है। जादू की आदिम अवस्था से धर्म व विज्ञान में बदलाव भी इन्द्रियग्राह्य ज्ञान से बुद्धिसंगत ज्ञान के विकास को दिखलाता है। इस विषय पर हम आगे विज्ञान के स्तम्भ में अवश्य लिखेंगे।

ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया के क्रम में इन्द्रियग्राह्य ज्ञान के बाद ही तर्कसंगत ज्ञान आता है। पहले इंसान किसी भी वस्तु का इन्द्रिय संवेदन ज्ञान हासिल करता है। बुद्धिमान से बुद्धिमान इंसान जंगल में बैठकर अवधारणा नहीं सृजित कर सकता, जो कि वास्तविक ज्ञान है। ज्ञान व्यवहार से पैदा होता है।

ज्ञान सिद्धान्त का भौतिकवाद यही है। ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया इन्द्रियग्राह्य ज्ञान से तर्कसंगत ज्ञान तक आगे बढ़ती है। यह ज्ञान प्रक्रिया का द्वन्द्ववाद है। पर यह प्रक्रिया यहां आकर भी रूक नहीं जाती। ज्ञान सिर्फ प्रक्रियाओं तथा वस्तुओं के ठोस रूप तथा उनके आन्तरिक सम्बन्ध जानने तक नहीं जाता। ज्ञान व्यवहार से शुरू होता है और उसे फिर व्यवहार के पास वापस लौट आना होता है। इन्द्रियग्राह्य ज्ञान व्यवहार से पैदा होता है जो पुनरावृत्ति और विवेक से तर्कसंगत ज्ञान तक पहुंच जाता है। विवेक और तर्कशक्ति से आनुभविक ज्ञान से निकली अवधारणाओं का सत्यापन व्यवहार के दौरान होता है। हम समाज की पूंजीवादी तथा वर्ग समाज की व्याख्या तक पहुंचने के बाद, तथा यह जानने के बाद कि यह सामाजिक बदलाव मजदूर वर्ग के द्वारा ही सम्भव है, जब समाज को बदलने व्यवहार के धरातल पर उतरते हैं तो पहले तो हमारी धारणा पुख्ता हो जाती है। पर कुछ नये सवाल भी खड़े हो जाते हैं। नया व्यवहार नये इन्द्रियग्राह्य ज्ञान को जन्म देता है, जिसमें से कुछ पुराने व्यवहार से जन्मे अवधारणात्मक ज्ञान को पुष्ट करते हैं तो कुछ उसमें संशोधन या परिवर्तन की माँग करते हैं। इस प्रकार व्यवहार एक बार फिर से अवधारणात्मक ज्ञान को उन्नत करता है। उन्नत अवधारणात्मक ज्ञान को पुष्टि के लिए फिर से व्यवहार तक ही आना होता है। अपुष्टि वास्तव में अवधारणात्मक ज्ञान के विकास की प्रेरक शक्ति होती है। यह असफलता एक प्रकार की रिडेम्प्टिव प्रक्रिया होती है, जिसके जरिये ज्ञान सतत् विकासमान होता है। यानी, व्यवहार-सिद्धान्त-व्यवहार-सिद्धान्त। यही है द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी ज्ञान सिद्धान्त।

ज्ञान : सापेक्ष व निरपेक्ष

ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया सम्पूर्णता तथा असम्पूर्णता के बीच अन्तर्विरोधपूर्ण होती है। चिन्तन में वस्तुगत प्रक्रिया को प्रतिबिम्बित कर इंसान अपने ज्ञान को इन्द्रियग्राह्य तथा बुद्धिसंगत ज्ञान के क्रम में विकसित करता है तथा व्यवहार में यह सतत् उन्नत धरातलों पर पहुंचता जाता है। वास्तविकता के अनुरूप किये गये प्रयोग हमारी ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया के एक चरण को पूरा करते हैं। हम पूर्वकल्पित धारणाओं के अनुरूप प्रयोग को वस्तुगत रूप देते हैं। परन्तु कई बार ऐसा होता है कि सिद्धान्त सच्चाई को अधूरा या गलत ढंग से निरूपित करते हैं। यह सिर्फ हमारी वैज्ञानिक एवं तकनोलोजिकल सीमा के कारण नहीं

बल्कि वस्तुगत प्रक्रिया के विकास पर भी निर्भर करता है। यह इस पर भी निर्भर करता है कि वस्तुगत प्रक्रिया अपने को किस हद तक प्रकट करती है। इसके अनुसार, वस्तुगत प्रक्रिया की अभिव्यक्ति के अनुसार हमें ज्ञान को फिर से ठीक करना होता है। जहां तक प्रक्रिया की प्रगति का ताल्लुक है, इंसान की ज्ञान प्रप्ति पूरी नहीं होती है। अगर और ठोस रूप में कहें तो 'विश्व के विकास की निरपेक्ष और आम प्रक्रिया में प्रत्येक ठोस प्रक्रिया का विकास सापेक्ष होता है तथा इसलिए निरपेक्ष सत्य की अनन्तधारा में विकास की हर विशेष मंजिल पर ठोस प्रक्रिया का मानव ज्ञान सापेक्ष रूप में सत्य होता है।' (माओ)

इसका सीधा मतलब है कि विश्व में परिवर्तन की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है। इंसान के दिमाग में पैदा हुआ भौतिक जगत का प्रतिबिम्बन ऐतिहासिक परिस्थितियों द्वारा सीमित होता है तथा उस इंसान की भौतिक व दिमागी क्षमता पर भी निर्भर करता है। परन्तु इसका यह मतलब नहीं होता कि विश्व में सारे सत्य सापेक्ष हैं तथा ये अराजकतापूर्ण तौर पर संसार में पैदा होते हैं। जैसा कि लेनिन ने कहा है, 'अनगिनत सापेक्ष सत्यों का समुच्चय ही निरपेक्ष होता है।' दिक् व काल में अलग इंसानों द्वारा सम्प्रेषित सत्य एक-दूसरे से जुड़कर निरपेक्ष सत्य बनाते हैं जो खुद्द भी सामाजिक विकास के साथ विकसित तथा गहन होता जाता है। अन्तरविरोध ा की सार्वभौमिकता निरपेक्ष है। इंसान द्वारा सत्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। क्वाण्टम भौतिकी का सि)ान्त ''अनसर्टेनिटी प्रिंसिपल' छ्वअनि चतता का सि)ान्तत्र यही स्थापित करता है, हालाँकि इसे प्रतिपादित करने वाले वर्नर हाइजेनबर्ग स्वयं इसकी एक अज्ञेयवादी नवकाण्टीय व्याख्या करते हुए इस नतीजे पर पहुंच जाते हैं कि वस्तुगत यथार्थ नामक कोई चीज नहीं होती और कि प्रेक्षक ही यथार्थ का निर्माता है। लेकिन चूंकि विज्ञान किसी नवकाण्टीय अज्ञेयवादी के प्रेक्षण की निर्मिति नहीं है, इसलिए अनिश्चितता के सिद्धान्त का एक सही विश्लेषण हमें दिखला देता है कि यह सिर्फ ज्ञान प्राप्ति के सापेक्षता के पहलू को उजागर करता है और इसके जरिये ज्ञान की सतत् गतिशीलता पर बल देता है। अनिश्चितता सिद्धान्त के मार्कसवादी विश्लेषण और व्याख्या के लिए रुचि रखने वाले पाठक ताकेतानी, सकाता और युकावा नामक जापानी वैज्ञानिकों के आधुनिक भौतिकी पर लेखन को पढ़ सकते हैं। इसके अलावा भी विश्व के कई देशों के मार्कसवादी वैज्ञानिकों ने अनिश्चितता के सिद्धान्त को मार्क्ससवाद के सामान्य सिद्धान्तों की पुष्टि के रूप में प्रदर्शित किया है। हर नये प्रयोग के साथ हमारे प्रेक्षण (observation) गहरे होते हैं। अनिश्चितता की समस्या वास्तव में ताकेतानी के शब्दों में प्रेक्षण की समस्या है। आज मानवीय प्रेक्षण का स्तर जिस धरातल पर है उस धरातल पर सूक्ष्म वि व की कई चीजों का हम सटीक तौर पर निध ारण नहीं कर सकते। लेकिन भवि य में ये प्रेक्षण और उन्नत होगा और गहरे धरातलों पर जायेगा। उस समय पुरानी अनिश्चितताएं निश्चितताओं में तब्दील हो जाएंगी। लेकिन तब तक अनि चतता का एक नया क्षितिज उजागर हो चुका होगा। विज्ञान के पास हमेशा कुछ अनुत्तरित प्र न रहेंगे। क्योंकि विज्ञान धर्म नहीं होता। यह द्वन्द्वात्मक रूप से सतत् गतिमान व्यवस्थित विशिष्ट ज्ञान का समुच्चय है। ध र्म एक भी सही प्रश्न नहीं पूछता, इसलिए उसके पास हर प्रश्न का जवाब होता है! विज्ञान सही प्र न पूछता है इसलिए वह कभी सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता। वह जितने प्रश्नों का उत्तर देता है, उन उत्तरों से ही वह नये प्रश्नों को खड़ा भी करता है। यह एक सतत् अन्तहीन प्रक्रिया है।

ज्ञान प्राप्ति के लिए ठोस अध्ययन

मार्क्स ने कहा था कि 'विज्ञान में कोई सीध ा-सपाट रास्ता नहीं है। प्रतिभा के शिखर पर केवल वही पहुंच सकते हैं जो सीधे खड़े पहाड़ी रास्तों पर चढ़ने में डरते नहीं है।' यह कथन मार्क्सवाद के कर्म सिद्धान्त, ज्ञान सिद्धान्त की मूलवस्तु है। ज्ञान को एकांगी या छिछले ढंग से नहीं प्राप्त किया जा सकता है। न अनुभववादी या विज्ञानवादी तरीके से प्राप्त किया जा सकता है। यह सिर्फ व्यवहार तथा सिद्धान्त

शेष पृष्ठ 29 पर......

स्वतंत्र चिंतन

कौन-सा मार्ग ?

-कर्नल इंगरसोल

दो रास्ते हैं-प्राकृतिक और परा-प्राकृतिक

एक मार्ग तो है जिस संसार में हम जीते हैं, उस संसार के लिए जीने का, अध्ययन और खोज द्वारा अपने दिमाग को विकसित करने का और आविष्कार द्वारा प्राकृतिक शक्तियों से लाभ उठाने का जिससे हमें अच्छे घर मिल सकें, वस्त्र मिल सकें और भोजन मिल सके, जिससे हम कला और विज्ञान द्वारा दिमाग की भूख मिटा सकें

दूसरा मार्ग है उस संसार के लिए जीने का, जिसकी हम आशा लगाए रहते हैं, जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते, उसके लिए वर्तमान-जीवन को बलिदान करने का, प्रार्थना और धार्मिक क्रिया-कलापों द्वारा आकाश में बादलों से ऊपर रहने वाले किसी से सहायता, किसी से रक्षा प्राप्त करने का।

एक मार्ग है-विचार करने का, खोज करने का, आंख खोलकर देखने का और तर्क के प्रकाश का अनुसरण करने का।

दूसरा मार्ग है-विश्वास करने का, मान लेने का, पीछे चलने का, अपनी इन्द्रियों को अप्रामाणिक मानने का और ऐसे लोगों के सामने सिर झुका देने का जो निर्लजतापूर्वक यह कह सकते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं।

एक मार्ग है-अपने मानव-बंधुओं, अपनी स्त्री और अपने बच्चों के लिए जीने का, जिन्हें हम प्यार करते हैं, उन्हें सुखी बनाने का और जीवन के दुःखों से उनका बचाव करने का।

दूसरा मार्ग है-भूत-प्रेतों, जिन्नों और देवताओं के लिए जीने का, इस आशा से कि वे परलोक में इसका फल देंगे।

एक मार्ग है-तर्क को सिंहासनरूढ़ करने का और वास्तविक घटनाओं पर भरोसा करने का।

दूसरा है-अंध-श्रद्धा के सिर पर ताज रखने का और विश्वास पर जीने का।

एक मार्ग है-भीतरी प्रकाश के अनुसार चलने का, उस प्रदीप से जो बुद्धि को प्रकाशित करता है, मार्ग प्रशस्त करने का, साथ-साथ स्पर्श, चक्षु और श्रोत आदि इन्द्रियों से उस मार्ग को कसौटी पर कसते रहने का।

दूसरा मार्ग है-जमीन पर रेंगकर चलने का, अपने साथ विश्वासघात करने का और जिस स्वतंत्रता का उपयोग करने का तुममें साहस नहीं है, उससे दूसरों को वंचित करने का।

आप यह कल्पना न करें कि जो लोग आज तक दूसरे मार्ग पर चलते रहे हैं, जिन्होंने गलत दिशा ग्रहण की है, उनसे मैं घृणा करता हूँ।

हमारे पूर्वजों ने, जो कुछ वे कर सकते थे, उसमें अपनी ओर से कुछ कसर नहीं रखी। वे प्रकृति से परे किसी शक्ति में विश्वाश करते थे। वे मानते थे कि बलिदानों और प्रार्थनाओं से, व्रत रखने और विलाप करने से, वह शक्ति धूप, वर्षा और अच्छी पैदावार देगी-इस संसार में दीर्घ आयु और दूसरे में अनन्त आनंद देगी। उनके लिए परमात्मा एक निरंकुश तानाशाह था जो जल्दी गुस्सा होकर भयानक दण्ड देता था। वह ईर्ष्यालु, अपने शत्रुओं से घृणा करने वाला और अपने स्नेह-भोजनों के प्रति उदार था। वे एक शैतान में भी विश्वास करते थे, जो शक्ति में परमात्मा से कुछ ही कम था, किंतु ठग विद्या में शायद उससे थोड़ा अधिक। इन दोनों के बीच में आदमी की आत्मा का वही हाल था, जो बिल्ली के दोनों पंजों के बीच बेचारे चूहे का।

इन दोनों भगवानों से आदमी को भय लगता था। हमारे पूर्वज न परमात्मा से प्यार ही करते थे और न शैतान से घृणा ही घृणा। हां, वे डरते दोनों से थे। असल में वे परलोक में तो परमात्मा के कृपा-भाजन बने रहना चाहते थे और इस लोक में

शैतान के। उनकी मान्यता थी कि प्रकृति उन्हीं दोनों की दासी है। उनकी समझ में बाढ़, तूफान, रोग, भूकंप, आंधी दण्ड-स्वरूप भेजे जाते थे और सभी अच्छी चीजें पुरस्कार स्वरूप।

सभी कुछ परा-प्राकृतिक शक्तियों के अधिकार और आदेश के अधीन था। सूर्य-ग्रहण और चंद्र-ग्रहण लोगों के पापों के परिणाम समझे जाते थे और असाधारण घटना एक चमत्कार थी। पुराने समय में सारी ईसाइयत एक पागलखाना थी और उन्मत्त पादरी-पुरोहित उसके रखवाले। विज्ञान का नाम न था। लोग न खोज करते थे, न विचार। वे केवल (भय से) कापंते थे और विश्वास करते थे। अज्ञान और मिथ्या-विश्वास का ही ईसाई संसार पर शासन था।

आखिरकार कुछ लोग ऐसे हुए, जिन्होंने आंख खोलकर देखना आरंभ किया, सोचना-विचारना आरंभ किया।

यह पता लगा कि चंद्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण निश्चित समय का अंतर देकर होते हैं और उनके होने का पहले से पता लग सकता है। इससे यह स्पष्ट हो गया कि आदमियों के कृतत्व और सूर्य-ग्रहण तथा चंद्र ग्रहण का परस्पर कोई सबंध नहीं। कुछ लोग यह संदेह करने लगे कि भूकम्प और तूफान प्राकृतिक कारणों से होते हैं और उनका मनुष्यों के कर्मों से किसी तरह दूर का भी संबंध नहीं।

कुछ लोगों ने देवताओं के अस्तित्व में संदेह करना आरंभ किया अथवा आदमियों के कारोबार से उनके किसी भी प्रकार के संबंध में। ज्योतिष के बारे में, तारों की महान संख्या के बारे में, ग्रहमण्डलों की निश्चित और लगातार गति के बारे में और यह कि उनमें से अनेक पृथ्वी से बहुत बड़े हैं। पृथ्वी के बारे में, चीजों के क्रम विकास, पौधों की वृद्धि और उनके वर्गीकरण के बारे में, द्वीपों और महाद्वीपों के निर्माण के बारे में। अग्नि, जल और वायु ने असंख्य शताब्दियों में उनके निर्माण में जो हिस्सा लिया है, उसके बारे में तथा जीवनमात्र के परस्पर संबंध होने के बारे में जानकारी प्राप्त करके, सूर्य के नक्षत्र-मण्डल में पृथ्वी का स्थान निश्चित् करके, तजुर्बों और खोज के द्वारा रसायन-शास्त्रों के कुछ रहस्यों का उद्‌घाटन करके, छापेखाने के आविष्कार द्वारा बातों, सिद्धांतों और विचारों को सुरक्षित रखकर तथा उनका प्रचार करके वे मिथ्या-विश्वास की कुछ कड़ियों को तोड़ने, प्रकृति से ऊपर की किसी शक्ति के अधिकार को कुछ ढीला करने तथा ज्ञान के सूर्य की ओर अपना मुंह करने में सफल हुए। शनैः-शनैः खोजियों और विचारकों की संख्या बढ़ी। शनैः-शनैः वास्तविक बातों का संग्रह हुआ, विज्ञान प्रकट हुए, पुराने विश्वास थोड़े बेहूदा प्रतीत होने लगे और प्रकृति से ऊपर की शक्ति कुछ पीछे हटी तथा उसने मनुष्यों के कारोबार में दखल देना बंद किया।

स्कूलों की स्थापना हुई, बच्चों को शिक्षा दी गई, पुस्तकें छापी गई और विचारकों की वृद्धि हुई। दिन-प्रतिदिन प्रकृति से परे की किसी शक्ति में विश्वास घटता गया और दिन-प्रतिदिन आदमी का इस बात में विश्वास बढ़ता गया कि वह स्वयं अपना रक्षक और भाग्य-विधाता है। असभ्यता और मिथ्या-विश्वास के अंधकार में से प्रकृति का अरुणोदय हुआ। दिमाग को स्वतंत्रता की हवा लगी और आदमी अपनी शक्ति के स्वप्न देखने लगा। चारों ओर खोज, आविष्कार और साहसपूर्ण विचार दिखाई देने लगे। ईसाइयत ने विज्ञान के मित्रों को अपना शत्रु समझना आरंभ किया। सिद्धांतियों ने जंजीरों और चिंताओं का सहारा लिया-लोगों के अंग-भंग करने और उत्पीड़न के लिए।

विचार को नास्तिक और अनीश्वरवादी कहकर उनकी निंदा की गई। उन्हें शैतान के बच्चे और ईसा को बदनाम करने वाले कहा गया। मिथ्या-विश्वासियों के तमाम अज्ञान, ईर्ष्या और जलन को उत्तेजित किया गया। सभी खोज और विचार का नाश करने के लिए एकत्रित हो गया। शताब्दियों तक वह संघर्ष जारी रहा।

परा-प्राकृतिक के विश्वासियों ने कोई ऐसा अत्याचार न था, जो न किया हो, कोई ऐसा पाप न था जो न किया हो। किंतु, इस सबके बावजूद प्राकृतिक शिष्यों की संख्या बढ़ने लगी और ईसाइयत का बल घटने लगा। अब सारी समझदार दुनिया प्राकृतिक के पक्ष में है। अभी भी संघर्ष जारी ही है, परा-प्राकृतिक निरंतर हार रहा है और प्राकृतिक-पक्ष

लगातार प्रबल होता जा रहा है। कई वर्षों में विज्ञान मिथ्या-विश्वास को सर्वत्र और सम्पूर्ण रूप से परास्त कर देगा। इस प्रकार कई शताब्दियों से जीवन के संबंध में दो प्रकार के दर्शन चले आ रहे हैं। एक तृष्णा के क्षय का मार्ग-इच्छाओं के कम करने का मार्ग अपने से ऊंची किसी शक्ति पर संपूर्ण भाव से निर्भर रहने का मार्ग, दूसरा कामनाओं की उचित पूर्ति का मार्ग, इच्छाओं की वृद्धि का मार्ग तथा प्रयत्न, चतुरा, आवि कार तथा आदमी की अपनी शक्ति पर भरोसा रखने का मार्ग। डियोजेनेस, एपिकटेटस, एक सीमा तक साक्रेटीस, बुद्ध और ईसा, सभी ने पहले जीवन-दर्शन की शिक्षा दी। सभी धन और आरामपसंदी से घृणा करते थे, परन्तु कला और संगीत के शत्रु थे। वे दरिद्रता और चीथड़ों के दार्शनिक थे। उन्होंने इस लोक के दुखों और परलोक के सुखों का प्रचार किया। वे सम्पन्न, उद्योगी तथा जीवन का आनंद भोगने वालों पर नाक-भौं सिकोड़ते थे और भिखमंगों के लिए स्वर्ग में स्थान सुरक्षित रखते थे।

अब इस जीवन-दर्शन का प्रभाव घट रहा है। अब अधिकांश लोग यहां इसी जीवन में सुखी होना चाहते हैं। अधिकांश लोग भोजन चाहते हैं, निवास स्थान चाहते हैं, अच्छे वस्त्र चाहते हैं, पुस्तकें चाहते हैं, चित्र चाहते हैं, तमाम आराम और आसाइश चाहते हैं। वे दिमाग की शक्तियों का विकास करने में विश्वास रखते हैं और दिलचस्पी रखते हैं। प्रकृति की शक्तियों पर अपना अधिकार कर उन्हें अपना दास और नौकर बनाने में।

अब संसार के समझदार आदमियों ने आत्मपीड़कों की शिक्षा को, आत्मपीड़कों के दर्शन को तिलांजलि दे दी है। अब वे भूखों मरने और काय-क्लेश को सदाचार नहीं मानतें उनका विश्वास है कि सुखपूर्वक रहना ही एकमात्र कुशल है और सुखी रहने का समय अभी है, यहीं है, इसी संसार में है। वे अब प्रकृति से परे की किसी शक्ति द्वारा दिए जाने वाले दण्डों और पुरस्कारों में विश्वास नहीं करते। वे कृत्यों और उनके परिणामों में विश्वास करते हैं-बुरे कृत्यों का परिणाम बुरा और भले कृत्यों का परिणाम भला समझते हैं।

उनका विश्वास है कि आदमी को खोज करके, विचार करके यह पता लगा लेना चाहिए कि आदमी किस प्रकार रहने से सुखी रहता है और उसको उसी प्रकार रहना चाहिए। वे नहीं मानते कि भूकंपों, आंधियों, ज्वालामुखी पर्वतों और चंद्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण को आदमियों के कृत्यों से कुछ लेना-देना है। वे अब प्रकृति से परे की किसी शक्ति में विश्वास नहीं करते। वे अपने-आपको अब न किसी दैवी-राजा का गुलाम समझते हैं, न नौकर और न कृपाभाजन। वे अनुभव करते हैं कि बहुत-सी बुराइयां ज्ञान द्वारा दूर की जा सकती हैं और इसीलिए वे मस्तिष्क के विकास में विश्वास करते हैं। विद्यालय उनका गिरजा और यूनिवर्सिटी उनका महान पूजा-गृह।

इसी प्रकार संसार में कुछ समय से शासन के भी दो सिद्धांत चले आ रहे हैं-एक धार्मिक सिद्धांत और दूसरा लौकिक सिद्धांत।

राजा को सीधे परमात्मा से अधिकार मिलता थां लोगों का काम था राजाज्ञा का पालन करना। पण्डे-पुरोहितों के जो मत थे, वे भी उन्हें परमात्मा से प्राप्त थे। लोगों का काम था उनमें विश्वास करना।

धार्मिक सरकारें, अब कुछ-कुछ अप्रिय होती जा रही हैं। इंग्लैंड में पार्लियामेंट ने परमात्मा का स्थान ले लिया और संयुक्त राज्य का शासन शासितों से ही शक्ति प्राप्त करता है। शायद जर्मनी का विलियम महाराज ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है, जो समझते हैं कि परमात्मा ने उसे सिंहासन पर बिठाया है और वह उसे, जर्मनी के लोगों के संतोष-असंतोष की परवाह न करके सदैव सिंहासन पर बिठाए रखेगा। इटली ने कैथोलिक परमात्मा को राजनीति से विदा कर दिया। फ्रांस फ्रांसीसियों का है और उन्हीं के द्वारा शासित होता है। रूस में भी लाखों आदमी जार और उसके समान दैवी-शासनाधि ाकार की बात को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

धार्मिक सरकारें लुप्त हो रही हैं और लौकिक सरकारें शनैः-शनैः उनका स्थान ले रही हैं। आदमी पहले की अपेक्षा बड़ा बनता जा रहा है और देवता-गण अस्पष्ट। इन दैवी सरकारों का आधार

है अधिकांश लोगों का भय और अज्ञान तथा थोड़े से लोगों की ठग-विद्या, निर्लज्जता और असत्याचरण। लौकिक सरकार न केवल कुछ किंतु बहुत लोगों की बुद्धि, ईमानदारी और साहस में से पैदा होती है।

हमने यह देख लिया है कि आदमी बिना किसी पण्डे, पुरोहित, पोथी अथवा परमात्मा की सहायता के अपने आप पर शासन कर सकता है। हमने देख लिया है कि मजहब कोई अपने में स्वतः प्रमाण वस्तु नहीं है और यह कोई अच्छी बात नहीं है कि आदमी किसी बात में बिना किसी प्रमाण के विश्वास करे। हम मानते हैं कि जो स्वयं-सिद्ध है, वह दिमाग की बनावट में एक ध्रुव-तारे की तरह है। हम जानते हैं कि स्वयं-सिद्ध से कोई इंकार नहीं करता। हम जानते हैं कि पर्याप्त प्रमाण रहने पर विश्वास करने में कोई खास अच्छाई नहीं और पर्याप्त-प्रमाण न रहने पर भी यह कहने में कि हम विश्वास करते हैं, कुछ भी अच्छाई नहीं।

सभी विश्वासी भले आदमी नहीं हुए हैं। संसार में कुछ अत्यंत निकृष्ट आदमी बड़े विश्वासी हुए हैं। जिन महानुभावों ने सुकरात को जहर का प्याला दिया, वे सब विश्वासी थे। जिन यहूदियों ने ईसा को सूली पर चढ़ाया, वे भी परमात्मा के विश्वासी और पुजारी थे। शैतान के बारे में कहा जाता है कि वह पिता (परमात्मा), पुत्र (ईसा) और पवित्र-आत्मा में विश्वास करने वाला है। इन सबका उसके आचरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बाइबल के अनुसार वह कांपता रहता है, किंतु उसमें तनिक भी सुधार नहीं होता। अंत में हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि हमें अपने पूर्वजों के धर्म की परीक्षा करने का अधिकार है। ......क्रमश

सबसे खतरनाक..' फासीवाद की सियासत में

-सचिन जैन।

अकेली नहीं होती है भीड़
भीड़ का एक राजा होता है
जो भीड़ से भी ज्यादा खतरनाक होता है
सामने न दिखाई देने वाला उसका राजा,
भीड़ अनियंत्रित नहीं होती है
भीड़ हर पल निर्देशित होती है
सबसे खतरनाक होता है
भीड़ के निर्देशक का दिखाई न देना।

भीड़ के हथियार कारखाने से नहीं आते हैं
भीड़ के हथियार बनाने के कारखाने
हमारे घरों में, हमारी बस्तियों में
हमारे पूजा स्थलों में लगाये जा चुके हैं,
भीड़ उद्देश्य हीन भी नहीं होती है
भीड़ का उद्देश्य होता है -
आजादी के विचार का कत्ल कर देना।

रोटी की विकराल भूख से
अब ज्यादा खतरनाक है
खबर के बाजार, फुटपाथ
और स्कूलों में भरपेट मिलने वाली
नफरत की खुराक,

खतरनाक वो वक्त होता है
जब सल्तनत भीड़ की
सरपरस्त हो जाती है।

कैसे लड़ेंगे जंग उस भीड़ से
जो मजहब की पनाह में पलकर
बड़ी होती है,
सच तो यह है
राजा भी दिखाई देता है
सच तो यह भी है
नियंत्रक भी दिखाई देता है
सबसे खतरनाक होता है
इन्हें देखकर अनदेखा करना।

इन्हें अपने अस्तित्व का
मानक स्वीकार कर लेना
सबसे खतरनाक होता है
भीड़ से सहज हो जाना,
सबसे खतरनाक होता है
भीड़ से बचने के लिए
भीड़ का हिस्सा बन जाना।

भारत के प्राख्यात नास्तिक

राही मासूम रज़ा

डॉ. कुंवरपाल सिंह

प्रेमचंद ने अपने जीवन को सपाट मैदान बताया था। जिसमें कोई बहुत उतार-चढ़ाव नहीं था। लेकिन राही मासूम रज़ा के जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव, जटिलताएं और अंतर्विरोध मिलते हैं। वे पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर जिले के एक ज़मींदार परिवार में पैदा हुए। पिता सैयद बशीर हुसैन आबिदी की गणना पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध वकीलों में होती थी। गंगौली बशीर साहब की जमींदारी का गांव था। ननिहाल उनकी रज़ा मुशीर हसन के यहां थी। उनके पिता ने गाजीपुर में गंगा के किनारे चौबीस कमरों का मकान बनवाया था, जिसमें तीन बड़े-बड़े आंगन थे। इस सम्पन्नता और लाड़-प्यार में राही का जीवन बीता। राही मासूम रज़ा का जन्म 1 अगस्त 1927 को हुआ था, लेकिन स्कूल के सर्टीफिकेट में उनकी जन्म तिथि 1 सितम्बर 1927 लिखी हुई है। राजकमल से प्रकाशित उनकी अधिसंख्य पुस्तकों में 1 सितम्बर ही उनकी जन्मतिथि दी गई है। इस संबंध में राही मासूम रज़ा ने स्वयं कहा था कि राजकमल वालों ने मेरी उम्र एक महीना कम कर दी है। राही मासूम रज़ा की मां का नाम नफीसा बेगम था जो इनके बचपन में ही अल्लाह को प्यारी हो गई थीं। राही ने एक स्थान पर लिखा है-'मैं तीन मांओं का बेटा हूं, नफीसा बेगम, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी और गंगा। यह 'सीन 75' (उपन्यास) अपनी तीन मांओं को भेंट करता हूं।' राही का लालन-पालन उनकी दादी ने किया था, जिन्हें वह दद्दा के नाम से पुकारते थे। आधा गांव में दद्दा का नाम बार-बार आता है। राही का पारिवारिक नाम सैदय मासूम रज़ा आबिदी था, लेकिन सैयद साहब कब विदा हो गए और कब राही में तब्दील हो गए, इसकी भी एक अलग कहानी है। 18 वर्ष की उम्र में राही जब प्रगतिशील आंदोलन का हिस्सा बने, तो आबिदी भी नाम का हिस्सा नहीं रहा। फिर वह जीवन भर राही मासूम रज़ा ही रहे। उन्हें फिर कभी सैयद और आबिदी शब्दों से मोह नहीं हुआ।

गंगौली में राही का घर दक्षिण पट्टी में शिया सैयदों में सबसे बड़ा था, जिसकी आन-बान और शान पूरे क्षेत्र में फैली हुई थी। राही चार भाइयों में दूसरे थे। बड़े भाई प्रो. मूनिस रज़ा, उनसे छोटे प्रो. मेहंदी रज़ा और सबसे छोटे अहमद रज़ा हैं। प्रो. मूनिस रज़ा आरंभ में कम्यूनिस्ट पार्टी के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गए और उन्होंने किसान और मजदूर आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद में वह दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति और समाज विज्ञान संस्थान के अध्यक्ष रहे। जुलाई, 1994 में उनका देहांत हो गया। प्रो. मेहंदी रज़ा भूगोल विज्ञान के अध्यक्ष रहे। चौथे भाई डॉ. अहमद रज़ा अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष वाशिंगटन में भारतीय विभाग के प्रभारी रहे। उनकी गणना देश के प्रमुख अर्थशास्त्रियों में होती है। पिछले दिनों उन्होंने भी अवकाश ग्रहण कर लिया है और वाशिंगटन में ही बस गए हैं। अहमद रज़ा राही के सबसे प्रिय जनों में से थे। राही मूनिस रज़ा को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। मूनिस रज़ा से उन्होंने मार्क्सवाद सीखा और कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने, लेकिन सबसे अधिक मोहब्बत हद्दन से ही करते थे। राही 1967 के आरंभ में अलीगढ़ छोड़कर मुंबई में हद्दन के पास ठहरे थे। उन बुरे दिनों में हद्दन ने उनकी हर प्रकार से सहायता की।

11 वर्ष की उम्र में राही मासूम रज़ा को टी. बी. हो गई जो उस समय असाध्य रोग होता था। राही के पिता उन्हें भुवाली ले गए, जहां उनका 5 साल तक इलाज होता रहा। 1942 में ग़ाजीपुर लौट आए और फिर पढ़ाई में जुट गए। उनके एक चचा उर्दू में शायरी करते थे। राही भी शायरी करने लगे और उन्होंने पहला अखिल भारतीय मुशायरा मऊ में पढ़ा। 'हिदुस्तान की यह सरजमीं' इस नज़्म की ख्याति के साथ-साथ राही की भी ख्याति चारों

तरफ फैलने लगी। राही की गिनती प्रगतिशील शायरों में होने लगी। इसके साथ राही राजनीतिक गतिविधियों और सांस्कृतिक आंदोलनों में भाग लेने लगे। राही बचपन से ही बहुत जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। उनमें श्रेष्ठता और उच्चता का भाव नहीं था। इसलिए उन्हें अहीर और जुलाहों के बच्चों के साथ खेलने में बहुत आनन्द आता था। उनके परिवार वाले इसका विरोध करते थे, लेकिन राही पर इसका कोई ख़ास असर नहीं होता था। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों और रोगों पर कैसे विजय पाई, वह अपने-आप में एक उदाहरण है। जानलेवा बीमारी के बीच घर में ही रखी सारी किताबें पढ़ डालीं। ग़ाजीपुर के पुस्तकालय में जो भी पुस्तकें उपलब्ध थीं, वह भी मंगाई जाने लगीं। राही उस समय केवल उर्दू भाषा जानते थे। उनका दिल बहलाने के लिए और कहानी सुनाने के लिए कल्लू कक्का रखे गए। राही ने यह स्वीकार किया है कि कल्लू कक्का न होते, तो मुझे कहानी की सही पकड़ कभी न आती। मैं उनका सदैव आभारी रहूंगा। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि राही ने जो महाभारत लिखा, उसके संस्कारों के पीछे राही द्वारा बचपन में पढ़ा महाभारत का उर्दू अनुवाद था।

बीमारी से ठीक हुए तो उनकी परंपरागत रूप में शिक्षा-दीक्षा प्रारंभ हुई। मौलवी मुनव्वर रखे। मौलवी साहब राही को कभी पसंद नहीं थे, क्योंकि उन्हें पढ़ाई सें ज्यादा पिटाई करने में मज़ा आता था। 'हम पिटाई से बचने के लिए अपना जेबख़र्च मौलवी मुनव्वर को दे देते थे। इसलिए हम लोगों का बचपन बड़ी ग़रीबी में गुज़रा और शायद यही वजह है कि ख़रीद-फ़रोख़्त की कला न मुझे, न भाई साहब (मुनीस रज़ा) को है। हम लोग झट से पैसा ख़र्च करने के आदी हैं। शायद इसलिए कि मौलवी मुनव्वर का डर अभी तक नहीं निकला है। हम डरते हैं कि पैसा ख़र्च न किया गया तो पैसा मौलवी साहब झपट लेंगे।

पढ़ाई के साथ यहां धार्मिक शिक्षा भी जारी रही। बचपन में राही बहुत धार्मिक व्यक्ति थे। धार्मिक क्रियाकलापों में वे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। लेकिन जब राही ने गाज़ीपुर और गंगोली में भूखे और अभावग्रस्त लोगों को देखा, किसान-मज़दूरों की दुर्दशा देखी तो वे द्रवित हो उठे। उनकी सारी मान्यताएं चटकने लगी। वह बेचैन रहने लगे। वे जानना चाहते थे कि इस ग़रीबी का कारण क्या है। उन्होंने कुरान शरीफ पढ़ाने वाले मौलाना वली मुहम्मद साहब से पूछा कि अल्लाह सबको रोटी देता है, उसकी नज़र में सब बराबर हैं, फिर ग़रीब क्यों भूखा मरता है और अमीर लोग क्यों ऐश करते हैं। राही ने उस दिन से दूसरी राह पकड़ी। वह ग़रीबों के बीच काम करने लगे। धीरे-धीरे उनकी हैसियत एक विद्रोही शायर की हो गई। शायरी के साथ रही स्वाध्याय भी करते थे और हाई स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की, लेकिन टी.बी. की बीमारी ने फिर हमला बोला। इस बार राही कश्मीर भेजे गए और तीन साल तक उनका इलाज़ चलता रहा।

कश्मीर में राही ने अपनी शायरी में परिवर्तन किया। अब प्रकृति भी उनकी शायरी का हिस्सा हो गई। देश की विख्यात चित्रकार किशोरी कौल के सान्निध्य और मित्रता का व्यापक प्रभाव पड़ा। वर्षों तक वे उनकी निकटतम मित्र रहीं और दोनों एक-दूसरे की रचनाओं और कृतियों से प्रभावित हुए।

स्वस्थ होकर राही फिर गाज़ीपुर आ गए। अब शायरी, राजनीतिक गतिविधियां और अध्ययन तीनों साथ-साथ चलते रहे। राही के व्यक्तित्व को समझने के लिए एक घटना बहुत महत्वपूर्ण है। राही उन दिनों पढ़ाई के साथ-साथ कम्युनिस्ट पार्टी में भी काम किया करते थे। कम्युनिस्ट पार्टी ने तय किया कि ग़ाजीपुर नगरपालिका के अध्यक्ष पद के लिए कामरेड पब्बर राम को खड़ा किया जाए। पब्बर राम भूमिहीन मज़दूर थे। राही और मूनिस रज़ा दोनों कामरेड पब्बर राम का कार्य करने लगे। उसी समय कांग्रेस ने राही के पिता श्री बशीर हसन आबिदी को अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया। दोनों भाइयों के सामने बड़ा धर्मसंकट पैदा हो गया। दोनों मिलकर अपने पिता के पास गए और उन्होंने समझाया कि वे चुनाव में खड़े न हों। बशीर साहब ने कहा, मैं

1930 का कांग्रेसी हूं। कांग्रेस का अनुशासित सिपाही हूं। पार्टी ने जो आज्ञा दी है, उसका मैं उल्लंघन नहीं करूंगा। राही ने कहा, हमारी भी मजबूरी है कि हम आपके ख़िलाफ पब्बर राम को चुनाव लड़ाएंगे। हो सकता है आप चुनाव हार जाएं। राही घर से अपना सामान उठाकर पार्टी आफिस में चले गए और कामरेड पब्बर राम को जिताने में जुट गए। जब चुनाव परिणाम आए तो सब स्तब्ध रह गए कि एक भूमिहीन मज़दूर जिले के सबसे प्रसिद्ध वकील को भारी बहुत से पराजित करने में समर्थ रहा। राही अपने पिता की बहुत इज्ज़त करते थे। बाप-बेटों में बहुत मुहब्बत थी। जो जीवनपर्यन्त रही, लेकिन सिद्धांत का मामला था, जहां बाप-बेटे की मुहब्बत भी सिद्धांतों के आगे हार गई।

परिवार वालों ने राही का 18 वर्ष की आयु में फ़ैजावाद की महरबानों के साथ विवाह कर दिया। राही के साथ इनका किसी तरह का कोई समय नहीं था। राही इनसे कभी नहीं पटी और 3 साल बाद दोनों परिवारों ने परस्पर सहमति से तलाक दिलवा दिया। राही ने दूसरा विवाह श्रीमती नयर जहां के साथ 1965 के अंत में किया। श्रीमती नयर शादीशुदा थी।

राही की एकमात्र पुत्री मरियम रज़ा अपने पति मज़ाज मूनिस के साथ अमरीका में रहती हैं। बेटी के पति प्रसिद्ध न्यूरो सर्जन हैं और मरियम एक विश्वविद्यालय में काम करती हैं। राही की पत्नी श्रीमती नयर जहां अधिकांश समय अलीगढ़ में रहती हैं।

राही की ख्याति एक प्रसिद्ध शायर और संस्कृतिकर्मी की थी। उनमें एक संगठनकर्ता की, और नए क्षितिजों के पार देखने की अपार क्षमता थी। इसमें एक ओर उनकी लोकप्रियता बढ़ी, दूसरी ओर उनसे ईर्ष्या करने वालों की संख्या भी बढ़ी। 1963 में अपना शोध-प्रबंध तिलिस्मे होशरुबा में भारतीय संस्कृति और सभ्यता समाप्त किया। उसके तुरंत बाद उन्हें अलीगढ़ विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग में अस्थायी प्राध्यापक की नौकरी मिल गई। वे एक लोकप्रिय प्राध्यापक सिद्ध हुए। उन्होंने पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण परिवर्तन कराए, एक सौ नंबर का प्रश्नपत्र हिन्दी साहित्य का रखा, जिसे वह स्वयं पढ़ाते थे। एक साल में यह पाठ्यक्रम बहुत लोकप्रिय हुआ। इसी तरह के प्रयास हिन्दी में भी हुए कि उर्दू के महत्वपूर्ण रचनाकारों को पढ़ाया जाए। लेकिन उर्दू में राही के जाने के बाद यह कोर्स आगे नहीं चल सका।

1965 में राही के विद्यार्थियों को एक महत्वपूर्ण हथियार मिल गया। नयर जहां से विवाह क्या किया, अलीगढ़ में तूफान आ गया। नयर जहां कर्नल युनुस की पत्नी थीं, जो नवाब रामपुर के साले थे। सुप्रसिद्ध इतिहासकार और कला संकाय के तत्कालीन डीन प्रो. नूरुल हसन नवाब रामपुर के दामाद थे। तत्कालीन कुलपति अली यावर जंग भी नवाब रामपुर के निकट संबंधी थे। पहले तो सभी ने राही को समझाने की कोशिश की कि नयर जहां से शादी मत कर, वरना हानि होगी। आप अस्थायी अध्यापक हैं, नौकरी जा सकती है। राही ने कहा कि जान भी चली जाए, तो भी कोई बात नहीं, नौकरी तो बहुत छोटी बात है। राही बेहद संवेदनशील स्वाभिमानी, जिद्दी और आन-बान के व्यक्ति थे। वह अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए कुछ भी कर सकते थें जो लोग राही के पास बैठते थे, वे मुंह चुराने लगे। उन दिनों प्रो. अली अहमद सुरूर उर्दू विभाग के अध्यक्ष थे। उनकी अध्यक्षता में चयन समिति आयोजित की गई। सर्वसम्मति से चयन समिति ने निर्णय लिया कि राही को साहित्य की समझ नहीं है, इसलिए उनकी नियुक्ति नहीं की जा सकती। विश्वविद्यालय के इतिहास में ये सबसे बड़ा मज़ाक था।

राही ने न्याय पाने के लिए बहुत हाथ-पैर मारे और न्यायालय का दरवाजा भी खटखटाया। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अलीगढ़ उनके लिए बैगाना हो गया। तब तक 'आधा गांव' छप चुका था। राही को पैसा तो नहीं, लेकिन ख्याति ज़रूर मिल रही थी। राही ने बहुत प्रयास किया कि दिल्ली अथवा लखनऊ में कहीं प्राध्यापक हो जाएं। दिल्ली में आकाशवाणी में जरूर नौकरी मिली जो राही ने स्वीकार नहीं की। प्रसिद्ध निर्माता-निर्देशक आर.

चंद्रा अलीगढ़ के थे और राही से परिचित थे। उन्होंने मुंबई में भाग्य आजमाने की सलाह दी और मदद का आश्वासन भी दिया। हारकर राही 1967 के आरंभ में मुंबई चले गए। वहां उनके अनुभव कटु रहे। कृश्न चंदर के अतिरिक्त उन्हें सब अपना विरोधी समझने लगे। जो शायर थे, वे कहने लगे, तुम शायरी नहीं, डायलॉग लिखो और संवाद लेखकों ने शायरी के क्षेत्र में भाग्य आजमाने की सलाह दी। केवल हिन्दी के दो साहित्यकारों ने राही की बहुत मदद की। वे थे सारिका के संपादक कमलेश्वर और धर्मयुग के संपादक धर्मवीर भारती। राही बेहद जीवन के व्यक्ति थे। संघर्ष और मुसीबतें जीवन भर उनके साथ रहीं। 4 साल की कड़ी मेहनत रंग लाई और उनकी फिल्में सफल होने लगीं। 5 साल के संघर्ष के बाद उनकी गिनती फिल्मों के सफलतम संवाद लेखकों में होने लगी। संघर्ष के इन्हीं दुर्दिनों में उनके तीन उपन्यास 'टोपी शुक्ला' (1968), 'हिम्मत जौनपुरी' (1969) और 'ओस की बूंद' (1970) प्रकाशित हुए। इन सबकी समस्या सांप्रदायिकता, सामाजिक विघटन और जातिवाद है। टोपी शुक्ला 'आधा गांव' का पेंगुइन ने पहला अंग्रेजी अनुवाद 1995 में छापा था। अब उसका दूसरा संस्करण पिछले दिनों प्रकाशित होकर आया है। इसके साथ ही मराठी और बाड्ला अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं 38 साल बाद आधा गांव का उर्दू संस्करण भी अक्तूबर, 2003 में प्रकाशित हो गया। राही की इच्छानुसार उनके गांव गंगोली में इसका विमोचन हुआ। आधा गांव के विमोचन समारोह में पूरा गांव उपस्थित था।

1972 में राही की रोज़ी-रोटी की समस्या हल हो गई। उनकी फिल्में चलने लगीं। 1974 में वे सफल संवाद और पटकथा लेखक के रूप में विख्यात हो गए, लेकिन राही ने अपना रचनाकर्म नहीं छोड़ा। राही कहते थे, 'फिल्म तो मेरी रोज़ी-रोटी है और साहित्य मेरा ओढ़ना-बिछौना है। मैं साहित्य सृजन के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकता हूँ।' यह बहुत अद्‌भुत बात है कि फिल्म और टेलीविजन की व्यावसायिकता से राही ने साहित्य को बिल्कुल मुक्त रखा। अपने व्यस्ततम जीवन में से राही साहित्य के लिए समय निकाल लेते थे। उपन्यास लेखन के अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर सामाजिक, राजनीतिक विषयों पर लिखते रहते थे और साहित्यिक बहसों में हिस्सेदारी करते रहते थे। इसके साथ ही फिल्म के समाज और साहित्य से क्या रिश्तें हो, इस पर भी वह तमाम पत्रिकाओं धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, माधुरी और सारिका आदि में निरंतर लिखते रहते थे। राही की मृत्यु के बाद के सारे लेख तीन पुस्तकों में प्रकाशित हुए, जिनके नाम हैं 'लगता है बेकार गए हम' (1999), 'खुदा हाफिज कहने का मोड़' (1999) तथा 'सिनेमा और संस्कृति' (2000)। ये तीनों पुस्तकें पाठकों में बेहद लोकप्रिय हुई हैं। इनमें राही ने सांप्रदायिकता, भ्रष्ट राजनीति, धर्म का व्यापार तथा साहित्यिक और सामाजिक विषयों पर बेबाक टिप्पणियां दल हो अथवा मुस्लिम लीग और जमात-ए-इस्लामी के ठेकेदार हों। उनकी पैनी कलम ने सबकी ख़बर ली है। राही मुंबई में रहकर भी शिवसेना और बाल ठाकरे पर तीखी टिप्पणियां करते रहे। जल में रहकर मगर से वैर करके भी उनका बाल बांगा नहीं हुआ। अभिव्यक्ति के सारे खतरे राही ने उठाए और अपने समकालीन बुद्धिजीवियों का आह्‌वान किया कि बुजदिली दिखाने का समय नहीं है। जनता आपकी ओर देख रही है, वह सिद्धांत में नहीं, व्यवहार में भी आपकी सार्थक भूमिका देखना चाहती है। राही को समझने के लिए एक प्रसंग महत्वपूर्ण होगा। 1975-76 में इंदिराजी का आपात्‌काल दुखद सपना था। अधिसंख्य लेखक और बुद्धिजीवी कोनों में दुबक कर बैठ गए थे। मैडम का हर क्षत्रप अपने को तानाशाह से कम नहीं समझता था। उस समय के सूचना प्रसारण मंत्री थे विद्याचरण शुक्ल और उनके सहयोगी थे ओम मेहता। फिल्मवालों और पत्रकारों दोनों को रास्ते पर लाने का दायित्व इन लोगों को सौंपा गया था। वे समय-समय पर बैठक करके फिल्म वालों को उपदेश देते थे और सही राह पर चलने की सलाह भी। एक दिन मंत्री महोदय ने फिल्मी लेखकों की बैठक बुलाई और सत्ता के प्रति उनके दायित्व

समझाए। राही बहुत देकर तक सुनते रहे, जब उनके बर्दाश्त के बाहर हुआ तो बैठक से वाकआउट कर गए। किसी की समझ में कुछ न आया। सभी हतप्रभ थे और समझ रहे थे कि राही अब तो जेल जाएंगे। राही भी यही सोचते थे। उन्होंने अपने मित्रों से कहा कि मेरी बीवी-बच्चों का ख्याल रखना। राही ने लिखा है, मैं उस रात सो नहीं सका और रात भर पुलिस की प्रतीक्षा करता रहा।

राही मासूम रज़ा का जीवन मानवीय सत्य की स्थापना करने के प्रयास में गुज़रा। राही की दृष्टि में यह मानवीय सत्य, मनुष्य को धर्म, जाति, संप्रदाय तथा वर्ग विभेद के आधार पर विभाजित होने की स्वीकृति नहीं प्रदान करता। आज समाज में चारों ओर जो सांप्रदायिक वैमनस्य व्याप्त है, राही ने हमेशा ही उसका विरोध किया है। राही आरंभ से ही भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता के पक्षधर रहें राही का आक्रोश उन सभी राजनीतिक स्वार्थो पर कहर ढाता है जो समाज को धर्म के नाम पर, सम्प्रदाय के नाम पर अथवा क्षेत्रीयता और भाषा के नाम पर विभाजित करते हैं। **राही की दृष्टि में ये कठमुल्ले अपने स्वार्थों के लिए समाज में अनेकानेक विद्रूपताएं फैलाते हैं। ये पूंजीवादी व सामंतवादी अपनी स्वयं की जीवनी-शक्ति, अपने आदर्श, अपनी संस्कृति आदि को खो चुके हैं, इनका न तो स्वयं के ही जीवन का कोई लक्ष्य है और न ही यह समाज का मार्गदर्शन करने के योग्य हैं।** राही को अपने राष्ट्र, अपनी धरोहर, अपनी संस्कृति से अगाध प्रेम था और राही की आत्मा त्रस्त थी चारों ओर व्याप्त विद्रूपताओं से। सन् 1966 में राही का पहला उपन्यास 'आधा गांव' प्रकाशित हुआ। यों तो आधा गांव राही के अपने गांव गंगौली तथा राही के स्वयं के परिवेश की कथा है, परंतु व्यापक स्तर पर आधा गांव सम्पूर्ण विश्व-साहित्य में सम्प्रदायवाद की त्रासदी को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाला वह उपन्यास है, जिसमें इस शताब्दी की महत्वपूर्ण घटना भारत-विभाजन की त्रासदी को चित्रित किया गया है। भारत में यह विभाजन धर्म के नाम पर हुआ तथा 'पाकिस्तान' को इस्लामी राष्ट्र की संज्ञा दी गई, परंतु जिन धार्मिक कठमुल्लों ने राष्ट्रीयता को धर्म के साथ जोड़ने का प्रयास किया, वे यह नहीं जानते थे कि भारत में रहने वाले मुसलमान इस विभाजन के पक्षधर नहीं थे। वे यह नहीं जानते थे। राही का मानना था कि 'इस्लाम' एक धर्म है, राष्ट्र और धर्म को एक समझना इतिहास विरोधी चेतना है तथा इसके आधार पर जो भी राजनीति की जाएगी, उसके सदैव दुष्परिणाम ही सामने आएंगे।आध ा गांव हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में से एक हे, जिसमें राही ने मुस्लिम समाज की मानसिकता, मनोविज्ञान को समझना तथा समझाना चाहा है। राही यह बात सबके सम्मुख रखने का प्रयास करते हैं कि एक मुसलमान भी अपनी मिट्टी से उतना ही प्रेम करता है, जितना कि एक हिन्दू, परंतु राही कहते हैं कि एक मुसलमान के राष्ट्रीय भाव को लोग शक की निगाहों से क्यों देखते हैं? एक मुसलमान को भारतीय मुसलमान क्यों कहा जाता है? एक हिन्दू को भारतीय हिन्दू क्यों नहीं, जबकि दोनों के जन्म का इतिहास और दोनों के पुरखों का इतिहास समान है।

आधा गांव के माध्यम से राही ने उस मुस्लिम दृष्टिकोण, मुस्लिम राष्ट्रीयता को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है जो भारतीय मात्र होने का ही अधिकारी है।आधा गांव मूलतः फारसी लिपि में लिखा गया था, जिसका बाद में देवनागरी में लिप्यंतरण हुआ। आधा गांव में जमींदारी व्यवस्था तथा उसका टूटना और उसके पश्चात् जमींदारों और शिल्पी वर्ग की क्या स्थिति हुई, इन सबका यथार्थ चित्रण है। आधा गांव और रागदरबारी एक ही साथ 1966 में प्रकाशित हुए। 1968 में दोनों ही उपन्यास 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' के दावेदार हुए, परंतु पुरस्कार रागदरबारी को मिला। इस संदर्भ में राही मासूम रज़ा लिखते हैं-'मैंने किसी पुरस्कार के लिए उपन्यास नहीं लिखा। यदि मिल जाता तो कोई बात नहीं, 'नहीं मिला तो मुझे कोई अफसोस नहीं है। सुना है यार, प्रेमचंद, मुक्तिबोध और निराला को भी कोई पुरस्कार नहीं मिला था।'

इस उपन्यास के साथ अनुचित व्यवहार एक बार नहीं हुआ। आगे चलकर सन् 1972 में इसे

जोधपुर विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में अश्लीलता का आरोप लगाकर हटा दिया गया। राही ने जहां परिस्थितियों एवं वातावरण के सृजन में, लोकजीवन से परिचित कराने के प्रयास में, आम तौर पर लोक में प्रचलित गालियों का जो प्रयोग उपन्यास में सहजता और प्रामाणिकता लाने के लिए किया था, वहीं लोगों ने इसे अनुचित ठहराया, उन्होंने वास्तविकता की तरह तक पहुंचने का प्रयास ही नहीं किया। मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद में भी एमए के पाठ्यक्रम से आधा गांव इसी आरोप के तहत हटा दिया गया।

राही को दुख है कि आज भारत विभिन्न छोटी-छोटी इकाइयों में विभक्त है, कोई पंजाबी है, कोई गुजराती, कोई बंगाली है, कोई मराठी, लेकिन हिन्दुस्तानी कोई नहीं। राही का साहित्य इसी हिन्दुस्तान की तलाश है, हिन्दुस्तान की कल्पना है, जिसमें राही हिन्दू-मुसलमान अथवा गुजराती-मराठी का भेद नहीं करते हैं।

आधा गांव के अतिरिक्त राही ने दिल एक सादा कागज, टोपी शुक्ला, ओस की बूंद, सीन 75, कटरा बी आर्जू, हिम्मत जौनपुरी और असंतोष के दिन उपन्यास लिखे।

राही ने हिन्दी में कई वर्षों तक लेखन किया, परंतु कविता उर्दू में ही लिखते थे। जब उन्होंने हिन्दी लेखन के क्षेत्र में कदम रखा, उससे पहले उनके सात कविता संग्रह आए, जिन्होंने यह साबित कर दिखाया कि राही सिर्फ अच्छे उपन्यासकार ही नहीं, वरन् अच्छे कवि भी हैं।

हिन्दी में उनका पहला संग्रह 'मैं एक फेरीवाला' 1976 में प्रकाशित हुआ। उनके विभिन्न उर्दू कविता-संग्रहों में संकलित कविताओं का अनुवाद इस संग्रह में प्रस्तुत है।

राही ने सन् 1857 की क्रांति पर उर्दू में महाकाव्य लिखा था जो हिन्दी में 'क्रांति कथा' के नाम से प्रकाशित हुआ। 1857 में प्रत्येक व्यक्ति अंग्रेजी दासता की जंजीरों को तोड़ देना चाहता था। पुरुषों के साथ-साथ महिलाएं भी सामंती जकड़न व गुलामी से मुक्ति चाहती थीं। उस समय यदि वह क्रांति सफल हो जाती तो आज भारत की तस्वीर दूसरी होती, इस परिकल्पना को राही ने क्रांतिकथा में व्यक्त किया है।

राही मासूम रजा उन साहित्यकारों में से थे, जिन्होंने संस्कृति से जुड़कर स्वयं को एक सच्चे राष्ट्रभक्त के रूप में प्रस्तुत किया था। राही का पूरा जीवन समकालीन राजनीतिक-सामाजिक जीवन की विसंगतियों को और उसकी तमाम विडंबनाओं को सामाजिक पटल पर से उखाड़ फैंकने के प्रयास में गुज़रा। राही भारत के बेटे थे और अपने पूरे जीवन में भारत को अपनेपन की तलाश करते रहे। जिस समय राही का जन्म हुआ, देश में चारों ओर सांप्रदायिकता की आग धधक रही थी। देश में सभी धर्म-हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई-अपनी बहुलता, अपनी अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे।

राही बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने जिस भी क्षेत्र में जोर आजमाया, उसमें सदैव सफलता ही पाई, परंतु राही पर नशा नहीं छाया। ऐसा नहीं कि उन्होंने जीवन में जो चाहा, उन्हें मिला, लेकिन उनकी प्रतिभा और प्रयास ने सदैव ही हर कठिनाई पर विजय पा ली। राही राजनीतिक षड्यंत्रों के भी शिकार हुए, किंतु ये षड्यंत्र कभी भी उनकी जीवनदृष्टि को प्रभावित नहीं कर पाए। राही धर्म को संकीर्ण अर्थ में देखने वाले कट्टरपंथियों के हमेशा विरोधी रहे, चाहे वह बाल ठाकरे हों, आडवाणी हों, सैयद शहाबुद्दीन हों, शाही इमाम हों या बनातवाला। राही की दृष्टि में राम जन्मभूमि तथा बाबरी मस्जिद विवाद के पीछे छिपी सांप्रदायिकता इन्हीं कट्टरपंथियों की अंधनीति का परिणाम है। धर्म और राजनीति के विरुद्ध राही में गहरा आक्रोश देखने को मिलता है। राही का मानना था-'आधुनिक भारत में यह तय करना मुश्किल है कि धर्म ज्यादा बड़ा व्यापार है या राजनीति, लेकिन दोनों व्यापारों में पैसा स्मगलिंग से ज्यादा है, इसलिए जिसे देखिए वही राजनीति और धर्म का धंधा कर रहा है।

★★★★★

भाग्य

आर.पी. गांधी
मो. 9315446140

भाग्य या तकदीर को लेकर हर धर्म के अपने विचार हैं। इस्लाम का यह मानना है कि रूह या आत्मा मरने वाले के साथ कब्र में रहती है। रोज-ए कयामत के दिन हूरों के आवाज देने पर मुर्दे जिंदा हो जाएंगे। उस दिन उनके कर्मों के फल के मुताबिक उनको सज़ा या फल मिलेगा। एक आदमी पांच हजार साल पहले मरा है और पांच हजार साल से कब्र मे पड़ा है। दूसरा आदमीजो कयामत आने से एक सप्ताह पहले मरा है। यदि दोनों के कर्म एक जैसे हैं, तो दोनों को एक जैसा फल मिलेगा। यह कैसा इन्साफ है? एक व्यक्ति पांच हजार साल तक कब्र में लेटा रहा और दूसरा केवल एक सप्ताह और दोनों एक जैसे फल के हकदार हो गए। इस्लाम का यह मानना है कि शैतान के बकहावे में आकर बंदे ने वर्जित फल को खा लियां इस पर अल्लाह ने बंदे को शाप दिया, जिसको इंसान पीढ़ी दर पीढ़ी भुगत रहा है। ये सब काल्पनिक गाथाएं हैं। अल्लाह ने उस फल को पैदा ही क्यों किया, जिसके लिए उसको खाने से मना करना पड़ा। मान लिया कि गुनाह तो इन्सान के किसी पूर्वज ने किया तो उसकी सजा उसके वंशजों को क्यों? ईसाई, यहूदी भी कुछ ऐसा ही मानते हैं।

हिन्दू धर्म और सिक्ख धर्म आवागमन में विश्वास करते हैं अर्थात् मनुष्य का पहले भी जीवन था और मृत्यु उपरांत भी एक नया जीवन होगा। हिन्दू धर्म की मान्यता अनुसार हमारे अंदर एक आत्मा है। यह आत्मा, अजर है, अमर है। इसका नाश नहीं होता। जैसे कोई मनुष्य कपड़े बदलता है, ऐसे ही आत्मा शरीर बदल लेती है। महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण, अर्जुन को गीता का ज्ञान देते हुए कहते हैं 'हे अर्जुन धर्म युद्ध करो, कायर मत बनो। जिन लोगों को तुम अपने सम्बन्धी मान रहे हो, पिछले जन्म में ये तुम्हारे शत्रु भी हो सकते हैं। धर्मयुद्ध ही क्षत्रिय का मुख्य धर्म हैं तुम्हारे तो दोनों हाथों में लड्डू हैं। अगर जीतते हो, तो राज्य और ऐश्वर्य को प्राप्त करोगे। अगर हारते हो तो धर्मयुद्ध करने के कारण बैकुंठ जाओगे।' जबकि अर्जुन का यह कहना था कि मैं सगे-संबंधियों का खून नहीं बहाऊंगा। मैं भीख मांग कर जीवन यापन कर लूंगा, लेकिन अर्जुन श्रीकृष्ण के उपदेश से प्रभावित होकर युद्ध के लिए तैयार हो गया। परिणामस्वरूप भयंकर युद्ध हुआ और दो कुलों का सर्वनाश हुआ। इस संदर्भ में कुछ प्रश्न पैदा होते हैं। जब मरने पर शरीर को जला दिया जाता है तो फिर सज़ा या पुरस्कार किसको दिया जाता है? आत्मा को अजर, अमर बताया गया है और अविनाशी है, तो फिर सज़ा या पुरस्कार किसको? हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार जब बच्चा पैदा होता है तो विधाता उसकी तकदीर लिख देता है, जिसमें उसके अच्छे व बुरे कर्म शामिल होते हैं। प्रश्न यह पैदा होता है कि जब कर्म पहले से ही निर्धारित है तो दोषी तो कर्म लिखने वाला हुआ न कि इन्सान। अतः इस मान्यता के अनुसार मनुष्य को दोषी नहीं होना चाहिए। फिर इन्सान को सज़ा क्यां। पशु-पक्षियों में अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं होता। वे अपनी प्रकृति के अनुसार जीवन जीते हैं। शेर जैसा जीवन दूसरे जीव को मारकर अपना भोजन प्राप्त करता है। इसके जीवन में श्रेष्ठ कार्य अथवा परोपकार जैसी कोई चीज़ होती ही नहीं। हिन्दू धर्म की मान्यता अनुसार, क्योंकि वह जीवन पर्यन्त दूसरे प्राणियों को मारता है, तो उसे नरक की प्राप्ति होनी चाहिए। इस प्रकार वह मानव योनि में अने का पात्र ही नहीं होगा, जबकि संसार में 84 लाख योनियों की बात की जाती है। इस प्रकार इन मान्यताओं पर संदेह होना स्वाभाविक है।

जन्म-मरण से मुक्ति पाने को मोक्ष की संज्ञा दी गई और इसकी प्राप्ति के लिए शुभ कर्मों का किया जाना आवश्यक है। दूसरी ओर यह भी कहा जाता है कि मानव जीवन बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है।

ये दो विरोधाभासी बाते हैं। एक ओर जन्म-मरण से छुटकारा और दूसरी ओर मानव जीवन को प्राप्त करने की अभिलाषा। अतः इन मान्यताओं में आपस में अन्तर्विरोध है। इसी मोक्ष के चक्कर में दिल्ली में एक ही परिवार के 11 सदस्यों ने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। इस प्रकार इन अटपटी मान्यताओं ने मानव को बहुत हानि पहुंचाई है। जर्मनी एक महान चिंतक कार्ल्स मार्क्स ने धर्म को एक अफीम का नाम दिया है। इस धर्म के नशे ने अनेकों बार मानवता का बहुत नरसंहार किया है। कार्ल्स मार्क्स का मानना है कि निर्धनता भाग्य से नहीं आती, बल्कि व्यवस्था की देन है और व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन करके समाज से किसी भी बुराई को मिटाया जा सकता है। कई छोटे-छोटे देश जिन्होंने भारत के बाद में स्वतंत्रता प्राप्त की, वे अपनी मेहनत के बल पर बहुत आगे बढ़ गए हैं। चीन भी भारत के बाद स्वतंत्र हुआ, लेकिन वह विश्व की बड़ी शक्तियों में शामिल हो गया है। भाग्य के कारण ही भारत उतनी उन्नति नहीं कर पाया, जितनी इसको प्रगति करनी चाहिए थी। कारण स्पष्ट है कि भारत के अधिकतर लोग भाग्यवादी हैं और वे भाग्य के भरोसे ही बैठे रहते हैं। ईश्वरवादी होने के कारण अपने कुछ काम ईश्वर के भरोसे छोड़ देते हैं। क्रोएशिया एक छोटा सा देशहै, जो फुटबाल ओलम्पिक में फाइनल खेल चुका है। इस देश की आजादी लगभग 50 लाख है, जबकि हमारे देश की आबादी लगभग 130 करोड़ है और भी अनेक छोटे-छोटे देश हैं, जिन्होंने विकास के कीर्तिमान स्थापित किए हैं। जापान भी ऐसे देशों में से एक है। प्राकृतिक आपदाओं के बावजूद इस देश ने रिकार्ड उन्नति की है। भारत में अनेक प्राकृतिक संस्थानों की बहुलता होने के कावबूद भी आशातीत विकास नहीं कर पाया है। इस का मूल कारण यहां के लोगों की सोच है। यदि नागरिकों की भाग्यवादी सोच को बदल कर संघर्षवादी सोच में बदल दिया जाए, तो भारत भी विश्व के अग्रणी देशो की श्रेणी में खड़ा होगा। आवश्यकता है तो केवल रूढ़िवादी सोच से निकल कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने की।

पृष्ठ 17 का शेष (मानव ज्ञान का चरित्र)

के तालमेल, ईमानदारी, विनम्रता, धैर्य तथा हिम्मत की माँग करता है। इसके इतर कोई भी रास्ता हमें अहंवाद, कठमुल्लावाद तथा अनुभववाद के गड्ढे में ले जाता है। यह कठोर अध्ययन की माँग करता है। हर वस्तु में निहित अन्तरविरोध को जानना होता है। अन्तर्विरोध को विशिष्ट तथा सार्वभौमिक रूप में पहचानने की जरूरत होती है। सबसे पहले विशिष्ट का अध्ययन करते हुए हमें वस्तु-विशेष के अन्तर्विरोध के दोनों पहलू को समझना होता है। वस्तु के विकास की प्रक्रिया में मौजूद अन्तर्विरोध के दोनों पहलुओं को चिनहित करना होता है। वस्तु के विकास की प्रक्रिया की मंजिघ्ल के अन्तर्विरोध को चिनहित करना होता है तथा मंजिल के अन्तर्विरोध के दोनों पहलुओं को समझना होता है। यहां हम किसी अकादमिक या किताबी ज्ञान की बात नहीं कर रहे हैं। न ही हम यहां महज बेहद विरोधी विज्ञान की शाखाओं की बात कर रहे हैं। हम यहां आमतौर पर मानव ज्ञान की बात कर रहे हैं। एक समाज वैज्ञानिक के तौर पर हमें समाज के भी मूल अन्तर्विरोध ाों की पहचान करनी चाहिए, उनके दोनों पहलुओं की पहचान करनी चाहिए और उनके आधार पर समाज के बारे में अपने ज्ञान को विकसित करना चाहिए। इस प्रक्रिया से विकसित ज्ञान ही वापस पलटकर समाज को बदल सकता है। आज मुनाफे और लूट पर टिके पूंजीवादी समाज को भी अगर बदलकर किसी नये समतामूलक, अन्यायमुक्त समाज की रचना करनी है, तो हमें मौजूदा समाज का एक द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी अध्ययन करना होगा। चूँकि ज्ञान व्यवहार से पैदा होता है, इसलिए हमें व्यवहार में उतरना होगा। आज के समाज के बारे में भी हम सिर्फ पुस्तकालयों में बैठकर और किताबों का अध्ययन करके नहीं जान सकते। हमें सामाजिक व्यवहार में प्रत्यक्षतः उतरना होगा। ◻

गौमूत्र और वैज्ञानिक सोच

-मेघ राज मित्र
मो. 9888787440

राम लाल मेरा मित्र था। हम दोनों एक ही स्कूल में पढाते थे। सुबह ही स्कूल में आकर उसका पहला कार्य फूल तोडना और सूर्य देवता को भेंट करना होता था। बगीचे में बडी परिश्रम से उगाये और खिले हुए फूल सभी को खुशी देते थे। जब वह फूल तोड़ता तो हमें बहुत दुख होता। कई बार बातों-बातों में हम उसको हमारे इस दूख का अहसास करा देते थे। परन्तु उसने कभी गुस्सा नहीं किया था।

वह स्कूल आने से पहले गौशाला में जाता और गाय के ताजा दुहे हुए दूध का नाश्ता करता। हमने उसे पूछा, ''राम लाल आप 50 बर्ष की आयु में इतना दूध कैसे हजम कर लेते हो?'' तो वो कहता कि ''मैं हर दिन बीस किलोमीटर साईकिल चलाता हूं।'' हमें उसकी यह बात तो ठीक लगती कि साईकिल चलाने से दूध हजम हो जाता होगा लेकिन उस द्वारा बिना गर्म किए दूध पीना हमारी संतुष्टि नहीं करवाता था।

समय बीतता गया। एक दिन राम लाल कहने लगा, ''बादाम बहुत गर्म होते हैं।'' मैं खाने वाली वस्तुओं में कैलोरीज़ के कम अथवा ज्यादा होने में विश्वास रखता था। बादाम गर्म होने वाली बात मुझे हजम नहीं हो रही थी। मैने उसे कहा कि ''बता मैं तेरे को कितने बादाम खाकर दिखाऊं।'' वह कहने लगा कि आप बीस बादाम भी नहीं खा सकते। हमारी सौ रुपये की शर्त लग गई। उसने दुकान से बादाम मंगवा लिए। वह एक-एक बादाम मेरे हाथ पर रखता गया और मैं खाता गया। इस तरह मैने उस दिन दो बार 20-20 बादाम खाकर उस से दो सौ रुपये जीत लिए।

अब उसको अपने हारे हुए दो सौ रुपये चुभते रहते थे। वह दूसरे दिन कहने लगा कि ''अगर आप मेरे साथ सौ रुपये की शर्त लगा सकते हो तो मैं आप को गौमूत्र पी कर दिखा सकता हूं। मैं यह नजारा देखने के लिए तैयार हो गया। गांव संघेड़ा की गौशाला से एक बर्तन में गौमूत्र लाया गया। राम लाल ने उस बरतन से एक गिलास भरा और पी गया। उसने शर्त के सौ रुपये मुझसे वापस ले लिए। तभी वहां खड़ा एक अन्य शिक्षक कहने लगा ''आप की जेब में हमारे सौ रुपये और रह गए हैं। वो भी हमने वापस करवाने हैं।'' मैंने कहा ''एक गिलास तू पी ले।'' तो उसी समय उसने गौमूत्र का गिलास भरा और पी लिया।

इस बात को बीस बर्ष से ज्यादा समय हो गया है। एक दिन मुझे मानसा से फोन आया। डा. सुरेन्द्र कहने लगे कि मानसा में किसी पार्टी ने छबील लगाई हुई है। वह गौमूत्र लोगों को मुफ़्त में पिला रहे हैं। वह कहते हैं, गाय का मूत्र अगर रोजाना पी लिया जाए तो कैंसर, मधुमेह, गुर्दे फेल हो जाना, टीबी और दिल के रोग जैसे कभी होंगे ही नहीं। अगर किसी को पहले से कोई बिमारी है तो वह हमेशा के लिए ठीक हो जाएगी। इस बात से मुझे 10-12 साल पहले बिछुडे हुए मेरे दोस्त राम लाल का चेहरा मेरे सामने आ गया।

राम लाल की गौमूत्र पीने की बात कई माह तक चलती रही। मुझे पता था कि किसी भी प्राणी का मूत्र एक तरह का उसका रक्त ही होता है। हमारे गुर्दे रक्त को बार-बार छान कर एक लिटर पेशाब अलग करते हैं। मूत्र में उन सभी पदार्थों की कुछ न कुछ मात्रा रह जाती है जो रक्त में होती है। मेरे देश के लोग गौमूत्र को पवित्र मानते हैं लेकिन गाय के मांस को खाना पाप समझते हैं। क्यों? हमारे देश में गौमूत्र की मान्यता इस करके है क्योकि हमारे देश के लोग गाय को माता कह कर पूजते हैं। अपितु आज के मशीनी युग में गाए की मान्यता को कम कर दिया गया हैं।

आज हमारे देश में गौमूत्र का हजारों वस्तुओं में प्रयोग किया जा रहा है। जैसे-शिंगार का समान, बालों के तेल, संदल की लकडी, आयुर्वेद की दवाएं,

कोका कोला और पैप्सी।

एक दिन मेरे बेटे को रात को नींद नहीं आ रही थी। उसने सोने की बहुत कोशिश की परन्तु उसे नींद नहीं आ रही थी। उसने अपने कमरे में मरी हुई छिपकली और चूहे को ढूंढने का प्रयत्न भी किया। क्योकि कमरे से बदबू आ रही थी। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। सुबह मेरे पोते ने मेज पर रखी तेल की बोतल पर लगा लेबल पढ़ा तो बोला, ''रात सारिका चाची ने जो बाबा रामदेव का तेल बालों में लगाया था, उसमें गौमूत्र है।'' तब पता चला कि रात नींद न आने का माजरा क्या था? कहते हैं कि उत्तराखंड की सरकार ने तो भैसें और गाए के दूध की तरह गौमूत्र भी घरों से खरीदने के लिए दुकानों के प्रबंध भी करने शुरु कर दिए हैं

किसी समय मैंने सुना था कि अरब के लोग ऊंट के पेशाब को दवाई के रुप में इस्तेमाल करते हैं, सूडान के लोग बकरी के पेशाब को विशेष मानते हैं, नाईजीरिआ में बच्चों को पड़ने वाले मिर्गी के दौरे को रोकने के लिए उन के मुंह में गौमूत्र डाल देते हैं। एक बात मेरे समझ में नहीं आ रही है कि अगर अरब के लोगों को गौमूत्र पीने की राय दी जाए तो वो कहेगे, ''चेहरा अच्छा नहीं है तो बात तो अच्छी कर लिया कर।''

आज विज्ञान की खोजों ने पूरी दुनिया को एक गांव के रुप में बदल दिया है। पर हमारे देश में अलग-अलग क्षेत्रों के अंधविश्वास उसी तरह मौजूद हैं। हमें दूसरों के अंधविश्वास पर तो हंसी आती है पर अपने अंधविश्वास पर हम चुप कर जाते हैं।

इस बात में पूरी सच्चाई है कि गाय अथवा और जानवरों के मूत्र में दो दर्जन से ज्यादा तत्व और योगिक पाए जाते हैं। इन में नाईट्रोजन, सल्फर, अमोनिया, कॉपर, आयरन, यूरिया, यूरिक ऐसिड, फासफेट, सोडियम और पोटाशीयम प्रमख हैं। क्या यह सभी मानव शरीर के लिए फायदेमंद हैं? नहीं, यह असंभव है। अगर इन में से कुछ हमारे शरीर के लिए फायदेमंद होंगे तो अवश्य ही नुक्सान करने वाले भी होंगे। इस लिए जरुरत है यह जानने की, कि कौन से लाभकारी हैं और कौन से नुक्सान करने वाले हैं।

कई बार ज्यादा आयु में गाय के गुर्दे भी फेल हो जाते हैं और वह रक्त को अच्छी तरह फिल्टर नहीं कर पाते। ऐसी हालत में कई बिमारियों के कीटाणु भी मानव शरीर में दाखिल होने की शंका बनी रहती है। असल बात यह है कि भारत में गाय के मांस का इस्तेमाल रोकने के लिए गौमूत्र के फायदों का प्रचार एक पूरी तरह बनाई गई योजना से ही किया जा रहा है। यहां तो गाय की भरी गाड़ी को रोकने के लिए मानव शरीर को आग में जला कर यह माना जाता है कि जानवरों की कीमत मानव से कहीं ज्यादा है। ऐसी बहुत सी घटनाएं भारत के कई हिस्सों में हुई हैं। सरकारें और न्यायालय कभी भी कोई गंभीर कार्यवाई नहीं करते।

बाबा रामदेव अपनी दवायों में गौमूत्र का इस्तेमाल बहुत ज्यादा कर रहा है। आधा लिटर गौमूत्र 70 रुपये में बेचा जा रहा है। हजारों व्यापारियों को व्यापार करने के लिए हजारों दुकानें खोल दी हैं।

चरक, धनवंतरी जैसे प्राचीन विद्वान अपने समय के तजुर्बेकार और बुद्विमान व्यक्ति थे। उन्होंने बहुत से लाभकारी नुस्खे अपनी पुस्तकों में दर्ज किए हैं। उस समय विज्ञान की खोजों की क्या दशा थी? मैं यह बात दावे से कह सकता हूं कि 100-200 वर्ष पहले हमारे पूर्वजों के पास को चींटी मारने की भी कोई दवा नहीं थी। फिर वह शरीर के अंदर के कीटाणुओं को कैसे मार सकते थे?

1935 में हमारे देश में आयु 35 बर्ष ही थी। चरक के समय औसत आयु सिर्फ 20 साल की थी। आज के विज्ञान ने हमारे देश में औसत आयु 65 बर्ष कर दी है। जापानी औरतों की आयु 88 बर्ष हो चुकी है। चरक जैसे विद्वान दो हजार साल पहले के हैं। उस समय उनके पास कीटाणुओं को देखने के लिए न तो कोई खुर्दबीन थी, न ही बिमारियों का पता लगाने के लिए एक्सरे और न ही अल्टरासाउंड थे। रसायनिक प्रयोशालायों का तो नाम भी नहीं था। इसलिए उस समय कीटाणुओं से होने वाली बिमारियों का कोई पता नहीं था।

(शेष पृष्ठ 47 पर)

120 महिलाओं से यौन शोषण करने वाला बाबा अमरपुरी उर्फ जलेबी बाबा

-धनपत सिंह धारसूल
9416132844

देश में दिन प्रतिदिन उजागर हो रहे पाखंडी बाबाओं द्वारा महिलाओं के साथ यौन शोषण के किस्सों में एक नाम और जुड़ गया है। 19 जुलाई 2018 को जिला फतेहाबाद के टोहाना शहर में एक दुष्कर्मी बाबा का मामला सामने आया है। यहां के शक्ति नगर, वार्ड नं. 19 के बाबा बालक नाथ मंदिर के 60 वर्षीय महंत बाबा अमरपुरी उर्फ बिल्लू राम उर्फ जलेबी बाबा के पास से पुलिस को 120 महिलाओं के साथ यौन शोषण किये जाने की अश्लील वीडियो मिली हैं। पुलिस ने इससे 7 दिन के रिमांड के दौरान इसके पास से एक पिस्तौल व 15 ग्राम अफीम बरामद की है। अदालत ने पाखंडी बाबा को हिसार जेल भेज दिया।

बाबा अमरपुरी उर्फ बिल्लू राम की कहानी बड़ी हैरतअंगेज है। 25 साल पूर्व मानसा (पंजाब) निवासी अमरवीर उर्फ बिल्लू राम टोहाना, जिला फतेहाबाद में रोजगार की तलाश में पत्नी बच्चों सहित आया था। अपने परिवार का पालन पोषण करने के लिए उसने टोहाना शहर की नेहरू मार्किट में सड़क किनारे एक रेहड़ी लगा कर जलेबी बनाने का काम शुरू किया। उसकी जलेबी शहर में मशहूर हो जाने पर काम अच्छा चल पड़ा। कुछ साल बाद उसने तांत्रिक व ओझा का काम भी साथ-साथ शुरू कर झाड़ फूं क करने लगा तो उसे लोग जलेबी बाबा कहने लगे। इसके पास बड़ी संख्या में दुख दर्द निवारण करवाने वाली महिलाओं का तांता लगना शुरू हो गया। जब इसके अनुयाईयों की संख्या तेजी से बढने लगी तो इसने जलेबी बनाने वाली रेहड़ी को छोड़ कर 1998 में टोहाना के शक्ति नगर, वार्ड नं.19 में काली माता मंदिर के पास एक प्लाट खरीद कर अपना आश्रम बना लिया। धीरे-धीरे वहां पर अनुयाईयों के सहयोग से बाबा बालक नाथ मंदिर का निर्माण करवा कर उसमें रहने लगा।

अब बाबा का काम दिनों दिन तेजी से बढने लगा। अपना नाम अमरवीर से बदल कर बाबा अमरपुरी रख लिया। इसके पाखंड से जुड़े कारोबार के फलने-फूलने से वह माला माल होता चला गया। इसके पास अधिकतर वह महिलायें आती थी जो घर परिवार से पीड़ित होती थी। बाबा उन्हें दुख दर्द दूर करने के नाम पर महिलाओं को तंत्र-मंत्र व झाड़ फूंक की आड़ में नशीले पदार्थ अफीम को चाय में मिला कर यौन शोषण करना शुरू कर दिया। बाबा की यौन शोषण शिकार सभी महिला का वह मोबाईल से अश्लील वीडियो बना कर उन्हें ब्लैकमेल करता था। उनके चंगुल में फंसी महिला को नई लड़कियों को फंसा कर उसके सामने परोसने को मजबूर करता। इसके चक्कर में अनेकों महिलायें बुरी तरह फंस चुकी थी, जो अपनी इज्जत बचाने के लिए दूसरी लड़कियों को बहला फुसला कर इस दुष्कर्मी बाबा के सामने परोसने को मजबूर हो गई।

बाबा के दबाव से तंग आकर शहर की एक महिला ने अक्तूबर, 2017 में इसके खिलाफ यौन शोषण करने का आरोप लगा कर पुलिस से कानूनी कार्यवाही करने की मांग का साहस दिखाया। उसकी शिकायत पर पुलिस ने बाबा अमरपुरी को गिरफ्तार कर लिया। इस मामले में बाबा को निर्दोष मानते हुए इसके पक्ष में काफी लोग खड़े हो जाने से मामला नरम पड़ गया। जिससे वह कुछ माह जेल में रहने के बाद जमानत पर छुट कर बाहर आ गया और अपने आश्रम में फिर से अपना धंधा चलाने लगा। यह मामला अदालत में अभी भी विचाराधीन है।

मिली जानकारी के अनुसार अब बाबा अमरपुरी के यौन शौषण का भंडाफोड़ एक बड़े नाटकीय ढंग से हुआ। बाबा अपने पास काफी मात्रा में मोबाईल फोन रखता था। कुछ दिन पहले ही इसका एक नजदीकी व्यक्ति ने एक चाल चलते हुए बाबा से कहा कि गुरू जी मेरा मोबाइल खराब हो गया है। आपके पास काफी

मोबाइल हैं, इनमें से एक मोबाइल मुझे दे दो। बाबा ने अपने इस विश्वास पात्र को एक मोबाइल उसे थमा दिया। उस व्यक्ति ने बाबा के मोबाइल की डिलीट वीडियो को तकनीक से निकाल कर खंगाला तो उसमें से बाबा की एक दर्जन महिलाओं के साथ यौन शोषण की अश्लील वीडियो मिली। उसने सभी अश्लील वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दी। अब यह वायरल अश्लील वीडिया की चर्चा शहर में तेजी से फैल गई और पुलिस के पास पहुंच गई। इस पर स्थानीय पुलिस हरकत में आई और उसने 19 जुलाई 2018 को तथाकथित बाबा अमरपुरी के आश्रम पर छापा मार कर उसे गिरफ्तार कर लिया। जिला महिला पुलिस प्रभारी बिमला देवी व टोहाना डीएसपी जोगिंद्र शर्मा द्वारा बाबा के आश्रम के तहखाने की जांच करने पर उसमें से सैक्स शक्तिवर्धक दवाई, तेल, नशीली दवाई, एक दर्जन के करीब मोबाईल व अश्लील वीडियो की चिप बरामद हुई। पुलिस ने जब इनकी जांच की तो उनमें 120 महिलाओं के साथ अश्लील हरकतें व यौन शौषण करने की वीडियो पाई गई। पुलिस ने बाबा को 20 जुलाई 2018 को टोहाना अदालत में पेश कर 7 दिन के रिमांड पर हिरासत में रख कर पुछताछ की। पुलिस ने रिमांड के दौरान बाबा से टोहाना के श्मशान घाट में छिपा कर रखा एक पिस्तोल व 15 ग्राम अफीम बरामद की गई है। रिमांड के दौरान बाबा अमरपुरी ने माना कि वह महिलाओं को चाय में अफीम घोल कर पिलाता और अफीम का नशा होने पर रेप करता व मोबाईल से अश्लील वीडियो बनाता था। रिमांड के बाद बाबा को टोहाना न्यायलय में पेश किये जाने के बाद जज ने उसे पुलिस हिरासत में हिसार जेल भेज दिया। उसके खिलाफ धारा 292, 293, 294, 376, 384, 506, 509 आईटी एक्ट व आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।

परिवार से दूर रहता था बाबा अमरपुरी

उक्त दुष्कर्मी बाबा के पांच बच्चे हैं जिसमें दो बेटे व तीन बेटियां है। सभी बच्चे विवाहित हैं। ठाठ का जीवन जीने के लिए उसने अपने दोनों बेटों को किसी दूसरे शहर में रहने के लिए भेज दिया था। इसकी पत्नी का कुछ साल पहले देहांत चुका है। भगवा चोले की आड़ में भोली-भाली महिलाओं को पाखंडों में फंसा कर वह अय्याशी की जिंदगी जी रहा था। जब इसकी महिलाओं के साथ अश्लील वीडियों सामने आईं तो शहर की जनता में इसके प्रति रोष बढ़ गया है। वायरल होने वाली अश्लील वीडियों में दिखने वाली महिलायें व युवतियों के भविष्य पर समाजिक लाज का खतरा पैदा हो गया है।

शोक समाचार

तर्कशील कार्यकर्ता ईश्वर सिंह की बीमारी के चलते 4 अगस्त 2018 को मृत्यु हो गई। वे 15 वर्ष पूर्व तर्कशील आंदोलन से जुड़े थे। ईश्वर सिंह के तीन बच्चे हैं जिनमें दो लड़की और एक लड़का। साथी कैंसर की बीमारी के चलते कभी निराश नहीं हुए। वे अंत तक सोशल मीडिया के माध्यम से तर्कशील विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के प्रयास में लगे रहे। एक कर्मठ साथी के चले जाने पर तर्कशील सोसायटी गहरे दुख का इजहार करती है।

स्मृति शेष

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के कार्यकर्ता बलविंदर के पिता श्री कपूरिया राम (90 वर्ष), गांव बहादुरपुरा, जिला कुरुक्षेत्र, की 13 अगस्त 2018 को मृत्यु हो गई। उनकी शोक सभा 24 अगस्त 2018 को रखी गई। शोक सभा में में किसी धार्मिक पाखण्ड या रीति रिवाज को न करने का निर्णय किया गया।इस शोक सभा में सोसायटी की ओर से तर्कशील पथ के संपादक बलवंत सिंह ने अपने तर्कपूर्ण विचार रखे। सोसायटी उनके परिवार से संवेदना प्रकट करती है।

अकेलापन

-डा. हरीश मल्होत्रा ब्रमिंघम
मो. :07763013424

रीमा का कहना है कि उसकी दो सहेलियां थी जो कि एक साथ अपना समय बिताती थी, परन्तु उसे नहीं पूछती थी। वे प्रायः उसके सामने बातें करती थीं कि उन्होंने एक साथ कितना मजे के साथ समय बिताया। एक बार रीमा ने उनमें से एक के घर में फोन किया तथा किसी और ने फोन उठाया। दूसरी सहेली भी वहीं पर ही थी तथा वह फोन में उन दोनों को बातें करते एवं हंसी मजाक करते हुए सुन सकती थी। वह सुन सकती थी कि वे दोनों जीवन का कितना आनन्द उठा रही थीं, जिसके कारण रीमा पहले से भी और अधिक अकेली महसूस करने लग गई।

क्या आपने भी कभी अकेलापन महसूस किया है? यह सच है कि हर कोई कभी न कभी अकेला महसूस करता है। यह बात उनके बारे में भी सत्य है, जिनके बारे में इस प्रकार लगता है कि उन्हें सभी पसंद करते हैं। क्यों? क्योंकि किसी का अकेला होना इस बात पर निर्भर नहीं करता है कि उसके कितने दोस्त हैं, बल्कि इस बात पर निर्भर है कि उसके किस प्रकार के दोस्त हैं। हो सकता है कि किसी व्यक्ति के इर्द-गिर्द 24 घंटे लोगों की भीड़ लगी रहती हो, परन्तु उसका कोई जिगरी दोस्त न हो, जिस कारण किसी समय पर वह भी अकेला महसूस करता हो।

क्या हमें पता है कि अकेलापन हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। विशेषज्ञों ने 148 रिपोर्टों की जांच करने के पश्चात् यह नतीजा निकाला है कि जो लोग अन्य लोगों के साथ कम मेलजोल रखते हैं, वे तीव्र गति के साथ मृत्यु की ओर बढ़ते जाते हैं। अकेला रहना 'मोटापे से दो गुना अधिक खतरनाक है' तथा 'एक दिन में 15 सिगरेट पीने से होने वाले नुकसान के बराबर है।'

यह भी सत्य है कि अकेलेपन के कारण व्यक्ति खतरे में पड़ सकता है। अकेलेपन के कारण हो सकता है कि आप किसी को भी अपना दोस्त बना लें, जो आपकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाता हो। गुरमीत नाम का नवयुक कहता है, 'जब आप अकेले होते हो, तो आप चाहते हैं कि कोई तो आप में रूचि ले। आप शायद सोचने लग जाओ कि जो मर्जी हो जाए, अकेले नहीं रहना, चाहे किसी से भी दोस्ती करनी पड़े। इससे आप मुसीबत में फंस सकते हैं।' यह इस कारण से कि दुनिया में बहुत से लोग हैं, जो अपने निजी स्वार्थों के कारण आपके साथ दोस्ती करना चाहते हैं और अपने इस उद्देश्य को प्रारंभ में छुपा कर रखते हैं। ऐसे व्यक्ति दोस्ती की आड़ में आपका घर भी बर्बाद कर सकते हैं अथवा आर्थिक तौर पर आपको चूना लग सकते हैं।

हम यह भी देखते हैं कि आजकल तकनीक का युग है तथा बहुत से लोग फेसबुक अथवा व्हट्सऐप के द्वारा बहुत से लोगों को अपने दोस्त मानते हैं। परन्तु टैक्नोलोजी हमेशा अकेलेपन का इलाज नहीं होती। आदर्श नाम की एक लड़की कहती हैं, 'मैं एक दिन में सैंकड़ों लोगों को संदेश अथवा ईमेल भेज सकती हूं, परन्तु ऐसा करने से भी मेरा अकेलापन दूर नहीं होता।' बलजीत नाम का नवयुवक भी इसी प्रकार महसूस करता हुआ बताता है, 'संदेश भेजना चाय-पानी के समान है, जबकि आमने-सामने बातचीत करना खाना खाने के समान है। चाय-पानी बढ़िया है, परन्तु पेट भरने के लिए भोजन करने की जरूरत रहती है।

रिश्तेदारियों में कई रिश्तेदार चालाकी करते हुए अपने शेष भाई बहनों से कह देंगे कि फलां व्यक्ति को शादी, पार्टी इत्यादि पर नहीं बुलाना तथा कई पिछलग्गू एवं मूर्ख उनकी चालाकियों में फंस कर अपने हितैषी एवं नजदीकी रिश्तेदार को सदा के लिए खो बैठते हैं। ऐसे चुस्त लोग अपनी अकड़ तथा तथाकथित बड़प्पन तथा अपनी ही बात को उचित ठहराने के लिए आपको सूई के नाके में से निकालना

चाहते हैं ताकि आप उनकी बेहूदा ख्वाहिशों के मानसिक तौर पर गुलाम बन कर रहो। परन्तु स्वाभिमानी लोग कभी भी ऐसे घटिया लोगों की अध ीनता स्वीकार नहीं करते, वे अपना जीवन ऐसे लोगों से किनारा करके शानदार तरीके से व्यतीत करते हैं।

एक कहावत है कि 'अकेला तो वृक्ष भी न हो।' कारागार में भी सजायाफ्ता लोगों को इसी लिए भेजा जाता हे कि वह शेष समाज से कट जाए तथा जेल में भी किसी अनुचित व्यवहार के कारण उस अकेले कैदी को एक अलग कोठड़ी में सजा के तौर पर बंद कर दिया जाता है।

महान दार्शनिक ब्रट्रण्ड रसल इस अकेलेपन को 'अकेलेपन का दुख' कहता है, जो उस अकेले इन्सान को सहना पड़ता है। व्यक्ति का स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है, उसके किसी के साथ संबंध कायम रखने मुश्किल हो सकते हैं। व्यक्ति को अनके के रोग जैसे कि उदासी रोग, डायबिटीज, बल्ड प्रैशर का बढ़ जाना तथा दिल से संबंधित रोग हो सकते हैं। मानसिक परेशानियों के साथ मानसिक संतुलन में बिगाड़ आ सकता है तथा व्यकित का घोर उदासी एवं बाद में आत्महत्या की ओर रूझान भी हो सकता है।

इस अकेलेपन से बचा कैसे जा सके? हमें बिना कारण के नकारात्मक नहीं सोचते रहना चाहिए। उदाहरण के तौर पर यदि आप कभी किसी ऐसी साईट पर जाते हैं, जहां पर आप किसी पार्टी की तस्वीरें देखते हैं, जिसमें कि आपके अन्य दोस्तों को बुलाया गया था, परन्तु आपको निमंत्रण नहीं भेजा गया। उन तस्वीरों को देखकर आप अपनी सोच को दो दिशाओं में ले जा सकते हैं। या तो यह सोच सकते हैं कि आपको जानबूझ कर नहीं बुलाया गया अथवा यह सोच सकते हो कि किसी विशेष कारण से नहीं बुलाया गया। यदि आपको पूरी बात का पता ही नहीं तो फिर क्यों गलत दिशा में सोचना? इसकी अपेक्षा आपको न बुलाए जाने के कारणों का ढूंढना चाहिए। तुम्हारे अकेलेपन का कारण प्रायः आप का नजरिया होते है, न कि तुम्हारे हालात।

बातों को बढ़ा चढ़ा कर नहीं देखना चाहिए। जब आप अकेले होते हैं तो शायद आप सोचें कि, 'मुझे कोई नहीं बुलाता' अथवा 'सभी हमेशा मुझ से दूर-दूर रहते हैं।' परन्तु इस प्रकार की मनगढ़ंत बातें बनाए जाने से आप अकेलेपन की दलदल में और भी धंसते चले जाओगे। इस प्रकार की सोच से आप अपने ख्यालों के चक्रव्यूह में फंस सकते हैं आप महसूस करते हो अन्य लोग आप से दूर-दूर रहते हैं, जिसके कारण से आप भी उनके साथ मेलजोल नहीं रखते। इस कारण से आप अकेले महसूस करने लगते हैं और आप फिर महसूस करते हैं कि लोग आपसे दूर-दूर रहते हैं।

हमें हमेशा अपने से बड़ी आयु के लोगों के साथ दोस्ती करने के लिए तैयार रहना चाहिए। 21 वर्षीय नताशा बताती है, 'हाल ही में मैं अपने उम्र दराज व्यक्तियों के साथ दोस्ती करके बहुत खुश हूं। मेरे जिगरी दोस्तों में से कुछेक की आयु तो मुझ से बहुत अधिक है। मैं उनके निजी तजुर्बो से बहुत कुछ सीखती हूं। मैं भिन्न-भिन्न मामलों में दी गई उनकी राय का सम्मान करती हूं औरर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे भरोसेमंद दोस्त हैं उन्होंने जिंदगी के उतार-चढ़ावों को मुझ से अधिक उपभोग किया है।' जैसा कि कहा जाता है कि वयोवृद्ध लोगों में जीवन का तजुर्बा होता है तथा इसी कारण से उनकी समझ में परिपक्वता आ गई होती है। एक गरीब अथवा दूखी व्यक्ति का जीवन एक संघर्ष होता है, परन्तु प्रसन्न मन हमेशा मजे के साथ रहता है। एक अच्छी दोस्ती मन को खुशियों से भर देती है।

विजय का कथन है कि 'मुझे लगता है कि बहुत से नवयुवक स्वयं को अकेले महसूस करते हैं, परन्तु वे दूसरों को इसके बारे में बताते नहीं है। उदाहरण के लिए जब वे दूसरों को संदेश भेजते हैं अथवा सोशल नेटवर्क के द्वारा एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। तो उनके 'वे दोस्त' वास्तव में उनके साथ नहीं होते। इसी प्रकार वे स्वयं को अकेला महसूस करते हैं।

कई बार वे लोग भी स्वयं को अकेला महसूस करते हैं, तो समाज द्वारा निर्धारित परम्पराओं से बागी हो जाते हैं। यदि किसी लड़के अथवा

लड़की ने किसी अन्य जाति अथवा दूसरे धर्म या संस्कृति में शादी करवा ली, उसका बाकी परिवार एवं समाज उसका बहिष्कार कर देता है। इस अकेलेपन की उसे एक प्रकार से सजा दी जाती है। किसी के धर्म, राजनीति अथवा सामाजिक मूल्यों के बारे में भिन्न विचार भी अकेलेपन में ले जा सकते हैं यह उसी तरह का संताप है जो किसी भी मामले में अल्पसंख्यकों में विद्यमान हो। वे लोग जिन के जीवन साथी का देहांत हो गया हो तो बहुत से लोग उनको अपने घर, पार्टियों अथवा सामाजिक सम्मेलनों में बुलाने से परहेज करते हैं।

अकेलेपन का संताप उन लोगों को भी सहन करना पड़ता है, जिनको कोई नामुराद रोग लग जाए और वे चल फिर भी नहीं सकते हों। ऐसे मोहताज लोग इस अकेलेपन का संताप कई तरीकों से भुगतते रहते हैं। एक तो वे स्वयं कहीं पर आ जा नहीं सकते। यदि कोई उन्हें साथ ले जाए अथवा उन्हें कोई मिलने के लिए आ जाए तो फिर वे कुछ समय मिलजुल कर बिता सकते हैं। दूसरे, कई बार उनकी शारीरिक जरूरतें ऐसी हो जाती हैं, जिनके लिए डाक्टरी सहायता एवं देखभाल हर समय जरूरत बनी रहती है। वे अपने-आप में भी कई नकारात्मक ख्यालों में पड़े रहते हें कि पता नहीं मैंने कौन से बुरे कर्म किए हैं, जिसकी सजा उन्हें मिल रही है। कई बार उनकी देखभाल करने वाले भी उसकी आवश्यकताओं से तंग आ जाते हैं तथा कुछ दिल को कष्ट पहुंचाने वाले शब्द बोल देते हैं, जिसके वे स्वयं को जीरो समझने लग जाते हैं और मन में सोचने लग जाते हैं कि मैंने अब जिंदा रह कर क्या लेना? बस फिर वे चुपचाप अपने नकारात्मक विचारों के जाल में उलझ कर रह जाते हैं।

कई बार की अपंगता भी अपाहिज लोगों को अकेलेपन का संताप भोगने के लिए मजबूर कर देती है। उस अपाहिज व्यक्ति का मन और भी अधिक दुखी होता है, जब उसको अनुचित शब्दावली के साथ संबोधित किया जाता है। तब वह अत्यधिक अकेलापन महसूस करता है। वह सोचता है कि उसकी भावनाओं को कोई समझ ही नहीं रहा। ऐसी दशा उन लोगों को भी होती है, जिनके पास कोई औलाद नहीं होती तथा बुढ़ापे में वे मन ही मन में दुखी होते हैं कि उनके सुख-दुख समझने वाला कोई भी नहीं है। तब वे सोचते हें कि अच्छा होता अगर हमने कोई बच्चा गोद ही ले लिया होता। कुछ ऐसे माता-पिता भी अकेलापन महसूस करते हैं जिनकी संतान ढलती हुई आयु में उनका साथ नहीं देती। कई मामलों में तो वृद्धों की संतान उनसे सारी सम्पति अपने नाम करवा लेने के पश्चात् उन्हें वृद्धाश्रमों के सहारे छोड़ देती है। जिन बच्चों को उन्होंने अपने सीने पर लिटाया होता है और उंगली पकड़ कर चलना सिखाया होता है, वे कभी उनको मिलने के लिए भी नहीं आते। बस, उनका अकेलापन उनको पल-पल मारता रहता है। वे हमेशा दरवाजों की ओर देखते रहते हैं कि शायद कोई मिलने के लिए आ जाए। वे अपना समस्त दुख किसी अन्य के साथ सांझा भी नहीं कर सकते, क्योंकि ऐसा करने से अपना पेट ही नंगा होगा। कई मामलों में एक बेटे ने बाप को और दूसरे ने मां को अपने साथ रखने का यत्न किया होता है। वे उनके अकेलेपन से अनभिज्ञ होते हैं कि जिन्होंने सारी उम्र एक साथ बिताई, दुखों व सुखों को एक साथ सहन किया, अब आयु के आखिरी पड़ाव में उन्हें अकेला कर दिया गया है। जब किसी पुरुष की पत्नी उससे पहले साथ छोड जाए तो वह आदमी अधिक समय तक जीवित नहीं रहता। पुरुष को एक तरह से औरत के सहारे की हर समय आवश्यकता रहती है। भोजन बनाने, घर की साफ-सफाई तथा घर से संबंधित कार्यों की आमतौर पर पुरुष को जानकारी नहीं होती। पुरुष को अपने बेटी-बेटों के बच्चों के साथ उतना अधिक व्यस्त नहीं रख सकता, जितना कि एक औरत रख सकती है। पुरुष इसी कारण इस अकेलेपन को अधिक देर तक सहन नहीं कर सकता।

श्वेत लोगों ने अनके प्रकार के शौक पाले हुए होते हैं तथा वे स्वयं को उन गतिविधियों में व्यस्त रखते हैं, परन्तु अधिकतर एशियन लोग ऐसे शौक अथवा हॉबी नहीं पालते। इनका सहारा केवल धार्मिक उपक्रम अथवा वृद्धों के लिए बनाया गया कोई वृद्धाश्रम ही रह जाता है। यदि वे वापिस अपने देशों में जाते हैं, तो वहां पर भी उनके साथी सहयोगी बहुत कम होते हैं। अनेक प्रकार के रोगों से

ग्रसित होने के कारण, वहां पर भी उनको सहारा देने वाला कोई दिखाई नहीं देता तथा वहां पर भी वे अकेलेपन को भोगते हैं

कई ऐसे अधेड़ लोग भी हैं, जिनका कुछ कारणों के चलते तलाक हो गया था और उन्होंने दोबारा शादी नहीं करवाई। वे अकेला रहने के इतने अधिक आदी हो जाते हैं कि फिर वे किसी और के साथ मिलकर रह ही नहीं सकते। वे इस अकेलेपन को वैसे भी तथा बीमारी के समय और भी शिद्दत के साथ महसूस करते हैं। कई व्यक्तियों ने छोटी आयु वाली लड़की के साथ दूसरी शादी करके अनेक प्रकार के कष्ट एवं अकेलेपन को सहा है। ऐसे व्यक्ति के बच्चे एवं रिश्तेदार उससे बोलचाल बंद कर देते हैं और वह अकेलेपन का संतान सहता रहता है।

मुनीष का कहना है कि, 'हमारे सब दोस्त जो किसी अन्य स्थान पर रहने के लिए चले गए हैं अथवा किसी अन्य कारण से हमारा उनसे सम्बन्ध टूट गया है। यद्यपि वे कहीं दूर रह रहे हों, फिर भी मुझे उनसे बात करना अच्छा लगता है। किसी पुराने दोस्त के साथ बातचीत करके आपको प्रसन्नता एवं साहस मिलता है।' इसी कारण से बहुत से कामकाज से मुक्त हो चुके अथवा सेवामुक्त हो चुके लोग महीना दो महीने के पश्चात् मिलकर एक-दूसरे का सुख-दुख सुन लेते हैं यह जहां पर हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है, वहीं पर हमारी आयु को भी लंबी करता है और हमारी प्रसन्नता में भी वृद्धि होती है।

अपने-आपको व्यस्त रखना अत्यंत आवश्यक है, ताकि इस अकेलेपन को सार्थक तौर प्रयोग में लाया जा सके। अच्छी पुस्तकें पढ़ना, व्यायाम एवं अनेक प्रकार के खेल हमें हर प्रकार से प्रसन्नता की ओर लेकर जाते हैं। मानव कल्याण के कार्य और अपने जीवन के रचनात्मक कार्य, जो आपने कभी करने बारे में सोचा था, वे इस समय में करने के लिए कारगर हो सकते हैं।

कुछ लोग जब कुछ समय के लिए अकेले होते हैं तब वे अकेलापन महसूस करते हैं, परन्तु आपको उस समय पर अकेला महसूस करने की आवश्यकता नहीं, जब दूसरे लोग आपके पास नहीं होते। बहुत से लेखकों, वैज्ञानिकों एवं चिंतक लोगों ने इस एकान्त को अत्यंत सार्थक ढंग से इस्तेमाल किया है। यह कुछ ऐसे कार्य हैं जोकि किसी अन्य व्यक्ति के साथ में नहीं किए जा सकते। अपनी एकाग्रता को कायम रखकर ऐसे कार्यों को किया जाता है। अपने-आप के बारे में विश्लेषण करने से तथा अपने व्यक्तित्व को और भी बुलंदियों की ओर ले जाकर इस अकेलेपन का उचित प्रयोग करके सृजनात्मक कार्य किए जा सकते हैं। इस प्रकार करने से अकेलेपन को एक श्राप की बजाए वररदान में बदला जा सकता है। परन्तु फिर भी यह हर एक के वश का कार्य नहीं है।

हिन्दी अनुवाद-बलवंत सिंह

कीलरें बन कर रह जाती हैं।
नफरत है मुझे अपने धर्म से!
मेरा धर्म पत्थरों और पोथियों के आदेशों का धर्म है
फटे हुए कानों और नुचे हुए केशों का धर्म है
ज़िंदा जलायी हुई सतियों और बंधियाए हुए सन्यासियों का धर्म है
मुझे नफरत है अपने मठों और मंदिरों से
जहां आतंक और अज्ञान को मूर्तियों में ढाल कर पूजा जाता है
नफरत है मुझे मिमियाते हुए होठों और जुड़ते हुए हाथों से
नफरत है मुझे घिसती हुई नाकों और झुकते हुए माथों से!

-डा. रणजीत

उनका डर

-गोरख पाण्डेय

वे डरते हैं
किस चीज से डरते हैं वे
तमाम धन-दौलत
गोला-बारूद पुलिस-फौज के बावजूद?
वे डरते हैं
कि एक दिन
निहत्थे और गरीब लोग
उनसे डरना बंद कर देंगे।

अंधविश्वास के चलते

तांत्रिक क्रियाकलाप की भेंट चढ़ गया भाटिया परिवार!

नई दिल्ली, राजीव रंजन। एसएनबी : बुराड़ी इलाके में रहने वाली नारायण देवी का परिवार बहुत धार्मिक व मिलनसार था। कभी परिवार के सदस्यों के बीच किसी पड़ौसियों ने तकरार तक नहीं सुनी थी। सूत्रों के मुताबिक पूरा परिवार एक खास पंथ को मानते हुए एक तांत्रिक के प्रभाव में था और आशंका है कि तांत्रिक क्रियाकलाप के चलते ही परिवार ने सामूहिक रूप से आत्महत्या कर ली। मामले की जांच का जिम्मा क्राइम ब्रांच को सौंप दिया गया है।

पुलिस के अनुसार नारायण देवी का परिवार पिछले 22 सालों से बुराड़ी इलाके में रह रहा था, जबकि मूलरूप से यह परिवार राजस्थान का रहने वाला था। इस परिवार के सदस्यों के बारे में पुलिस को पता चला है कि परिवार से सभी सदस्य धार्मिक प्रवृति के थे और परिवार के सदस्य पिछले कुछ दिनों से एक धार्मिक प्रथा का पालन किए जाने में जी-जान से जुटे थे। इस परिवार के सदस्य आस-पड़ोस होने वाले किसी भी धाम्रिक प्रयोजन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता था।

एक पड़ोसी ने बताया है कि भूपी परचून दुकान में एक तख्ती टांग कर रखी गई थी, जिसमें रोजाना नए-नए सुविचार लिखे रहते थे। यह परिवार इतना धार्मिक था कि अपने दुकान में आमतौर पर परचून के दुकान में बिकने वाले अंडे, गुटखे, खैनी, बीड़ी व सिगरेट बेचने में भी परहेज करता था। वहीं एक अन्य पड़ोसी महिला ने पुलिस को बताया है कि परिवार का मुखिया ललित पिछले पांच साल से मौन धारण कर रखा था और किसी से भी कुछ भी बातें सिर्फ संकेत में ही करता था।

पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने दावा किया कि घटना के बाद पूरे मकान के तलाशी के दौरान पूजा घर से हवन कुंड मिला है, जिसमें ऐसा लगता है कि पिछले कुछ दिनों से लगातार हवन हो रहा था। पूजा घर में ही एक हस्तलिखित नोट मिला है, जिसमें मोक्ष की प्राप्ति के लिए विस्तार से तरीके बताए गए हैं। इसी नोट में लिखा है कि संपूर्ण को पाने के लिए हमें कुछ ऐसा करना है, जिससे हमारी आत्मा को मोक्ष मिल जाए। नोट में खुद को समाप्त करने तथा समाप्ति के समय अचानक ईश्वर के उत्पति होने का दावा किए जाने की बात लिखी गई है। पूजा किए जाने के लिए नोट में मंगल, शनि व रवि को शुभ समय कहा गया है, जब कि रात के दो बजे से लेकर चार बजे के बीच के समय को ब्रह्म मुहर्त कहा गया है।

पुलिस ने बताया कि इसी नोट में यह लिखा है कि जहां परिवार के दंपति व बच्चे एक साथ क्रिया करेंगे, वहीं विधवा या विधुर अलग स्थल पर जाकर इस क्रियाकलाप को अपनाएंगे। मोक्ष प्राप्ति के लिए सबसे जरूरी है कि किसी तरह की शोरगुल व आसाज कान तक नहीं पहुंचे। इस वजह से कान में रूई लगी हो, क्रियाकलाप को कोई देख नहीं पाए और कोई एक-दूसरे को रोके-टेके नहीं, इसलिए आंखों व हाथों में पट्टी बंधी थी।

(इस घटना ने पूरे देश को हिला कर रख दिया है। घटना पर काफी कुछ समाचार पत्रों में आ चुका है। और पुलिस तथा समाजशास्त्रियों द्वारा भी इस पर काफी विश्लेषण किया जा चुका है। सभी इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि इस सामुहिक आत्महत्या उस परिवार के अति अंधविश्वासी होने का ही परिणाम है।-संपादक)

महाप्रभु के बदन में दर्द, पुजारी ने औषधि से की मालिश

बिलासपुर : स्नान पूर्णिमा में अधिक स्नान करने से महाप्रभु ज्वर से पीड़ित हो गए हैं। शनिवार को महाप्रभु के शरीर में दर्द हुआ और कमजोरी अधिक महसूस कर रहे हैं जिसे दूर करने के लिए मंदिर के पुजारी औषधि युक्त तेल से महाप्रभु की मालिश कीं इसके साथ ही गुड़ व सोंठ से बना हुआ काढ़ा बनाकर प्रभु को पिलाया गया, ताकि प्रभु को पीड़ा से राहत मिले और वे जल्द ही स्वस्थ हो सकें।

रेलवे क्षेत्र स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर में महाप्रभु अस्वस्थ चल रहे हैं, जिसके चलते मंदिर का पट बंद है। प्रतिदिन महाप्रभु के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उनका उपचार किया जा रहा है। मंदिर समिति के उपाध्यक्ष के.के. वेहरा ने बताया कि महाप्रभु जगन्नाथ ऐसे हैं जो पूरी तरह से मनुष्यों की तरह दिनचर्या रखते हैं। ऐसे में ज्वर से पीड़ित होने पर उनके भी शरीर में दर्द हो रहा है और कमजोरी की वजह से वे कुछ भी खाने में असमर्थ हैं। इसलिए उनके स्वास्थ्य के मुताबिक काढ़ा दिया जा रहा है। मंदिर के पुजारी पंडित गोविंद प्रसाद पाढ़ी प्रभु की सेवा में जुटे हुए हैं। उनको समय-समय पर काढ़ा दे रहे हैं और दोपहर व रात में औषधियुक्त तेल से मालिश की। मंदिर में प्रभु के स्वास्थ्य को देखते हुए उनका उपचार उसी के मुताबिक किया जा रहा है। भगवान को रोजाना काढ़ा दिया जा रहा है।

प्रभु के दर्शन के लिए लालायित हैं भक्त : रेलवे क्षेत्र स्थित भगवान जगन्नाथ मंदिर का पट बंद है और प्रभु विश्राम कर रहे हैं। मंदिर में भक्त प्रभु के दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं, लेकिन मंदिर का पट बंद होने से दर्शन नहीं हो रहे हैं। प्रभु के दर्शन के लिए भक्त लालायित हो रहे हैं और प्रभु के जल्द स्वस्थ होने की कामना कर पूरा अर्चना कर रहे हैं।

जगन्नाथ मंदिर की घंटी को कपड़े से बांधा गया : मंदिर में प्रभु का उपचार चल रहा है। प्रभु पूरी तरह से विश्राम कर रहे हैं। मंदिर का पट बंद है और किसी भी तरह कोई प्रभु के आराम में व्यवधान उत्पन्न न कर सके। इसलिए मंदिर की घंटी को भी कपड़े से बांध दिया गया है, ताकि उससे भी कोई ध्वनि न उत्पन्न हो सके और न ही कोई घंटी को बजा सके।

चाहे तुम मेरी आंखों की बिनायी खुरच डालो
मैं फिर भी अपने ख्वाब नहीं छोड़ूंगा।

-जौन साहब

खुद को शिव अवतार बताने वाले जापानी बाबा को फांसी

टोक्यो/एजेंसिया : जापान की राजधानी टोक्यो के एक सब-वे में जानलेवा सरीन गैस हमले के दोषी बाबा शोको असहारा और उसके छह समर्थकों को शुक्रवार को फांसी पर लटका दिया गया। 63 वर्षीय असहारा ने खुद को शिव का अवतार बताकर 80-90 के दशक में अंधविश्वास फैलाया और हजारों लोगों को अनुयायी बनाया।

20 मार्च, 1995 को असहारा के समर्थकों ने टोक्यो के सब-वे में जहरीली सरीन गैस छोड़ दी थी। इसमें 13 लोगों की मौत हो गई थी और 600 से ज्यादा लोग गंभीर रूप से बीमार हो गए थे। इस पंथ को लेकर हमेशा से ही देश में शंका थी, लेकिन इस हमले के बाद पंथ के मुख्यालय पर कड़ी कार्रवाई हुई। माना जा रहा है कि अपने आश्रमों को छापेमारी से बचाने और सरकार को ध्यान भटकाने के लिए उसने यह हमला करवाया था। असहारा को 2004 में मौत की सजा सुनाई गई थी, अन्य आरोपियों के दोषी साबित होने तक फांसी नहीं दी गई थी।

तीन प्रकार के लक्षण डिप्रेशन के लक्षणों को तीन भागों में विभाजित करते हैं...

डॉ. उन्नति कुमार मनोरोग विशेषज्ञ

1. **जै**विक (बॉयलोजीकल) जैसे नींद का न आना या अत्यधिक आना, भूख न लगना, शरीर में थकान व दर्द महसूस होना। इसके अलावा कामेच्छा में कमी महसूस करना और बात-बात पर गुस्सा आना।
2. कॉग्निटिव सिम्पटम : विचारों में नकारात्मक सोच की बदली छा जाना, स्वयं को हालात के सामने असमर्थ महसूस करना
3. समाज से अलग-थलग : व्यक्ति सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने से कतराता है। इसी तरह वह अपने व्यवसाय से संबंधित जिम्मदारियों का निर्वाह करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करता है।

युवा वर्ग भी चपेट में : इन दिनों उम्रदराज और व्यस्क वयक्तियों के अलावा युवा वर्ग भी डिप्रेशन की गिरफ्त में तेजी से आ रहा है। इसक कारण यह है कि युवकों को अपने कैरियर में स्थापित होने के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा वह कम वक्त में कामयाबियों की सीढ़ियां तेजी से चढ़ना चाहते हैं। उनमें धैर्य नहीं होता और जब वे अपने जीवन व कैरियर से संबंधित पहले से ही तयशुदा लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाते, तब उनके दिलोदिमाग में हताशा व कुंठा घर कर जाती है। यही कारण है कि युवा वर्ग में डिप्रेशन की शिकायतें बढ़ती जा रही हैं। सकारात्मक सोच, अपनी कार्यक्षता और स्थिति के अनुसार व्यवहारिक लक्ष्यों को निर्धारित करने से इस समस्या का समाधान संभव है।

समस्या का समाधानः अगर समस्या है, तो इसका समाधान भी है। डिपेशन लाइलाज रोग नहीं है। डिप्रेशन से ग्रस्त अनेक व्यक्तियों को डिप्रेशनरोधक दवाओं (एंटीडिप्रेसेंट मेडिसिन्स) से लाभ मिल जाता है। डिप्रेशन के इलाज में साइको-एजुकेशन का अपना विशेष महत्व है। इसके अंतर्गत रोगी और उसके परिजनों को रोग के कारणों व उसके इलाज के बारे में समझाया जाता है। इसके बाद सपोर्टिंग ट्रीटमैंट यानी रोगी के परिजनों के सहयोग की जरूरत पड़ती है, लेकिन इस रोग के इलाज में काग्निटिव बिहेवियर थेरेपी सर्वाधिक कारगर साबित होती है। इस थेरेपी को मान्यता है कि हमारे विचार, भावनाएं और व्यवहार आपस में संबंधित हैं। इस थेरेपी के अंतर्गत विभिन्न मनोचिकित्सकीय विधियों के जरिए और काउंसलिंग के माध्यम से रोगी के दिमाग को सकारात्मक विचारों की ओर मोड़ा जाता है।

कारणों पर नजर : डिप्रेशन के कई कारण है। विपरीत स्थिति के साथ तालमेल स्थापित करने में लगातार कई दिनों तक विफल रहना तो एक कारण है, लेकिन नवीनतम शोध- अध्ययनों के अनुसार इस रोग का एक अन्य प्रमुख कारण सेरोटोनिन नाक न्यूरो-केमिकल की कमी से संबंधित है। यह न्यूरोकेमिकल मस्तिष्क में पाया जाता है, जो भावनाओं को जागृत करता है। इस केमिकल की कमी से डिप्रेशन से ग्रस्त व्यक्ति नकारात्मक सोच महसूस करते हैं। ऐसे व्यक्ति हर बात में नकारात्मक पहलू ही देखते हैं।

नकारात्मकता की प्रवृति तीन तरह की होती हैः

1. असहायता। मैं हालात से सामना करने में असहाय हूं।
2. मैं किसी काम का नहीं हूं और मैं सब पर बोझ बन चुका हैं।
3. आशाहीनता। जैसे अब कुछ नहीं हो सकता। भविष्य नहीं बन सकता, चाहे कुछ भी प्रयास किया जाए।

इसके अलावा अन्य कारणों में आनुवांशिक कारण से भी व्यक्ति में सेरोटोनिन की कमी हो सकती है। इसी तरह महिलाओं में गर्भावस्था के दौरान प्रोजेस्ट्रॉन नामक हार्मोन की मात्रा बढ़ जाती है, लेकिन गर्भावस्था के बाद प्रोजेस्ट्रान नामक हार्मोन कम होने लगता है। इस स्थिति में 100 में से 20 महिलाएं अवसाद (डिप्रेशन) से ग्रस्त हो सकती हैं। गर्भावस्था के दौरान इस स्थिति को 'मदर ब्लूज' कहते हैं। ★

खोज खबर

'क्रैश डाइट' टाइप 2 डायबिटीज से छुटकारा दिलाने में मददगार

लंदन : डायबिटीज की समस्या के शिकार लोगों की सबसे पहले अगर कोई चीज छूटती है, तो वह है उनका खाना। जीवन शैली से जुड़े भी कई बदलाव उन्हें करने पड़ते हैं, मगर खाना छूना उनके लिए ज्यादा दुखदाई हो जाता है। अब यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूकासल और यूनिवर्सिटी ऑफ ग्लासगो में हुए अध्ययन में कहा गया है कि क्रैश डाइट से टाइप 2 डायबिटीज पर काबू पाया जा सकता है। दोनों संस्थानों के विशेषज्ञ 298 लोगों पर अध्ययन क बाद इस नतीजे पर पहुंचे हैं। उन्होंने देखा कि क्रैश डाइट लेने वाले 46 फीसदी लोगों में टाइप 2 डायबिटीज का असर पलट गया। इन सभी लोगों ने अपने रोजाना के खानपान से ठोस खाने को शेक और सूप से बदल दिया था। इन्होंने किसी भी दिन 800 कैलोरी प्रतिदिन से अधिक का सेवन नहीं किया। विशेषज्ञों का कहना है कि क्रैश डाइट से पैनक्रियाज में इन्सुलिन बनाने वाली कोशिकाएं फिर से सक्रिय की जा सकती हैं। इससे इस बीमारी के शिकार करोड़ों लोगों के लिए उम्मीद की किरण जगी है।

4 महीने की क्रैशस डाइटिंग के बाद नहीं रही दवा की जरूरत : अध्ययन के दौरान हुए प्रयोग में विशेषज्ञों ने देखा कि 4 महीने तक इस तरह की सघन डाइटिंग से कई मरीज न केवल दवाएं छोड़ने में सफल रहे, बल्कि उनका ब्लड शूगर का स्तर भी सामान्य हो गया। शोधार्थियों का कहना है कि पैंक्रियाज में मौजूद इनसुलिन का उत्पादन करने वाले बीटा सेल को दोबारा सक्रिय किया जा सकता है। यह कोशिकाएं आसपास के फैट के जमने के कारण गड़बड़ करने लगते हैं इसलिए समुचित मात्रा में वजन घटाने के बाद इनके फिर से पहले की तरह काम करने की गुंजाइश अधिक है।

लाखों साल पुराने मनुष्य के दिमाग की आकृति लंबी थी जो अब गोल हो गई है

समय के साथ बदल गया इंसान का दिमाग

बॉन जर्मनी (न्यूयार्क आइम्स न्यू सर्विस) - आमतौर पर माना जाने लगा है कि इंसान के दिमाग की आकृति गोल है जैसा कि वर्तमान में दिखाई देता है। लेकिन हमारे पूर्वजों के दिमाग की आकृति गोल होने की बजाय लंबा हुआ करता था। कार्बन डेटिंग के आधार पर जब वैज्ञानिकों ने होमो सेपियंस (आदिमानव) के जीवाश्म के 20 नमूनों का अध्ययन किया तो पता चला कि करीब तीन लाख साल पहले हमारे पूर्वजें के दिमाग का आकार तो लगभग उतना ही बड़ा रह चुका है लेकिन उसकी आकृति में बड़े बदलाव आए हैं। इन बदलावों से मनुष्य के क्रिया कलापों में भी भिन्नता आई है। पिछले लंबे समय से दुनिया के मानव वैज्ञानिक जर्मनी के मार्क्स पलांक इंस्टीट्यूट ऑफ रिवोल्यूशनरी एंथ्रोपालॉजी में इस होमो सेपियंस जीवशम के 20 नमूनों का अध्ययन कर रहे थे। मशहूर जर्नल साइंस एडवांस में प्रकाशित इसके शोध नतीजों के मुताबिक तीन लाख साल पुराने इन 20 नमूनों में पाया गया कि पिछले एक लाख से लेकर 35,000 साल के बीच इंसान का दिमाग धीरे-धीरे बदलता रहा और मौजूदा स्थिति तक पंहुचा। इंस्टीटयूट के वैज्ञानिक सिमोने नायबॉवर ने बताया कि इसांन के दिमाग का पिछला हिस्सा एक अहम धुरी है जहां मस्तिष्क के अलग-अलग हिस्से मिलते है। यह अनुकूलन, ध्यान और संतुलन के अलावा याददाश्त, भावात्मक बोध से जुड़े होते हैं। नायबॉवर ने बताया कि इन्सान के दिमाग के मौजूदा आकार में होने वाला बदलाव पुरातात्विक प्रमाणों से मिले परिवर्तनों के संकेत मुताबिक ही है। यानी ये बदलाव 40 से 50 हजार साल पहले हुए, जिन्हें इंसान के व्यवहार के आधुनिकीकरण का संपूर्ण समूह कहा जाता है। इनमें प्रतीकों का जोड़तोड़ और काल्पनिक विचार जैसे कि कला, रचना, सजावट, रंगों का इस्तेमाल, मृत लोगों का अंतिम संस्कार, कई उपकरणों वाले जटिल यंत्र, हड्डियों की कलाकृतियां जैसे काम शामिल हैं।

(साभारः अमर उजाला)

बच्चों का कोना

मुश्किल है एक आंख से दूरी जानना

दोनों आंखों से देखने पर ही हम दूरी का बेहतर अनुमान लगा पाते हैं। देखते हैं, एक आंख से दूरी का अनुमान लगाना किना कठिन है।

आपको चाहिए एक कप, सिक्का और साथी।

इस तरह से करेंः

टेबल पर कप रख दें। आपका दोस्त टेबल से एक मीटर दूर, एक आंख बंद करके बैठेगा। अब दोस्त और कप के बीच में एक सिक्का पकड़ कर, उसे धीरे-धीरे कप की ओर ले जाएं। दोस्त को जब लगे कि सिक्का कप के ठीक ऊपर पहुंच गया है, वह इशारा करेगा और आप सिक्का छोड़ देंगे। प्रयोग को कई दफा दोहराएं। आप देखेंगे कि दोस्त अक्सर गलती करता है।

कुछ चर्चाः

सामने की हर वस्तु हमारी दोनों आंखों के साथ एक कोण बनाती हैं। मस्तिष्क इस कोण को दूरी में रूपांतरित कर लेता है। वस्तु जितनी दूरी होगी, कोण उतना ही छोटा बनेगा। एक सीमा के बाद यह कोण लगभग शून्य हो जाता है। इसलिए हम बहुत दूर की वस्तुओं की आपसी दूरी में फर्क नहीं कर पाते।

चूंकि एक आंख से देखते वक्त ऐसा कोई कोण नहीं बनता, वस्त किस दिशा में है यह तो हम देख पाते हैं पर कितनी दूर है यह नहीं समझ पाते।

झिर्री में से पूरी तस्वीर देखिएः

यदि बहुत तेजी से किसी चित्र के हिस्से एक के बाद एक हमें दिखाए जाएं, तो मस्तिष्क इन हिस्सों को जोड़ लेता है और हमें वह चित्र पूरा ही दिखाई देता है। ।

जरूरी सामानः

सफेद कार्ड, कोई तस्वीर और कैंची।

इस तरह से करेंः

कार्ड के बीच में संकरी झिर्री (1 सैंमी. X 10 सेंमी) काट लें और इसे तस्वीर पर अलग अलग जगह रखें। आप झिर्री में से तस्वीर के विविध हिस्से तो देख सकते हैं, तस्वीर नहीं।

तस्वीर पर रख कर कार्ड को काफी तेजी से आगे पीछे हिलाएं। अब आप उसी झिर्री में से पूरी तस्वीर देख पाएंगे।

कुछ चर्चा :

आंखों के रेटिना पर बनने वाली छवि एक सैकेंड के कुछ हिस्से तक रेटिना पर बनी रहती है। इसे दृष्टि सातत्व कहा जाता है।

हिलती हुई झिर्री में से भी आप एक समय में तस्वीर का एक दृश्य (हिस्सा) ही देखते हैं। लेकिन हर दृश्य रेटिना पर कुछ समय तक बना रहता है। इससे पहले कि एक दृश्य रेटिना पर से मिटे, आप अगला दुश्य देखने लगते हैं। मस्तिष्क इन अलग-अलग दृश्यों को जोड़कर समग्र तस्वीर बना लेता है।

तर्कशील हलचल

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक मीटिंग

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक मीटिंग 15 जुलाई 2018 को जाट धर्मशाला कुरुक्षेत्र में आयोजित हुई।आपसी परिचय के उपरांत कार्यकारणी सदस्य बलजीत भारती ने सोसायटी की चुनौती, कार्यप्रणाली एंव सोसायटी की स्थापना आदि पर अपने विचार रखे ताकि नए पहुंचे सदस्यों को तर्कशील सोसायटी के बारे में जानकारी मिल सके। वरिष्ठ तर्कशील साथी आर.पी.गांधी की उपस्थिति ने सभी को रोमांचित किया। 92 साल की उम्र में भी उनका सोसायटी के प्रति समर्पण बेहद प्रभावित करने वाला है। अपनी जीवटता के कारण सदस्यों में जोश भरता है। उन्होंने -ब्रह्माण्ड की रचना- विषय पर अपने विचार रखे। तर्कशील पथ पत्रिका के मुद्रण से जुड़े साथी कवि, लेखक बलदेव महरोक ने अपने जोशीले गीत से सभी को प्रभावित किया और इस गीत में उपस्थित सदस्यों ने सामूहिक रूप से गायन भी किया। जींद इकाई के सक्रिय सदस्य रामेश्वर ने अपने तर्कशील बनने के सफर को रेखाँकित किया। तर्कशील पत्रिका के सम्पादक प्रो. बलवन्त सिंह ने -अंधविश्वासों की दुनिया-विषय पर अपना वक्तव्य रखा। उन्होंने स्प्ष्ट किया कि मात्र आधुनिक शिक्षा लेने से अंधविश्वास से मुक्ति सम्भव नही ,क्योकि दिल्ली सामूहिक आत्महत्या कांड में पूरा परिवार पढ़ा लिखा था, परन्तु वैज्ञानिक चिन्तन न होने के कारण परिवार को दुःखद घटना से गुजरना पड़ा, उन्होंने स्प्ष्ट किया कि साप्ताहिक मानसिक रोग मशवरा कैम्प में बहुत से ऐसे लोग भी आते है जो आई ए एस, डॉक्टर, प्रोफेसर तक बने है परन्तु वैज्ञानिक चिंतन न होने के कारण स्वयं और परिवार को अंधविश्वास में रखते है आज के दौर के बहुत सारे अनपढ़ बाबे भी पढ़े लिखे लोगों को बेवकूफ बना कर ठगते है जिसका एक कारण बाबाओ के प्रति श्रद्धा संस्कार होना है। तर्कशील सोसायटी हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष गुरमीत सिंह ने आज आधुनिक विज्ञान के संसाधनों के माध्यम से अपनी अंधश्रद्धा को समाप्त करने की बात रखी,उन्होंने यू-ट्यूब पर शुरू किए गए तर्कशील चैनल से अवगत कराया और ज्यादा से ज्यादा इसे सबकराईब करने के लिए कहा साथ ही तर्कशील पथ हिंदी और तर्कशील पंजाबी पत्रिका के अलग अलग मैटर होने के कारण जिसे दोनों भाषाएं आती है, पढ़ने की बात की। उन्होंने पत्रिका के ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाने की अपील की। राज्य कार्यकारणी सदस्य कृष्ण लाल के एन.डी. टी.वी के कार्यक्रम में भाग लेने पर हर्षध्वनि की।मंच संचालन तर्कशील सोसायटी के राज्य सचिव राजेश कुमार पेगा ने की। उन्होंने बीच बीच में तर्कशील सोसायटी के विभिन्न विषयों पर पर भी बात की। अगली मिटींग यमुनानगर में 16 सितम्बर 2018 को होने की घोषणा के साथ सभा समाप्त हुई। इस बैठक के आयोजन में कुरुक्षेत्र इकाई के साथी अश्वनी, बलजीत भारती, बलवन्त सिंह आदि ने अहम भूमिका निभाई।.***रिपोर्ट-गुरमीत सिंह***

यमनानगर में तर्कशील गतिविधियां

रैशनलिस्ट सोयटी के सक्रिय सदस्य श्री बलबीर सिंह जी और सुखदेव यमुना नगर के मुकंद लाल हायर सैकेडरी स्कूल गये। वहां विद्यसर्थियों से 'तर्कशीलता' पर चर्चा की और आगामी 16 सितंबर को होने वाली राज्य स्तरीय मीटिंग में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। वहां बलबीरसिंह जी ने आज के समय में तर्कशीलता के महत्व पर प्रकाश डाला और सुखदेव ने सती प्रथा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर पर उन्हें जानकारी दी।

(रिपोर्ट-बलबीर सिंह)

ओडिशा में टोनही के संदेह में 388 मामले

-डा . दिनेश मिश्र-9827400859

सूचना के अधिकार के अधिनियम के अन्तर्गत मिली जानकारी

अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डा. दिनेश मिश्र ने बताया कि अंधविश्वास व जादू-टोने की मान्यता के कारण ओडिशा में डायन के संदेह में पिछले 7 वर्षों में प्रताड़ना के 388 मामले सामने आये हैं। तथा 239 महिलाओं की हत्या डायन के संदेह में हो चुकी है। उन्होंने डायन प्रताड़ना के मामलों को फास्ट ट्रेक कोर्ट में चलाये जाने की मांग की तथा प्रताड़ित महिलाओं को मुआवजा व पुनर्वास के लिए योजना बनाये जाने की मांग की है।

डा. दिनेश मिश्र ने बताया कि उन्होंने सूचना के अधिकार के अधिनियम के अंतर्गत ओडिशा शासन से जानकारी मांगी थी, जिसमें उन्हें पुलिस विभाग, ओडिशा से जानकारी प्राप्त हुई है कि सन् 2010 से सन् 2017 तक प्रदेश में 388 महिलाओं की टोनही के संदेह में प्रताड़ना हुई है। ये मामले 33 जिलों से मिली जानकारी के अनुसार हैं। इनमें से सर्वाधिक मामले मयूरभंज, नवरंगपुर, क्योंझर, देवगढ़, राऊरकेला, कंधमाल, मलकानगिरी, कालाहाण्डी, सुंदरगढ़ जिले के हैं। अंधविश्वास के कारण डायन के संदेह में प्रताड़ना के मामले अब तक **निरात** नहीं हैं, कुछ मामलों में तो अब तक न ही चालान पेश हो पाया है और न ही एफ.आई.आर. तक दर्ज हुई है, जिसके कारण न ही उन महिलाओं को मुआवजा मिल पाया है न ही पुनर्वास हो पाया है तथा न ही कोई अन्य मदद मिल पायी है, जिससे वे गांवों में बहिष्कृत जीवन जीने को मजबूर हैं। समिति को यह भी जानकारी है कि करीब 239 से अधिक महिलाओं की हत्या इस जादू-टोने के आरोप में हो चुकी है।

डा. दिनेश मिश्र ने कहा कि डायन प्रताड़ना के कारण ग्रामीण आंचल में गरीब, निराश्रित, विधवा महिलाओं को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। प्रताड़ित महिलाओं के हित व जीवन-यापन के लिए राज्य सरकार को पत्र लिखकर मांग की है कि उन सभी मामलों में :

1. डायन प्रताडना के प्रकरणों में राज्य में बनाये गये विशेष कानून को लागू कर कार्यवाही हो।
2. पीडिघ्त महिलाओं के पुनर्वास हेतु आर्थिक मदद दी जाए।
3. राज्य शासन द्वारा आसानी से पीड़ित महिलाओं तथा लम्बित प्रकरणों की सूची तैयार कराई जा सकती है, जिसके अनुसार प्रताड़ित महिलाओं को कम से कम 25 हजार रूपए उनके जीवन-यापन पुनर्वास हेतु दिया जा सकता है।
4. आरोपियों को सजा दिलाने के लिए डायन प्रताड़ित महिलाओं के प्रकरण 'फास्ट ट्रेक कोर्ट में चलाने की व्यवस्था की जा सकती है।
5. डायन प्रताड़ित महिला को आंगनबाड़ी केन्द्रों या स्थानीय स्तर पर चल रहे शासकीय परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है, ताकि उनके सामाजिक बहिष्कार जैसी स्थिति का निवारण हो।
6. डायन प्रताडिघ्त महिला के संरक्षण हेतु स्थानीय पुलिस थाने, चौकी को निर्दिष्ट किया जा सकता है, कि वे प्रताडना की पुनरावृत्ति रोकने एवं महिला एवं उसके परिवार के पुनर्वास में मदद करें तथा जनजागरण अभियान चलाया जावे ताकि इस सामाजिक कुरीति का समाज से निर्मूलन किया जावे। इस अभियान हेतु अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति सहयोग करने तैयार है।

कोई स्कूल की घंटी बजा दे
यह बच्चा मुस्कराना चाहता है।

-कैफ़ी आज़मी

आभूषण ठगे जाने के सदमे में

बलवंत सिंह, लैक्चरार

हमारे देश की जनता का अधिकतर हिस्सा अंध ाविश्वासों में आकण्ठ डूबा हुआ है। सदियों से पुजारी वर्ग द्वारा हमारे समाज को अच्छी व बुरी ग्रह दशा, भाग्यवाद एवं बाबाओं के आर्शीवाद से लोगों की किस्मत को बदल देना इत्यादि मिथ्या बातों के साथ गुमराह किया जाता रहा है। साक्षरता दर में वृद्धि हो जाने के बावजूद आम जनता की सोच वैज्ञानिक चिंतन वाली नहीं बन पाई है। अशिक्षित एवं अर्धशिक्षित लोगों को तो क्या कहना, हमारे समाज के उच्च शिक्षा प्राप्त लोग जैसे कि वकील, डाक्टर, प्रोफैसर एवं अध्यापक तथा बड़े-बड़े पदों पर आसीन उच्चाधिकारी भी बहुतायत तौर पर वैज्ञानिक चिंतन के मामले में अनपढ़ ही कहे जा सकते हैं हमारे समाज के अधिकतर लोग अपनी हर प्रकार की समस्याओं के हल के लिए बाताओं की शरण में जाते हुए देखे जा सकते हैं। अधिकतर लोगों की मानसिकता इतनी कमजोर है कि उनके घर में कोई भिखारी भी यदि साधुओं के भेष में आकर, उनके घर की दशा देख और उससे अनुमान लगा कर दो चार बातें कह दे, चाहे उस द्वारा बताई गई अधिकतर बातें झूठ ही हों तो भी उनमें से एक दो सच लगने वाली बातों पर विश्वास के उसके आगे नतमस्त हो जाते हैं। जब ऐसे साधुवेश में ढोंगी एवं पाखण्डी लोग अपनी मिथ्या बातों के मकड़जाल में फंसा कर उनकी मेहनत की कमाई को ठग जाते हैं तो फिर ये भोले-भाले लोग मानसिक रोगों का शिकार हो जाते हैं।

सुरेशो देवी एवं नरेन्द्र सिंह अपने दो बच्चों समेत हंसी-खुशी से अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन दोनों ने ही ग्रेजुएशन की हुई थी। उनमें से किसी को भी बहुत कोशिश करने के बाद भी सरकारी नौकरी नहीं मिल सकी थी। अब नरेन्द्र सिंह एक प्राईवेट फर्म में नौकरी करता था और सुरेशो साधारण ग्रहणी बनकर अपने घर व बच्चों को संभाल रही थी। नरेन्द्र सिंह की अपनी दो एकड़ कृषि योग्य जमीन भी थी। वह नौकरी के साथ-साथ अपनी जमीन में खेती भी स्वयं ही कर लेता था। इस प्रकार से उनकी आर्थिक हालत बहुत अच्छी नहीं तो ज्यादा बुरी भी नहीं थी। एक दिन उस फर्म के मैनेजर ने नरेन्द्र को उसकी किसी गलती पर डांट दिया और साथ ही उसे चेतावनी भी दे दी कि यदि आगे से भी उसने कभी गलती की तो वह उसे नौकरी से हटा भी सकता है। इस बात का नरेन्द्र के मन पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा और वह परेशान सा रहने लग गया। उसे परेशान देखकर जब सुरेशो ने उससे पूा तो उसने अपनी पत्नी को फर्म के मैनेजर द्वारा दी गई चेतावनी वाली सारी बात बता दी। यह सुन कर सुरेशो भी परेशान रहने लग गई। उन्होंने अपनी इस साधारण सी नौकरी के सहारे अपने बच्चों के सुंदर भविष्य के अनेकों सपने बुन रखे थे। मैनेजर की चेतावनी के साथ उन्हें अपने भविष्य के सपने टूटते हुए महसूस होने लगे।

इसी दौरान उनके घर में साधु के वेश में एक भीख मांगने वाला भिखारी आ गया। उसने सुरेशो को चिंतामयी अवस्था में देखकर उन्हें भयभीत करने वाली दो चार झूठी सच्ची बातें कह दी। सुरेशो ने मन में सोचा कि यह बाबा तो सारी सच्ची-सच्ची बात कह रहा है। उत्सुकतावश सुरेशो ने उस साधु से अपनी मुसीबत से छुटकारा दिलाने का उपाय पूछ लिया। इसी दौरान नरेन्द्र भी अपनी ड्यूटी से वापिस आ गया। उस साधु ने नरेन्द्र को भी अपनी बातों से प्रभावित कर लिया। उस बाबा ने उनसे अपने घर से सात प्रकार का अनाज तथा कुछ अन्य चीजें मंगवा ली तथा उनके हाथों में दस-दस पैसे के सिक्के रख दिए। इसके साथ ही वह मन ही मन में कुछ मंत्र से बुदबुदाने लग गया। थोड़ी देर में उन दोनों केहाथों

में रखे हुए दोनों सिक्के गर्म होने लग गए। इससे उन दोनों के मन पर उस बाबा की शक्ति का प्रभाव और भी बढ़ने लग गय। उसके इस तिलिस्म से प्रभावित होकर तंत्र-मंत्र के लिए बाबा ने जो कुछ भी मांगा, उन्होंने उसे अर्पण कर दिया।

जब उस ढोंगी ने देखा कि दोनों पति-पत्नी उसके पूर्णतः प्रभाव में आ चुके हैं तो उसने अपनी अगली चाल यह कहते हुए चल दी कि 'तुम्हारे घर में तो बहुत भयंकर चीज छुड़वाई हुई है, जो अभी तक तो तुम्हारा छोटा-मोटा ही नुक्सान कर रही है, इसीलिए तुम जितना भी कमाते हो, उसका पता ही नहीं चलता कि सारी कमाई किधर जा रही है। खेतों में और नौकरी में कमाई करने के बावजूद घर में बरकत ही नहीं रहती। परन्तु अब यह 'चीज' और भी खतरनाक होती जा रही है। अब यह घर के किसी पुरुष सदस्य का खून मांग रही है। अगर तुम चाहो तो मैं अभी इसका उपाय कर सकता हूं, आगे तुम्हारी मर्जी।'

उस ढोंगी की बातें सुनकर उनके पांव के नीचे से जमीन खिसक गई। डरे हुए वे एकदम से उपाय करवाने के लिए तैयार हो गए। उपाय के तौर पर उसने उनसे 5100 रुपए और घर में रखे सारे जेवर मंगवा लिएं उनके पास कुला मिलाकार 7-8 तोले सोने के तथा कुछ चांदी के भी जेवर थे। उसने वे सारे ही उनसे मंगवा लिए। उस साधु ने 5100 रुपए व सभी जेवरों को अपने थैले में रखे एक काले कपड़े को निकाल कर उसमें बांध कर उनकी एक पोटली बना ली। फिर उसने एक छोटा मटका मंगवा लिया। एस मटके में उसने उनके घर से सात प्रकार का एक-एक मुट्ठी अनाज मंगवा कर उसमें डाल दिया। कुछ सामान उसने अपने थैले में से निकाल कर उसे भी उस मटके में डाल दिया। और फिर मटके का मुंह एक काले कपड़े के साथ बांध दिया। फिर उसने उनके घर से एक छोटा ट्रंक मंगवाया और आभूषणों वाल वाली पोटली उसमें रखकर उसे ताला लगा दिया और चाबी उन्हें ही सौंप दी। फिर कहने लगा कि इस मटके में अब तुम्हारे घर से सभी जिन्न, भूत-प्रेत इत्यादि बंद कर दिए गए हैं। अब यह मटका आधी रात को शमशान घाट में दबा कर आना है। साथ ही उसने ताकीद दी कि आभूषणों वाले ट्रंक को 21 दिन बाद खोलना है। मैं 21 दिन तक तुम्हारे घर के कल्याण के लिए मंत्र जाप करूंगा और फिर तुम्हारे घर में खुशहाली बरसेगी। जिस चीज को हाथ लगाओगे, वही सोना हो जाएगी।

अब वह मटका, क्योंकि आधी रात के समय में शमशान घाट में दबाना था, इसलिए वह साधु सारा दिन उनके घर में ह रहा और उन्हें बातों-बातां में सब्जबाग दिखाता रहा। आधी रात होने पर उसने वह मटका नरेन्द्र को उठवा दिया और शमशान घाट की तरफ चल पड़े। नरेन्द्र को लग रहा था कि मटके का वजन बहुत भारी होता चला जा रहा है। अतः उसने बाबा से अनुरोध किया कि वह उस मटके को उठाने में असमर्थ होता जा रहा है। उस पर तरस खाकर बाबा ने स्वयं ही वह मटका अपने सिर पर उठा लिया और फिर दोनों ने शमशान में जाकर उस मटके को एक गड्ढा खोद कर दबा दिया और घर वापिस आ गए। सुबह होते ही उन्होंने 'बाबा जी' को अच्छा सा नाश्ता करवाया और 1100 रुपए दक्षिणा के तौर पर भेंट कर दिए। बाबा उन्हें 'सदा सुखी रहने का आशीर्वाद' देकर अपने रास्ते पर चला गया।

जब 21 दिन के पश्चात उन्होंने ट्रंक का ताला खोला तो उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। ट्रंक में रखी गई पोटली में आभूषणों की बजाए मिट्टी और कंकड़ पत्थर बंधे हुए थे। यह देखकर सुरेशो बेसुध होकर गिर पड़ी। तब से उनके घर में परेशानियों का दौर शुरू हो गया। सुरेशो को दिन में कई-कई बार दौरा पड़ जाता था। घर का काम करना और बच्चों की देखभाल करना उसने बिल्कुल ही छोड़ दिया था। नरेन्द्र के लिए दोहरी मुसीबत बन गई थी। उसे अब अपने दफ्तर के काम के साथ-साथ बच्चों को संभालना और घर का सारा काम भी करना पड़ता था। सुरेशो के दौरों से परेशान होकर वह उसे शहर के मनोचिकित्सक के पास ले गया। वहां से उसकी दवाई चल रही थी। दवाई खाने से उसके दौरे पड़ने तो कम हो गए थे, परन्तु वह सारा दिन चारपाई ही पड़ी रहती थी। घर का काम संभालना तो वह भूल

ही चुकी थी।

ऐसे में रिश्तेदारों के कहने पर वे उसे बाबाओं की चौकियों पर ले जाने लग गए। वे उसे लेकर आसपास छोटे-मोटे बाबाओं व तांत्रिकों-मांत्रिकों के साथ-साथ धौलीधार बाबा बडभाग सिंह की चौकियों पर भी ले जाते रहे और धौलीधार में स्नान भी करवा आए, परन्तु उसकी हालत जस की तस बनी रही।

अंत में उनका एक रिश्तेदार, जो तर्कशीलों द्वारा किए जा रहे जनहित कार्यों से परिचित था, उन्हें रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केंद्र में लेकर आ गया। उन दोनों पति-पत्नी के साथ विस्तार से बातचीत करने पर स्पष्ट हो गया कि उस ढोंगी बाबा द्वारा एक कैमिकल ट्रिक द्वारा उनको प्रभावित करके और फिर अपनी चालाकी द्वारा आभूषणों वाली पोटली को बदल कर उसने इन लोगों से ठगी की थी। पहले तो मैंने उन दोनों को उस केमिकल ट्रिक की वास्तविकता बताई और उन्हें प्रेक्टिकल करके भी दिखाया। फिर सुरेशो को मनोवैज्ञानिक ढंग द्वारा काऊंसलिंग करके उसके समस्त मनोभ्रम दूर कर दिए। मनोवैज्ञानिक ढंग द्वारा दिए गए निर्देशों का सुरेशो के मन पर अत्यंत सार्थक प्रभाव पड़ा और वह खुद को एकदम से तंदरुस्त समझने लग गई।

अगले सप्ताह जब वे परामर्श केंद्र पर आए तो सुरेशो पूर्णतः स्वस्थ एवं प्रसन्न थी। अब उन्हें इस बात पर अत्यंत आत्मग्लानि हो रही थी कि वे दोनों अच्छे पढ़े लिखे होने के बावजूद भी एक ढोंगी की बातों के मकड़जाल में फंस गए और अपना इतना बड़ा नुक्सान करवा बैठे। उन्होंने स्वीकार किया कि हम ग्रेजुएशन या पोस्ट ग्रेजुएशन करके समझ बैठते हैं कि हम बड़े विद्वान बन गए हैं, परन्तु हमारी तोता-रटन वाली शिक्षा प्रणाली हमें एक अच्छा नौकर अथवा अच्छा नौकरशाह तो बना सकती है। पर वैज्ञानिक सोच रखने वाला एक अच्छा मानव नहीं बना सकती। यदि सभी पढ़े-लिखे लोग वैज्ञानिक समझ को अपना लें सही अर्थों में मानवता का कल्याण हो सकता है। ✶

पृष्ठ 31 का शेष...गौमूत्र और..)

आज से 60 बर्ष पहले हमारे देश में टीबी का भी कोई उपचार नहीं था। परन्तु देसी गौमूत्र तो उस समय भी ज्यादा मात्र में था। क्योकि उस समय अमेरिकन नसलें तो हमारे देश में आई ही नहीं थीं। अगर उस समय टीबी का उपचार होता तो भारत के पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू और पाकिस्तान के जिनाह टीबी से न मरते। अपितु अमेरीकन नसल की गाय खाती तो वही भारती चारा ही हैं लेकिल मूत्र पीने के मसले में उन के साथ भेदभाव क्यो किया जाता है? आज हमारे गौभक्तों ने हमारे शहर की हालत नर्क से ज्यादा बुरी कर दी हैं। जिस तरफ जाते हैं गाय ही गाय नजर आती हैं। कौन सा ऐसा शहर है यहां हर साल 40-50 लोग इन का शिकार होकर अपनी टांगे नहीं तुड़वाते। ज्यादा देवी-देवताओं और धार्मिक स्थानों वाले देशों में ही ऐसी बिमारियां और दुर्घटनाएं ज्यादा होती हैं।

बहुत से विदेशी यात्रियों को शहर में घूमती इन गाय की टोलियों की तस्वीरें खींचते हुए मैंने अपनी आंखों से देखा है। कई बार मैं उनहें इसका कारण पूछा तो उन का जबाव होता है कि ''यहां अजीब सी बात है, हमारे देश में तो पशु सडकों पर आ ही नहीं सकते।''

आज वैज्ञानिक युग है। अपने आप को स्वस्थ रखने के लिए हमें वैज्ञानिक सोच को अपनाना होगा। वैज्ञानिक सोच कहती है कि कोई भी वस्तु मुंह में डालने से पहले उस में उपस्थित पदार्थों का पता जरूर होना चाहिए। सिर्फ लाभकारी पदार्थ ही हमारे अंदर जाना चाहिए।

गौमूत्र का भी दुनिया की अलग-अलग प्रयोगशालायों में रसायनिक परीक्षण होना चाहिए। इस परीक्षण के साथ-साथ परीक्षण करने वालों की नीयत पर भी कड़ी नज़र रखनी चाहिए कि कौन किस वस्तु का प्रचार किस नीयत से कर रहा है। जरा सी तीखी नजर गौमूत्र के बारे में हमारा नजरिया दुरुसत कर सकती है। ०००

पंख खोल दो...

–अजायब जलालआना

मर्द प्रधान समाज में औरतें अक्सर दबाव में रहकर हिस्टीरिया मनोविज्ञान रोगग्रस्त हो जाती हैं,क्योंकि खुले आसमान में आजाद परिंदों की तरह उड़ने में सहायक उनके पंखों को बांध दिया जाता है.

परन्तु यहां ऐसा एक बी.टेक.डिग्री होल्डर 23 वर्षीय युवा भी हो सकता है! जिसके उड़ने के पंख बांध रखे हों...

हमारे पास एक ऐसा ही केस ऐसे नौजवान का आया जिसका शरीर अचानक कांपने लग जाता है, हाथ और उंगलियां अकड़ जाती, मुंह लाल हो जाता और उसका पूरा शरीर सुन्न हो जाता है।

ऐसी स्थिति में परिवार द्वारा बाबाओं, नीम-हकीमों का सहारा लिया गया,सभी अलग-अलग प्रकार से राय-मशविरा देने वाले, कोई ओपरी-पराई बताये, कोई गर्मी को बीमारी बताकर आयुर्वेदिक की ठंडी शीशी पीने के लिए कहता!कोई हड्डियों में ताप बताकर पुड़िया देकर शर्तिया ईलाज की बात कर रहा था...परिवार ने इन सभी को अपनाया परन्तु बात न बनी।

जब उपरोक्त नुस्खे काम न आये तो उस नौजवान के पिता ने अपने बेटे की समस्या को अपने खास दोस्त के पास रखी...उस दोस्त ने एक बार तर्कशीलों के पास जाने की सलाह दी...

जब वो हमारे पास आये तो उसके पिता ने हमें बताया..कि एक बार मैं अपने मोबाईल से कोई विशेष वीडियो देख रहा था और साथ ही यही मेरा बेटा भी देख रहा था...अचानक बेटे को अकड़न शुरू हो गई हम सहम गये..तब से मैं टीवी पर मार-काट,या विवादित सीरियल इसे देखने नहीं देता...

एक बार ये कार ड्राईव कर रहा था,अचानक इसका शरीर अकड़ने लगा और कुछ देर के लिए दिखना भी बन्द हो गया...गाड़ी की स्पीड बहुत ज्यादा बढ़ गई, हमें कुछ भी नहीं सूझ रहा था..स्पीड का कोई अंदाजा न रहा..एक गाड़ी सामने से आ रही थी..हमारा बचना मुश्किल था..पता नहीं कैसे गाड़ी क्र स हुई..हमारी गाड़ी में लगा साइड वाला शीशा. .वो गाड़ी उखाड़ कर अपने साथ ही ले गई..हमें जोर का झटका लगा और फिर कहीं जाकर गाड़ी धीमी होनी शुरू हुई और तब जाकर सांस में सांस वापिस आई.

ऐसे अनेकों किस्से सुनने के बाद जब हमने उस नौजवान से पूछा कि क्या आप मनोविज्ञान के बारे में कुछ जानते हो ? उसका उत्तर न में था।हमें वास्तव में लगा हमारी शिक्षा प्रणाली बच्चों को मशीनें तथा उनके पुर्जे बनाने में लगी हुई है!

तब उसे थोड़ा बहुत मनोविज्ञान के बारे में बताया गया,चेतन,अवचेतन और अर्धचेतन मन की अवस्थाओं के बारे में साथ ही उसे हिस्टीरिया क्या होता है...दबी हुई भावनाएं आदि तो वो हमारी बातें सुनकर गम्भीर होता चला गया।

फिर उसे एकांत में घूमने के लिए बाहर ले जाया गया, उसने अपनी दबी हुई भावनाओं से पर्दा उठाना शुरू कर दिया...कहने लगा मेरे पिता जी बहुत सारे कार्यों में मेरे ऊपर दबाव बनाकर बातों को थोपते हैं..और मैं उन्हें जवाब देने में असमर्थ हूँ, मेरा छोटा भाई दबाव में नहीं आता जब उसे लगे. .वो तुरन्त ही जवाब दे देता है...परन्तु मैं ऐसा नहीं कर पाता..

वो आगे बोला सर जी मेरे पास ये साधारण मोबाईल है, मेरे पिता के पास बहुत महंगा! मुझे टीवी पर सी.आई.डी. सीरियल बढ़िया लगता है, परन्तु मेरे पिता जी मुझे देखने नहीं देते...वो कहते इससे तेरे पर उल्टा असर होगा..मैं जिद्द नहीं करता उसी समय टीवी देखना बन्द कर देता हूँ।

जब मैं कार चलाता हूँ पिता जी बहुत टीका-टिप्पणी करते हैं जिससे मैं असहज हो जाता हूँ..तब मुझे बहुत गुस्सा आता है, परन्तु उस गुस्से को बाहर नहीं आने देता..अब मैं थक गया हूँ...'सच पूछो तो कभी-कभी मेरा मन करता है, मैं आत्महत्या कर लूं...'ये सुनकर मैंने उसके कंधों पर हाथ रखे.. उसे प्यार से शांत करने की कोशिश की...उसने और छोटी-छोटी अनेक बातों का उलेख किया...

उनकी पूरी बातें सुनकर मैंने कहा पुत्र ईलाज आपका नहीं आपके पिता जी का होना चाहिए!वो खुश नजर आया..उसको ऐसी स्थिति में होने पर कुछ जरूरी टिप्स दिए..और जो बात या कार्य आपको अच्छा न लगे उसे आप तर्क सहित नकार दें और अपना आत्मविश्वास बढ़ाएं अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए निरसंकोच बात रखें, जिन बातों पर आप असहज महसूस करते हैं, उन्हें आप स्पष्टता से रखें आपके लिए ये ही बेहतर है।कुछ अच्छी पुस्तकें पढ़ने के सुझाव भी दिए गए....

अब वापिस घर आते-आते वो बहुत बदल चुका था।क्योंकि उसे कह दिया गया कि आपके पिता जी को भी बढ़िया सुझाव दे दिए जाएंगे ताकि आपको आगे दोबारा समस्या न आये।इसी प्रकार उसके पिता के साथ बातचीत करके उसे अपने नौजवान बेटे के पंख खोल देने के लिए सुझाव दिया ताकि वो भी खुले आसमान में आजाद परिंदों की तरह उडारी मार सके...

दूसरी भाषा (लघु-कथा)

-खलील जिब्रान

मुझे पैदा हुए अभी तीन ही दिन हुए थे और मैं रेशमी झूले में पड़ा अपने आसपास के संसार को बड़ी अचरज भरी निगाहों से देख रहा था । तभी मेरी माँ ने आया से पूछा -कैसा है मेरा बच्चा ।

आया ने उत्तर दियाए -वह खूब मजे में है । मैं उसे अब तक तीन बार दूध पिला चुकी हूँ । मैंने इतना खुशदिल बच्चा आज तक नहीं देखा ।

मुझे उसकी बात पर बहुत गुस्सा आया और मैं चिल्लाने लगाए -माँ यह सच नहीं कह रही । मेरा बिस्तर बहुत सख़्त है और जो दूध इसने मुझे पिलाया है वह बहुत ही कड़वा था और इसके स्तनों से भयंकर दुर्गंध आ रही है । मैं बहुत दुखी हूँ ।

परंतु न तो मेरी माँ को ही मेरी बात समझ में आई और न ही उस आया को क्योंकि मैं जिस भाषा में बात कर रहा था वह तो उस दुनिया की भाषा थी जिस दुनिया से मैं आया था ।

और फिर जब मैं इक्कीस दिन का हुआ और मेरा नामकरण किया गया। तो पादरी ने मेरी माँ से कहा-आपको तो बहुत खुश होना चाहिए, क्योंकि आपके बेटे का तो जन्म ही एक ईसाई के रूप में हुआ है ।

मैं इस बात पर बहुत आश्चर्यचकित हुआ । मैंने उस पादरी से कहा-तब तो स्वर्ग में तुम्हारी माँ को बहुत दुखी होना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा जन्म एक ईसाई के रुप में नहीं हुआ था ।

किंतु पादरी भी मेरी भाषा नहीं समझ सका ।

फिर सात साल के बाद एक ज्योतिषी ने मुझे देखकर मेरी माँ को बताया, तुम्हारा पुत्र एक राजनेता बनेगा और लोगों का नेतृत्व करेगा ।

परंतु मैं चिल्ला उठाए, यह भविष्यवाणी गलत है क्योंकि मैं तो एक संगीतकार बनूंगा । कुछ और नहीं, केवल एक संगीतकार

किंतु मेरी उम्र में किसी ने मेरी बात को गंभीरता से नहीं लिया । मुझे इस बात पर बहुत हैरानी हुई ।

तैंतीस वर्ष बाद मेरी माँ मेरी आया और वह पादरी सबका स्वर्गवास हो चुका है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे। किंतु वह ज्योतिषी अभी जीवित है। कल मैं उस ज्योतिषी से मंदिर के द्वार पर मिला । जब हम बातचीत कर रहे थे, तो उसने कहा-मैं शुरु से ही जानता था कि तुम एक महान संगीतकार बनोगे । मैंने तुम्हारे बचपन में ही यह भविष्यवाणी कर दी थी । तुम्हारी माँ को भी तुम्हारे भविष्य के बारे में उसी समय बता दिया था।

और मैंने उसकी बात का विश्वास कर लिया क्योंकि अब तक तो मैं स्वयं भी उस दुनिया की भाषा भूल चुका था ।

शोक समाचार

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के सक्रिय साथी एंव पूर्व प्रधान राजा राम हंडियाया की पत्नी सत्या देवी की 63 साल की उम्र में हृदयगति रुकने से 24 अगस्त 2018 को आक्समिक निधन हो गया। परिवार ने तर्कशील विचारों पर पहरा देते हुए उनके मृतक शरीर को चिकित्सीय प्रयोग हेतु आदेश मैडीकल कालेज भठिंडा (पंजाब) में प्रदान किया। श्रीमति सत्या देवी बहुत ही मिलनसार महिला रही हैं।

राजा राम जी के लिए वे प्रेरणा स्रोत रही हैं और उनके तर्कशील जीवन को गति देने में उन्होंने भरपूर सहयोग किया। वे तर्कशील सोसायटी के विभिन्न मेलों, सेमिनारों, मीटिंगों में अनेकों बार शिरकत करती रही हैं। उनका असमय चले जाना केवल राजा राम जी के लिए ही नही, तर्कशील आंदोलन के लिए भी भारी क्षति है। 2 सितम्बर, 2018 को उनकी याद में एक शोक सभा का आयोजन बरनाला, पंजाब किया गया जिसमें हरियाणा, पंजाब के तर्कशील कार्यकर्ताओं ने पहुँच कर अपनी वेदना प्रकट की और परिवार को इस दुख को सहने का साहस दिया। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनके परिवार की इस दुखद घड़ी में सहभागी बनते हुए संवेदनाए प्रकट करती है और उनके मानवता हित में मृतक शरीर मेडीकल कार्य हेतु प्रदान करने पर सलाम करती है। .

-राज्य कार्यकारिणी एंव सम्पादक मंडल

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

रागणी

दो झोट्यां म्हं लड़ाई

तड़की जब अखबार बांचते, ठ्यौड़ अंधेरा छावै।
रामू-झम्मन लड़ कै मर गे, रोज खबर ये आवै।।

ये मंदिर, ये मस्जिद सै और ये तेरा, ये मेरा,
अपणे-अपणे दीन-धर्म के, हाथ म्हं चाकू ले र्‌या,
भाईचारा रिश्ते-नाते, आज गर्म लहू म्हं भे र्‌या,
साजिश करैं जो मुल्ला-पंडित, मिल कै मौज उड़ावैं।

गीता म्हं कित लिख राख्या, भाई नै भाई मारा,
कुरान तनै न्यू कद कह री, तू फूंक किसी का ढारा,
धर्म कहै हर माणस तो भई, लगणा चाहिए प्यारा,
या सै दो झोट्या म्हं लड़ाई, नुकसान हौवे म्हारा,
ये कोन्या ठीक मुल्ला-पंडित, उल्टी राह दिखावैं।

हिन्दु, मुस्लिम, सिख, इसाई, न्यारी-न्यारी जात करी,
उस तै आगै होर पाड़ दिए, गोतां तक की बात करी,
कुत्ते खींचैं लाश गली म्हं, ये माणस की औकात करी,
दीन-धर्म की खेती बो कै, म्हारे हाड़ां की खाद करी,
पत्थर के भगवान मौन सैं, उसके चेले कत्ल करावैं।

जो जोड़े वो दीन सही, तोड़ण वाले ते बचणा होगा,
दीन-धर्म पै दंगे ना हों, ऐसा संसार रचणा होगा,
गलत-सही पकड़ म्हां आवै, तब तक ना थकणा होगा,
'रामेश्वर' जो छे छतों म्हं, हर एक को ढकना होगा,
प्रेम-भाव के गीत रचां फेर, सब को गीत सुणावैं।

-रामेश्वर दास गुप्त

आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ

तर्कशील साथी बलवान निवासी रधाना, जिला जींद ने तर्कशील सोसयटी के साथ जुड़ने पर उत्साहित होकर तर्कशील सोसायटी हरियाणा को 1000/- (एक हजार रूपये) का सहयोग भेजा है। सोसायटी उनका हार्दिक धन्यवाद करती है।

‘वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैयर का 95 साल की उम्र में निधन’
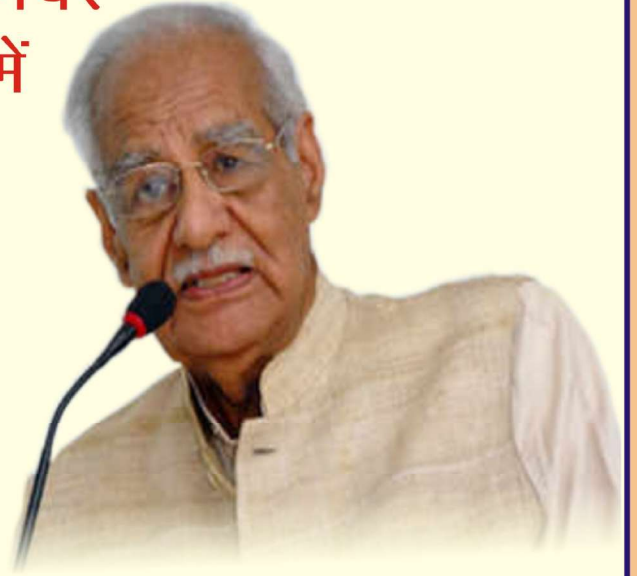
भारतीय पत्रकारिता जगत के अहम चेहरा रहे वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैयर का 95 साल की उम्र में 23 अगस्त 2018 को निधन हो गया। वे दिल्ली के एक अस्पताल के आईसीयू में भर्ती थे। काफी समय से उनकी सेहत बहुत खराब थी। बुधवार 23 अगस्त की रात करीब साढ़े बारह बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। कुलदीप नैयर कई किताबें लिख चुके हैं। वे भारत सरकार के प्रेस सूचना अधिकारी के पद पर कई वर्षों तक कार्य करने के बाद यू.एन.आई, पी.आई.बी., ‘द स्टैट्समैन’, ‘इण्डियन एक्सप्रेस’ के साथ लम्बे समय तक जुड़े रहे थे। पच्चीस वर्षों तक ‘द टाइम्स’ लन्दन के संवाददाता भी रहे हैं। पत्रकारिता की दुनिया में कुलदीप नैयर पत्रकारिता अवार्ड भी दिया जाता है. 23 नवम्बर, 2015 को वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक कुलदीप नैयर को पत्रकारिता में आजीवन उपलब्धि के लिए रामनाथ गोयनका स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। कुलदीप नैयर अगस्त, 1997 में राज्यसभा के मनोनीत सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए थे।

शुरुआती दिनों में कुलदीप नैय्यर एक उर्दू प्रेस रिपोर्टर थे। वह दिल्ली के समाचार पत्र द स्टेट्समैन के संपादक थे और उन्हें भारतीय आपातकाल (1975–77) के अंत में गिरफ्तार किया गया था। वह एक मानवीय अधिकार कार्यकर्ता और शांति कार्यकर्ता भी रहे हैं। वह 1996 में संयुक्त राष्ट्र के लिए भारत के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य थे। 1990 में उन्हें ग्रेट ब्रिटेन में उच्चायुक्त नियुक्त किया गया था, अगस्त 1997 में राज्यसभा में नामांकित किया गया था। वह डेक्कन हेराल्ड (बेंगलुरु), द डेली स्टार, द संडे गार्जियन, द न्यूज, द स्टेट्समैन, द एक्सप्रेस ट्रिब्यून पाकिस्तान, डॉन पाकिस्तान, सहित 80 से अधिक समाचार पत्रों के लिए 14 भाषाओं में कॉलम और ऐप–एड लिखते रहे।

शहीद डा. नरेंद्र दाभोलकर स्मति सम्मेलन

तर्कशील भवन बरनाला (पंजाब) मे सम्पन राज्य स्तरीय तर्कशील सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए डा. प्रमेंद्र, अध्यक्ष मंडल एंव उपस्थित दर्शक

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती, महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्री अविनाष पाटिल एंव सचिव डा. सुदेश गोडेराव की उपस्थिती में तर्कशील चेतना परख परीक्षा 2018 (मिडल वर्ग) के विजयी विद्यार्थियों का सम्मान करते हुए राज्य कार्यकरणी

सम्मान समारोह

तर्कशील चेतना परख परीक्षा 2018 (सेकेंड्री वर्ग) के विजयी विद्यार्थियों का सम्मान करते हुए राज्य कार्यकरणी

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera ByPass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।